

आ० १०.
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२

॥ १ ॥

सूर्य० २३
जं० २५
नि० २६
प्रज्ञी० २७

॥ १ ॥

श्रीभागमोक्षारसंग्रहे भागः २
गमोऽस्त्यु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

उपांगप्रकीर्णकसूत्रविषयक्रमः

सूत्राद्यादि

पिपपात्किं-राजप्रश्रीय-जीवाजीवाभिगम-प्रज्ञापना-चंद्रसूर्यप्रज्ञप्तिगुम-जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति-
ग्यावलिका-चतुःशरणादिप्रकीर्णकदशकानां सूत्रसूत्रगाथानामकारादिकमः लघुबृहद्व्यं ।

अइदुलहमेसजं
अउणाणउइ सहस्रं
अउणासीइ सहस्रं
अकसाइणो सब्वत्तं
अक्कंडेऽच्चिरभाविअ
अकित्ताणं समुग्धा-
अगणिअ जो मुक्क-

प्रकाशका-सूर्यपुरीया श्रीजैनपुस्तकप्रचारकसंस्था

पुस्तकं सूर्यपुरे श्रीजैनविजयानन्दमुद्रणालये फकीरचन्द प्रगनलाल बदामीद्वारा मुद्रयित्वा प्रक-
[५०] विक्रमसंवत् २००५, वीरसंवत् २४७५, इ० स० १९४८ [वेत्ते २७-७०२
७९-१०१२

५७-८२९
२८४सू०
१११८सू०
१२-४१
१२२-५
१-१४२१
१९-५
२७-६२८
२७-७०२
७९-१०१२

प्रस्तावः

पातिकादीनां द्वादशानामुपांगानां चतुःशरणादिकानां दशानां प्रकीर्णकानां च गायत्री-
 भोः परमपुरुषपरमेश्वरप्रगीताव्यावाधाविरुद्धितोपदेशमात्रप्रवचनप्रवणगामासृतपानपुष्टान्तःक-
 तस्य शास्त्रस्य साचरणश्रद्धानवृद्धिक्रियाद्वारा ग्रहणेन मे परिश्रमलेशं, प्राक्तावत् १ नन्दी २ अनुयोगद्वारा
 क्ति ५ दशवैकालिक ६ पिण्डनिर्युक्ति ७ उत्तराध्ययनसूत्राणां गाथाकारादिक्रमविषयानुक्रमयुगलान्यु-
 त्तरे श्रीमत्याऽऽगमोदयसमित्या प्रतीनां सार्धद्वादशशती प्रचारिता, पण्यं च रूप्यकद्वयं स्थापितं पञ्च
 तश्रीक्रमभेदेचजीवेशरीमलेत्यभिधया श्वेतांबरसंस्थया ८ आचारांग ९ सूत्रकृतांग १० स्थानांग ११
 त्वपरामिथ्यव्याख्याप्रद्वष्टित १३ क्षातधर्मकथा १४ उपासक १५ अन्तरुद्देशा १६ अनुत्तरौपपातिकदशा
 व्याकरणसूत्राणां गाथाकारादिविषयानुक्रमयुगलानि श्रीहृद्रूपरीयश्रीजनवंधुमुद्रणालयश्रीभावननगरीयमह-
 मुद्रापयित्वा पंचशती पुस्तकानां प्रचारिता, पण्यं च चतुष्टयं रूप्यकाणां धृतं, ततः शेषाणां गाथाकार-
 ानामुमुद्रणायायमुपक्रमः श्रीसुरतद्रंगीयैर्जनपुस्तकप्रचाराख्यसंस्थया क्रियते । प्रत्यश्चात्र सार्धद्विशती-
 र्णं रूप्यकचतुष्टयं ध्रियते । एतच्च वर्तमानयुगस्थितिप्रेक्षणां सुक्षानामवभासिष्यतेऽल्पतममेव । अत्र च १९
 १० श्रीराजमश्रीय २१ जीवाजीवाभिगम २२ प्रज्ञापना २३-२४ सूर्यचंद्रप्रशसियुगम २५ जंबूद्वीपप्रद्वष्टि २६ उप-
 याचलिका २७ चतुःशरणादिप्रकीर्णकदशकानां गाथाकाराद्यनुक्रमो लघुवृहन् विषयानुक्रमश्च समुन्मुद्रिताः, तत-
 कृत्वा सफल्यन्तु सज्जना मे क्षानाभ्याससहायमनोरथमित्याशासे ।

श्रीश्रमणसंवसेवक

२००५ कार्तिकशुक्ला पूर्णिमा, सुरत.

औपपातिकाद्युपांगानां चतुःशरणादिप्रकीर्णकदशकस्य च सूत्रगाथाऽकारादिः

सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	सूत्राद्यादि	स
--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	--------------	---

अद् गय उयुणीमा
अद्गनहस्मा तित्तिं उ
अद्गतीयं फालोदहिमि
अद्गतीरं फालोदहिमि
अद्गतीसं फालोदहिमि
अद्गतीश् चत्ताइं
अद्गतीश् चत्ताइं
अद्गतीश् च गहा
अद्गतीति च गहा
अद्गतीति च गहा
अद्गतीयं च गहा
अद्गिय कल्लिणे सिरणहार
अद्गतरं च तीसं
अद्गव जेयणार्इ
अद्गव सनसहस्सा
अद्गव सतसहस्सा
अद्गव सनसहस्सा

२३-१०५०
२७-५५३
२१-३९
२७-१०५५
२३-५३
२५-५५
२७-१०५३
२१-८१
२१-८३
२५-८६
२७-१०८५
२७-५५८
२२-१३५
२७-९६५
२३-३६
२३-५८
२३-३९

अद्गव सयसहस्सा
अद्गव सयसहस्सा
अद्गव सयसहस्सा
अडयाल सयसहस्सा
अडयाल सयसहस्सा
अडयाल सयसहस्सा
अडयालीसं भाण
अडयालीसं भागा
अडयालीसं लक्खा
अडतीश् सयसहस्सा
अणगरं भाविं मारणं
अणगरं लोगं फुसित्ता
अणगरं भावि अण्णा
अणमिगहियकुडिट्ठी
अणमिगहिया भास्सा
अणवट्ठतिगं पारतिगं
अणवन्मिय पणवन्मिय

२१-३५
२७-१०९९
२७-१०५२
२१-५१
२१-५८
२५-५२
२५-१२५
२७-१०१५
२७-१०५१
२१-५१
२२-१९६५
२२-३५७
१९-५२५
२२-१३०
२२-१९७
२७-१३२५
२२-१५२

अणसणपाउवगमणं
अणमणपाओवगमं
अणसणमूणोपरिया
अणंतरगयाहारं
अणंतरगया नैरं अतं
अणिआहिवाण पच्चत्थिं
अणुत्तरेसु नरपरसु
अणुवदरोसुगुगह
अणुराहा रेवई चैव
अणुलोमपूअणाण
अणुसुयइ सुयंतीण
अणुसोअइ अणजणं
अणउत्थियां दो किरिं
अतिसीतं अतिउणं
अतुलसुहसागरगया
अत्थमणे संझागय
अत्थिणं देवाणं सुक्कपोगला २२-३२७५

२७-१५१७
२७-२२५
२७-१३६२
२२-२२५
२२-२५८५
२५-५८
२७-२५६
२७-१२९९
२७-८७६
२७-६६०
२७-५६६
२७-१८२५
२१-१०५५
२१-२३
१९-३०
२७-८६२
२२-३२७५

औ० १०.
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२

॥ ३ ॥

अथि पं० चंडिम० हिट्टिपि २१-१९४सू०
ताग०
अथि पं० चंडिम० हिट्टिपि २५-१६४सू०
ताग०
अथि पं० तीसे स० भरहे०
गेहाड वा २? २५-२५सू०
अथि पं० पाणतियायवेरमणे
कज्जति? २२-२८६सू०
अथि पं० विमाणां सोत्तरीयाणि
वा २१-१००सू०
अथि पं० रयण० अहे वणोदधीति
वा २१-७२सू०
अथि पं० लवण० वैलंधरा ति० २१-१६९सू०
अथि पं० तेंदुकविट्ठे २०-१८
अन्येणे गोयमा ! पाणी २७-७११
अन्यं धम्मं कामं २७-१८३८
अन्यं धम्मं काम २७-१८५२

अहा अस्सेस जिट्ठा २७-८७८
अहाय असी य मणी २२-२०३
अहायं पेहमाणे० पेहति ३? २२-१९७सू०
अडकविट्ठुगसंडाण २७-१०१०
अड्ढजोअणिया उगाहा २७-१०१७
अड्ढुमेहिं राइंढिणहिं २७-११५७
अड्ढतिवन्नसहस्सा २२-१३६
अनियाणेदारमणे २७-३०५
अन्नाणीऽवि अ गोवा २७-३५६
अन्नेसु अ जीवेसु २७-५३
अन्नं रयति अन्नं रमंति २७-५७१
अन्नं इमं सरीरं २७-१६०३
अन्नं इमं सरीरं २७-६८६
अन्नं इमं सरीरं २७-१८२५
अन्नं इमं सरीरं २७-१६३७
अपरकम्मस्स काले २७-२८६
अप्परिस्सावी सम्मं २७-७३१

अप्पविहिणा (उ) जाहे
अप्पसत्थेसु लग्गेसु
अप्पाणं निंदवो
अप्पावहुयं सब्बत्थोवा
अप्पावहुयाणि जहेवित्थीणं
अप्पा० सब्ब० वायरत्तस०
अप्पिइढियाओ तारा
अप्पंयि भावसहं
” ”
अप्पं सुक्कं बहु अउयं
अप्पया अइसुत्तग
अप्पितरवाहिरए
अप्पितरवाहिरयं
अप्पितरं च तह
अप्पितरंलि कुणिमं
अप्पुज्जयं विहारं
अप्पुज्जयं विहारं

२७-१३१५
२७-२१४
२७-१७४४
२१-२३०
२१-५७
२१-२३८
२७-१०२४
२७-१५९
२७-१५६१
२७-४६९
२२-३२
२७-४०६
२७-१३२४
२७-१४४७
२७-५३०
२७-१५४२
२७-१२४३

सूर्य० २३
जं० २५
मि० २६
प्रकी० २७

॥ ३ ॥

औ० १०
रा० २०
जी० २१
प्र० १० २२

॥ ४ ॥

अभुज्जुयं चित्तरं
अभिस्स चंदजोगो
अभिस्स नय मुहुत्ता
अभिर्हं छब्ब मुहुत्ते
अभिर्हं छब्ब मुहुत्ते
अभिर्हं सवणो धणिट्ठा
अभिजाइसत्तविकम
अभिणंदिए पइहे अ
अमिनंदइ मे हियं
अभिणंदे सुणइट्ठिय
अमरनरवंदिण
अमरवरसु अणोचम
अमरिंदनारवमुणिंद
अमियगइस्सवि विमओ
अमुगंमि इउ काले
अमुणिअमणपरिकम्मो
अम्मापियरो भाया

२७-२५९
२५-१११
२४-७
२५-११५
२७-१०३३
२५-९०
२७-१२३८
२५-९१
२७-६१२
२४-२३
२७-५२९
२७-५८२
२७-९
२७-९८६
२७-१३३०
२७-३९९
२७-१८८०

अयल्लगाम कुहुविय
अरईय जाइसूकरो
अरहंतसिद्धचेइय
अरहंता मंगलं मज्झ
अरिहंतनमुक्कारो
अरिहंतसरणमल्लसुद्धि
अरिहंतसिद्धकेवलि
अरिहंतसिद्धचेइय
अरिहंतसिद्धसाहु
अरिहत्तं अरिहत्तेसु
अरुणसिंहं दट्ठणं
अलंबुत्ता मिस्सकेसी
अलिअं सइंपि भणिअं
अलोण पडिहया सिद्धा
अलोण पडिहया सिद्धा
अलोणस्स अचरमस्सा कयरो

२७-१६८४
२७-१७२५
२७-१२५४
२७-२४८
२७-३५२
२७-२३
२७-४३४
२७-३४५
२७-११
२७-५६
२७-१७३३
२५-७५
२७-३७६
२७-१२०९
२२-१६०
२२-१५६सू०

अलोणे पडिहया सिद्धा
अचर पणर सेवले
अचलंविऊण सत्त
अवसेसा अणगारा
अवसेसा णम्मवत्ता
अवसेसा णम्मवत्ता
अवसेसा नम्मवत्ता
अवसेसा० वारस चेव
अविउत्तमल्लदामा
अविकलसीलायारा
अवियद्धोऽयं जीवो
अविरहिया जस्स मई
अविसुद्धेस्से णं भंते
असण्णी खलु पढमं
असइहवेयणाए
असमत्तसुओवि मुणी
असररीरा जीवघणा उ

१९-१०
२२-४७
२७-४३८
२७-१७०६
२५-११४
२५-११८
२७-१०३२
२७-१०३६
२७-११७५
२७-१२७६
२७-१०२
२७-१३८६
२१-१०४सू०
२१ ८
२७-१५६६
२७-१४०४
२७-१२१७

॥ ४ ॥

सू० २३
ज० २६
सि० २३
प्र० २७

असरीरा जीवघणा १९-१९
" २२-१६९
असिमसिसारिच्छीणं २७-५६९
असुइ सरीरं रोगा २७-१८८३
असुई अमिच्छपुन्नं २७ ५४२
असुभा विउव्वणा खलु २१-१७
असुरकुमाराणं० अणंतरं २२-१३९सू०
" आहा० २२-३०५सू०
असुरकुमाराणं० कतो हितो २२-१३०सू०
असुरकुमाराणं० केवइया ओरा- २२-१७९सू०
लियसरीरा २२-१०५सू०
असुरकुमाराणं० केवइया पज्जावा २२-२०९सू०
असुरकुमाराणं० सवने समाहारा २२-२६०सू०
असुरकुमारे णं० असुर० २२-२६०सू०

असुराणं नागाणं
असुरा नागसुवण्णा
असुरेसु हुंति रत्ता
असोयवरपायपुढवि
अस्सन्नी खलु पढमं
अस्साओ उववणो
अस्संजमत्तोसणं
अस्संजममण्णाणं
अस्संजममण्णाणं
अस्संजममन्नाणं
अस्संजमवोसिरणं
अह णं पसवणकालसम०
अह तस्स महव्वय०
अह भंते ! असंजय०
अह भंते ! गाओ मिया०
अह भंते ! मणुस्से महिसे०
अह भंते ! मंदकुमारए वा

२७-९७६
२२-१३८
२२-१४८
२०-३६सू०
२२-१८३
२१-१८
२७-२४४
२७-१४५५
२७-९३
२७-१५१
२७-१५३४
२७-१२सू०
२७-३२६
२२-२६६सू०
२२-१६२
२२-१६४सू०
२२-१६३सू०
अह भंते ! सव्वजीवप्पवहुं
अह मणिमंदिरसुंदर०
अह महुरं फुडवियडं
अह भिच्छत्तससस्सा
अहमंसि पढमराया
अहयं वहुगुणदाणं
अह रागदोसगम्भ
अहवा अट्टविहा णेरइया २१-२६९सू०
अहवा उ पुच्छवाला २७-५९१
अहवा चउव्विहा० इत्थि० २१-२५९सू०
अहवा चउव्विहा० चक्खुदंसणी २१-२६०सू०
अहवा चउव्विहा०संजया० २१-२६१सू०
अहवा चिलाइपुत्तो २७-३६३
अहवा छव्विहा० ओरालि० २१-२६५सू०
अहवा णव विधा० पढमस० २१-२७१सू०
अहवा तिविहा० तसाइ २१-२५७सू०

आहवा तिविहा० गजसगा० २१-२५३सू०
आहवा तिविहा० परित्ता० २१-२५२सू०
आहवा तिविहा० भवसिद्धिगा
२१-२५६सू०
आहवा तिविहा० सण्णी० २१-२५५सू०
आहवा तिविहा० सगुमा २१-२५५सू०
आहवा वसविहा० पदमम्म २१-२७३सू०
आहवा वुविहा० चरिमा जेव २१-२५०सू०
आहवा वुनिहा० ममागगा य २१-२५९सू०
आहवा वुविहा० मव्वजीवा० २१-२५८सू०
आहवा वुविहा० सव्वजीवा २१-२५६सू०
आहवा पंचविहा० गेरइया० २१-२६३सू०
आहवा सत्तनिहा० कणहलेस्सा
२१-२६७सू०
आहवा ममाहिदेउं २७-६७६
२७-१५८७
" ॥ ॥
आहवा समाहिदेउं सागां २७-३२१

अहवा मव्वं निअ २७-५८
अहवा नुवणमासा २७-५१२
अह सो आलोअणदोमवज्जिअ २७-२९७
अह सो विणभत्ति० २७-१२
अह सो दुक्कडगरिहा २७-५५
अह सो निगणुक्कयो २७-६७०
अह सोवि चत्तडेहो २७-६५८
अह सो सामाइअथरो २७-३०९
अह हुज्ज देसविरओ २७-३०५
अंजणगुणसुविसुं २७-५५७
अतरं वायरस्स० २१-२३७सू०
अत्ते(न्तं)परजोगेहि य २७-१३५१
अतो चउंसा खलु २७-९६१
अतो णं भंते ! मणुस्स० २१-१८०सू०
अतो णं० माणुसुत्तरस्स० २५-१५१सू०
अतो मणुस्सखेत्त २१-७२
" ॥ ॥

अंतो मणुस्सखेत्ते २७-१०७१
अंतोसुवुत्तकालो २१-९१
अंधियपत्तियमच्छिय २२-१११
अवद्धा य कालिदा य २२-११९
आरचतेअतविआ २५-८९
" ॥ ॥ २५-२०
आइचनेयतविआ २७-८६३
आउव्वेयममची २७-१२४८
आउसो ! णं जायस्स २७-१३सू०
आउसो ! जं पि दमं सरीरं २७-१६सू०(व)
आउसो ! तओ नव्वमे मासे २७-११सू०
आउसो ! से जहानामण २७-१७सू०
आकंपणं अणुमाणणं २७-१३५८
आगममयणमधिय २७-१५०३
आगरसमुद्धियं तह २७-१५८१
आणयमाणयकण्व २१-८७
" ॥ ॥ २२-१५६

आणयपाणयकण्ये	२७-११०१	आरंभेसु पसत्ता	२७-८१३	आरुहियचरित्तभरो	२७-१५८५
"	२७-११३०	आराहओ तहवि सो	२७-१३५७	आलोइयनिस्सल्लो	२७-७०
"	२७-११६३	आराहणपच्चइअ	२७-३१९	आलोयणाइदोसे	२७-१३५४
आतपतिट्ठियखेत्तं	२२-२०१	आराहणलाभाओ	२७-३२७	"	२७-१३५९
आभरणवत्थंगंवे	२१-३३	आराहणाइ खेमं	२७-३११	आलोयणाइ संलेहणाइ	२७-१३१६
"	२२-२०५	आराहणापडागागहणे	२७-३५५	आवलिआइ विमाणाण	२७-११३६
आमंतणि आणमणि	२२-१९६	आराहणापुरस्स	२७-३५१	आवलियमुत्तग्गे	२४-७
आयरिअ उवज्झाए	२७-३२३	आराहणोवउत्तो	२७-१२४	"	२४-१२
"	२७-६१०	"	२७-२६४	आवलियाइ विमाणा	२७-११३७
"	२७-१५७०	आराहेऊण उक्कोलेण य	२७-१५५४	आसपुरा सीहपुरा	२५-६२
आयरिया मंगलं मज्झ	२७-२५०	आराहेऊण विऊ	२७-२७१	आसरिया य मणोहर०	२७-१६८९
आया पच्चम्भलाणे	२७-१४५१	"	२७-१५५३	आसवदारेहिं सया	२७-१८५४
आया मे जं नाणे	२७-१४४	आराहेऊण विऊ जहन्त	२७-२७२	" संवरनिज्जर	२७-६०९
आयारवं च उवधारवं	२७-१३२१	आराहेऊण० सत्तट्ठ भव०	२७-१५५५	आसीअ पोअणपुरे	२७-६४२
आयासकिलेसाणं	२७-१८३९	आरुगमविग्घं खेमियं	२७-८५२	आसी कुलाणनयरे	२७-६६७
आया हु महं नाणे	२७-८७	"	२७-५९२	आसी गयसुकुमालो	२७-६७३
आयंके उवसग्गे	२७-१२७४	आरुहिअमहं सुपुरिस !	२७-२९३	आसी चिलाइपुत्तो	२७-६७२

औ० १०.
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ८ ॥

आसी तं अस्मासं २१-६
आसी य खलु आउमो ! २७-१५सू०
आसी य समणाउमो ! २७-१६सू०
आसीयं यसीसं २२-१३४
आसी मुक्तोसलरिनी २७-६४९
आसुकारे मरणे २७-६९
आसेति य हृत्पीडि य २७-१८१४
आहारप नं० पुच्छा २२-२४६सू०
आहारगसरीरे नं० कतिविधे २२-२७४सू०
आहारनिमित्तं अहं २२-१८६
" " मच्छा० २७-११४
" " २७-१४८३
" " २७-१८७
आहारभविष्यसणी० २२-२२०
आहारममसरीरा २२-२०९
आहारे उवओगे २२-९
आहारो उस्सासो २२-५८४

आहारो उस्सासो २७-११४०
आहारो परिणामो २७-(४६७)प्र०
आहिंदिऊण वसुहं २७-६६३
इअ उवएसामय० २७-४२९
इअ कलिऊण सहसिं २७-२९२
इअ खामिआइआरो २७-६९३
इअ जीवपमायमहारि० २७-४४६
इअ जोइसरजिणवीर २५-१६
इअ तस्स बहुगुणदे० २७-६९५
इअ तह विहारिणो २७-३२५
इअ वंदणखामणगरिहणाहिं २७-१२२५
इअ सिद्धाणं सुखं २३-१००
इक्कस्स उ जं गहणं २७-१२६३
इकं अप्पाणं जाणिऊण २७-१५१५
इकं० खियं सो मरणाणं २७-१०३८
इकं च सयसहस्सं २७-२२३
इकं पंडियमरणं २७-२२३

इकं पंडियमरणं २७-१४८०
" " २७-१८२
इकंमिचि जंमि पप २७-२३८
" " २७-१५३०
" " २७-१५२९
" वि० तं तस्स २७-२३७
" सो तेण० २७-२३६
" २७-२९०
इक्काइ अग्गिजालाइ २७-१८५
इक्काइ जलुम्मीप २७-१८७
इक्काइ वायुगुंजा० २७-१८९
इक्काइ विज्जुयाप २७-१०५३
इक्कारस य सहस्सा २७-१००२
इक्किक्कम्मि य जुयले २७-१५५
" " २७-१४७
इक्को उप्पजाए जीवो २७-१७७
इक्को करेइ कम्मं २७-१८२०
" " २७-१८२०

सू० १०.
चं० २०
जं० २१
नि० २२
प्रज्ञी० २३

ॐ १० २० ३०
रा० जी० प्रज्ञा० २२
॥ ० ॥

इको जायइ मरइ
इको मे सासओ अण्णा
इका य होइ रयणी
इको हं नत्थि मे कोइ
इक्खू य इक्खुवाडी
इच्छामि० उत्तमं पडि०
इच्छामि भंते! उत्तमं
इच्छामुत्ति भणिता
इच्छामो अणुसंदि
इच्छिज्ज जत्थ सया
इदुज्जणविण्णओगो
इदुणिट्ठसु सया
इणमो सुगइइपहो
इण्ह व मुहुत्तेणं
इण्ह संयं विसिस्स उ
इति एए पाहुडत्था
इति एए पाहुडत्था

[illegible]

इत्थं किर विमाणानं
इत्थं चत्तारि महासुक्के
इत्थं पुण भावणाओ
इत्थि विसेसो भण्णइ
इत्थि वेदस्स णं भंते! कम्म०
इत्थीए णाभिहिट्ठा
इत्थी णं भंते! इत्थिन्ति का
इत्थी णं भंते! ०त्ति०
इत्थी णं भंते! ०
" " ०अतरं०
इत्थी णं भंते! अट्ट सुयाओ
इत्थी णं भंते! इत्थी ० किं
इत्थी णं भंते! इत्थी ० किं
इत्थी णं भंते! इत्थी ०
इत्थी णं भंते! इत्थी ०
इत्थी णं भंते! इत्थी ०

क्र.सं.	विवरण	प्रमाणित	दिनांक
२७-१०९	२७-१०९		
२७-११०	२७-११०		
२७-१२९४	२७-१२९४		
२७-१३१४	२७-१३१४		
२१-५२२०	२१-५२२०		
२७-४५६	२७-४५६		
२१-४१२०	२१-४१२०		
२१-६४२०	२१-६४२०		
२१-४५२०	२१-४५२०		
२१-५०२०	२१-५०२०		
२७-१८९८	२७-१८९८		

साक्षात्

संविता !

२१-७५२०

२१-८१२०

२१-८१२०

इमा णं भंते ! रयण० कतिविधा	२१-७०सू०
इमा णं भंते ! रयणप्पभा० केवतियं	२१-६९सू०
वाहल्लेणं०	२१-८४सू०
इमी० रयण० तेरया	२१-८६सू०
इमीसे णं० णरगा किमया	२१-८६सू०
इमीसे णं० णेरइयाणं० किं संघयणी ?	२१-८८सू०
इमीसे णं० णेरतिया० कहिं गच्छति ?	२१-९२सू०
इमीसे णं० णेरतियाणं केरिसया	२१-८९सू०
पोगला	
इमीसे णं० णेरतियाणं केवतियं	२१-९१सू०
कालं विती	
इमीसे णं० तीसाण नरया०	२१-९४सू०
नेरइया कतो०	२१-८९सू०

अ० १०
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ १० ॥

रमीदे० नेरति० २१-१०सू०
" " २१-१३सू०
" " २१-१६सू०
" भते ! रयण० असी २१-७४सू०
" रयण० उवारि० २१-८०सू०
" कैव० २१-७१सू०
" " घणोदधि०
" " २१-७७सू०
" " णरका०
" " २१-८३सू०
" " नरका कैमहा०
" " २१-८५सू०
" रयण० खरकंठे २१-७३सू०
" रयण० पु० अचरम० २२-१५६सू०
" " सन्वजीवा २१-७८सू०
रमे णामा अणुगंतवा २१-१६७सू०
रमो खलु जीवो २७-२सू०

इय अवि मोहपटन्ना
" चालपंडियं होइ
" सव्यकालतित्ता
" "
" " सिद्धाणं सोक्खं
" " इलादेवी सुरादेवी
इसिवालियस्स भट्टं
इह इत्तो चउत्ते
इह खलु जिणमयं जिणानुमयं २१-१सू०
इह भविअमवभविअ
इहलोह० अचायं दंसेइ
" आयासं
" परलोण
" "
इंगालण विआलण

२७-१३३३
२७-७३
१९-२७
२२-१७७
२७-१२२७
१९-२५
२२-१७५
२५-७३
२७-१२३३
२७-१८०५
२७-५०
२७-१५९१
२७-१४३५
२७-१५७६
२७-१५८९
२५-१२८

इंगालण विआलण
इंदरगी धर्मकेतू
इंद मुद्धाभिसिस्ते थ
" " " तिलयरयणंकिण
इंदविल्याहं
इंदिअविसयपसत्ता
इंदियउवचयणिव्वत्तणा
इंदियसुहसाउलओ
" "
" "
" "
ईसाणकण्वइणो
ईसाविसायमयकोह
ईसीपच्चारण सीआण
उअरमलसोहणट्टा
उच्चिन्नंतरफलिहा
उक्कोसकालट्टितियं णं०
उक्कोसचरित्तोऽविय

२४-८८
२४-०१
२४-२०
२५-०४
२७-१३२
२७-४१६
२२-२०७
२७-१४०१
२७-२२६
२७-१५१८
२७-१०९८
२७-१८४५
२७-१२०७
२७-३१५
२७-९६२
२२-२९०सू०
२७-१३८७

॥ १० ॥

सू० १० २३
सू० १० २४
सू० १० २५
सू० १० २६
प्रकी० २७

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥११॥

उक्कोसेण गिहत्थो
उगुणद्धं पोद्धवया
उगम० मियविरस
" उप्पायणएसणा
उच्चारं पासवणे खेले
उच्छब्बसरीरधरा
उज्जरा सव्वथामेसु
उज्जुअमालोइत्ता
उज्जेगे हत्थिमित्तो
उज्जेणीनयरीए
उज्झसुनिआणसहं
उज्झाया मंगलं मज्झ
उज्झअजरमरणाणं
उज्झअनिआणसहो
उज्झयवइरविरोहो
उहुमहे तिरियम्मि
"
"

२७-४४५
२४-(२२२टी०)
२७-१४१२
२७-१३९६
२७-४६७
२७-६९९
२७-७१८
२७-१३५२
२७-१७२०
२७-६५१
२७-३३१
२७ २५१
२७-२२
२७-४१५
२७-३५
२७-१४७५
२७-१७४

उहुमहे तिरियम्मि
" "वि
उण्हंसि सिलावेह
उत्तत्तकणगवन्ना
उत्तमकुलसंपत्ति
उत्तमा य सुणक्खत्ता
"
उदगस्स नालिआए
उदगं खलु नायव्वं
उदयम्मि अट्ट भणिया
उद्धियनयणं खगमुह०
उप्पन्नभत्तपाणो
उप्पन्नाणुप्पन्ना
" उप्पन्ना
उप्पन्ने उवसंगे
उम्मग्गटिए सम्मग्ग०
" ठिओ इक्कोऽवि

२७-१००१
२७-१०९
२७-१७१३
२२-१४७
२७-३५०
२४-२१
२५-९५
२७-५१३
२७-५१४
२४-११
२७-५६०
२७-८६०
२७-१५४
२७-१४५८
२७-१७६५
२७-७३८
२७-७३९

उम्मग्गदेसणा नाण०
" मग्गसंप०
" संपयायं
उह्ठीणोह्ठीणेहिय
उवएसहेउकारण०
" कुसलं
उवकरणमंडमाईणं
उवलद्धपरमवभा
उवलद्धो सिद्धिपहो
उवलंबयरज्जूओ
उववाएण व सायं
उववाओ पुरिसाणं
" संकप्पो
उववायपरीमाणं
उवसग्गे तिविहेवि
उवसमइ किण्हसप्पो
उवहीनियडिपइड्डो

२७-१३००
२७-७४०
२७-१७३९
२७-१४१३
२७-१५६२
२७-१२४२
२७-८८३
२७-२९
२७-१६०६
२७-११४१
२१-१९
२१-१३
२५-४२
२१-११
२७-१७७२
२७-३५८
२७-१३५३

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥११॥

अ० १०
१० २०
जी० २१
प्रजा० २२
॥ १२ ॥

उगहीर न नियमीर
उगही सरीगं चैव
" "
उयागच्छिता तते णं
उव्यत्तण पयित्तण
उव्येयणयं जम्मणं
" "
" "
" "
" "
जाइ
उव्येयणयं
उससे णं अरहा कोसलिंग

२७-१३५०
२७-२७२
२७-१३२
२५-४०२
२७-१५६५
२७-१७८
२७-१८१
२७-१७९
२७-१८०
२७-११०
२७-१३७९
२५-३२२
२५-३४५
२५-३३२
२७-१७२३
२१-९०
२७-४५५

पअस्स पभावेणं
पआइं सोहइत्ता
पआरिसे शरीरे
एए उ अहासूरा
एए " अहोरत्ता
एए " ममासेणं
एए चैव उ भावे
एए ते निज्जवया
एए णव णिहिरयणा
एए वारस इदा
एए विकसियनयजे
एएसि णं कण्हहेसाणं
" जी० आउयस्स
" " आहारगाणं
" " चरिमाणं
" " पज्जत्ताणं
" " परित्ताणं

२७-४४१
२४-(२२२डी०)
२७-४७७
२७-१७४०
२७-४५२
२७-९०६
२२-१२३
२७-१५६८
२५-४१
२७-१०९४
२७-०५४८
२२-२२१सू०
२२-९०सू०
२२-७२सू०
२२-८०सू०
२२-७५सू०
२२-७४सू०

एएसि० जी० पोगात्ताणं २२-८१सू०
" " भवसिद्धि० २२-७८सू०
" " भामगाणं २२-७३सू०
" जीवाणं आभि० २२-६८सू०
" " चमवुदंसणीणं २२-६०सू०
" " सस्मदिट्ठीणं २२-६७सू०
" " सयोरपीणं २२-६३सू०
" " सलेत्ताणं २२-६६सू०
" " सवेयगाणं २२-६४सू०
" " सत्तीणं २२-७७सू०
" " सागारोवत्ताणं २२-७१सू०
" " सुत्तमाणं २२-७६सू०
" " संयत्ताणं २२-७०सू०
" " देवाणं कण्ह० २२-२२०सू०
" " धम्मपत्थिकाय० २२ ७९सू०
" " तेरइयाणं २२-२१७सू०

॥ १२ ॥

एयसि० परमाणुपोगलाणं, २२-९२सू०
" वादराणं० कयरे२ २२-६१सू०
एयसि पं भंते ! एगिदि० २१-२२६सू०
" " चंदिम० २१-२०१सू०
" " नेरइयाणं २२-५७सू०
एयसि पं० सइदियाणं २२-५८सू०
" सकसाईणं २२-६५सू०
" सकाइयाणं २२-५९सू०
" सुहुमाणं २२-६०सू०
" " वायराणं० २२-६२सू०
एयसि तु दुहाणं २७-१८८
" देवाणं २७-९७९
" " ओहि २७-११६१
" पहाणं २५-८
एयसु चैव ठागेसु २७-१५८६
" भत्तिजुत्ता २७-१२५५
" मुहुत्तजोएसु २७-९००

एएसु य अद्धाणं पत्थाणं २७-८५९
" निमाजेसु २७-१११४
" विहिविहणू २७-१३२७
एयहिं सरीरेहिं २२-(१०७)प्र०
एक्काणउई सतराईं २४-४०
एक्का य होइ रयणी १९-१५
एक्कारस य सहस्सा २१-५०
" " २४-५४
एक्कारसुत्तं हेट्टिमेषु २२-१५८
" हेट्टिमए २७-१११०
एक्को करेइ कम्मं २७-१४८
एगअहोरत्तेणवि २७-१८७२
एगट्टिभाय काऊण २७-१०१३
एगदुगतिगचउपण २७-१२७०
एग० नेरइयस्स नेर० २२-३३७सू०
एगमेगस्स पं० चंदिस्स २५-१६५सू०
" " चंदिम० २१-१९५सू०

एगमेगस्स पं० नेर०वेद० २२-३३४सू०
" " नेर०नेरइयत्ते २२-३३६सू०
" " संवच्छरस्स २५-१५३सू०
एगपयेऽणेगाईं २२-१२६
एगवीस जोयणसयाईं २७-११९७
एगस्स दोणह तिण्ह व २२-१०३
एगं च सतसहस्सं २१-२९
" " सयसहस्सं २५-८३
" " २४-३२
" " " २७-५१६
एगंतगुणे रहिया २७-१५६३
एगंतमणावाए २७-६५५
एगं पंढियमरणं २७-१२५७
" " २७-१२५९
एगंमिवि जम्मि पए २७-१२२
एगाइ गिराऽणेगे २७-१९
एगा जोयणकोडी २१-४०

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ १२ ॥

उवहीइ व नियडीइ
उवही सरीरगं चेव
" "
उवागच्छिता तते णं
उवत्तण परिवत्तण
उव्वेयणयं जम्मण०
" "
" "
" "
" जाइ
उव्वेवणयं
उत्तमे णं अरहा कोसलिए
" "
" पंचउत्तरा०
उसिणे तगरऽरह
उस्सप्पिणि२ अड्ढाइ०
उस्सासा निस्सासा

२७-१३५०
२७-२४२
२७-१४२
२५-४९सू०
२७-१५६५
२७-१७८
२७-१८१
२७-१७९
२७-१८०
२७-११०
२७-१४७९
२५-३२सू०
२५-३४सू०
२५-३३सू०
२७-१७२४
२१-९०
२७-४५५

एअस्स पभावेणं
एआइं सोहइत्ता
एआरिसे शरीरे
एए उ अहासूरा
एए " अहोरत्ता
एए " समासेणं
एए चेव उ भावे
एए ते निज्जवया
एए णव णिहिरयणा
एए वारस इंदा
एए विकसियनयजे
एएसि णं कणह्लेसाणं
" जी० आउयस्स
" " आहारगाणं
" " चरिमाणं
" " पज्जत्ताणं
" " परित्ताणं

२७-४४१
२४-(२२२टी०)
२७-४७७
२७-१७४०
२७-४५२
२७-९९६
२२-१२३
२७-१५६८
२५-४१
२७-१०९४
२७-९४८
२२-२२१सू०
२२-९०सू०
२२-७२सू०
२२-८०सू०
२२-७५सू०
२२-७४सू०

एएसि० जी० पोग्गलाणं २२-८१सू०
" " भवसिद्धि० २२-७८सू०
" " भासगाणं २२-७३सू०
" जीवाणं आभि० २२-६८सू०
" चक्खुदंसणीणं २२-६९सू०
" सम्मदिट्ठीणं २२-६७सू०
" सयोगीणं २२-६३सू०
" सलेसाणं २२-६६सू०
" सवेयगाणं २२-६४सू०
" सत्तीणं २२-७७सू०
" सागारोवत्ताणं
" सुहुमाणं २२-७६सू०
" संयताणं २२-७०सू०
" देवाणं कण्ह० २२-२२०सू०
" धम्मत्थिकाय० २२ ७९सू०
" नेरइयाणं २२-२१७सू०

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

एपसि० परमाणुपोगलानं, २२-२२सू०
 " वादराणं० कयरे२ २२-६१सू०
 एपसि० नं भंते ! एनेदि० २१-२२६सू०
 " " चंदिम० २१-२०१सू०
 " " नेरइयाणं २२-५७सू०
 एपसि० नं० सइदियाणं २२-५८सू०
 " सकसाईणं २२-६५सू०
 " सकाइयाणं २२-५९सू०
 " सुहुमाणं २२-६०सू०
 " " वायराणं० २२-६२सू०
 एपसि० तु दुहाणं २७-१८८
 " देवाणं २७-९७९
 " " ओहि २७-११६१
 " पहाणं २५-८
 एपसु चैव ठाणेसु २७-१५८६
 " भत्तिजुत्ता २७-१२५५
 " सुहुत्तजोएसु २७-९००

एपसु य अद्वाणं पत्थाणं २७-८५९
 " विमागेसु २७-१११४
 " विहिनिहणू २७-१३२७
 एपहिं सरीरेहिं २२-(१०७)प्र०
 एक्काणउई सतराई २४-४०
 एक्का य होइ रयणी १९-१५
 एक्कारस य सहस्सा २१-५०
 " " २४-५४
 एक्कारसुत्तं हेड्डिमैसु २२-१५८
 " हेड्डिमए २७-१११०
 एक्को करेइ कम्मं २७-१४८
 एगअहोरत्तेणवि २७-१८७२
 एगट्ठिभाय काऊण २७-१०१३
 एगट्ठुगतिगचउपण २७-१२७०
 एग० नेरइयस्स नेर० २२-३३७सू०
 एगमेगस्स नं० चंदिस्स २५-१६५सू०
 " " चंदिम० २१-१९५सू०

एगमेगस्स नं० नेर०वेद० २२-३३४सू०
 " " नेर०नेरइयत्ते २२-३३६सू०
 " " संवच्छरस्स २५-१५३सू०
 एगपयेऽणेगाई २२-१२६
 एगवीस जोयणसयाई २७-११९७
 एगस्स दोणह तिण्ह व २२-१०३
 एगं च सतसहस्सं २१-२९
 " " सयसहस्सं २५-८३
 " " २४-३२
 " " २७-५१६
 एगंतगुणे रहिया २७-१५६३
 एगंतमणाचाए २७-६५५
 एगं पंडियमरणं २७-१२५७
 " " २७-१२५९
 एगंमिवि जम्मि पए २७-१२२
 एगाइ गिराऽणेगे २७-१९
 एगा जोयणकोडी २१-४०

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२

॥१४॥

सूर्य० २३
च० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥१४॥

एगा जोयणकोडी	२७-१२०४	एतेसि	णं० अभिई	२५-१६०सू०	एतेसि० देवाणं कायपरि०	२२-३२९सू०
एगा य होइ रयणी	२२-१६५	"	"	२५-१५८सू०	" नेर० देवणा०	२२ ३४१सू०
एगावि सा समत्था	२७-३४६	"	कयरे	२५-१५७सू०	" पं० सं० पढमं	२४-६८सू०
एगाहेण तवस्सी	२७-१३६८	"	ओरालिय०	२२-२७९सू०	" भंने ! इत्थीणं	२१-६३सू०
एगीदियसरीरादी	२२-२१९	"	"	२२-२७८सू०	" जीवाणं	२१-९८सू०
एगीदियाणं० जीवा णणी	२२-२९६सू०	"	चंदिम०	२५-१७०सू०	" " णेरइय०	२१-६१सू०
एगूरुयपरिक्खेवो	२१-२५	"	"	२५-१६९सू०	" " णेर०	२१-२२४सू०
एगो जंबुद्दीवे	२७-१०७८	"	"	२१-२०७सू०	" " तिरिक्ख०	२२-५१सू०
एगो एगित्थिए	२७-८०२	"	"	२१-२००सू०	एत्थ किर अतिवयंती	२१-१४
एगो मे सासओ अण्णा	२७-८९	"	"	२५-१७५सू०	एत्थ णं० पच्छाणुताविण	२०-७६सू०
एगोरूयदीवस्स णं	२१-११२सू०	"	"	२४-९५सू०	एत्थ य भिन्नमुहुत्तो	२१-२४
एगो वच्चइ जीवो	२७-८८	"	छप्पणाए	२४-६२सू०	एयमवहाररासि	२५-(५०७टी०)
एगो विमाणवासी	२७-१७५७	"	जी० कोहसमु०	२२-३४३सू०	एयस्स चंदजोगो	२७-१०२९
एगो संयंकडाइ	२७-१४५३	"	वेदणा०	२२-३४०सू०	एयं खु जरामरणं	२७-५२९
एतासि णं भंते ! तिरि०	२१-५१सू०	"	सच्चभासगा०	२२-१७५सू०	" पच्चक्खाणं	२७-१३२
एतेसि णं० अट्ठावीसाए	२५-१५९सू०	"	सलेस्साणं	२२-२१६सू०	" "	२७-२४५
" " अभिई०	२५-१६१सू०	"	तिरिक्खजोणियाणं	२२-२१८सू०	" "	२७-२७५

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥१६॥

एवं बहुश्च चंदो
" चहुति "
" समणे० अंबसाल०
" सरीरसंलेहणाविहिं
एस करेमि पणामं
" "
" "
" "
" किराराहण्या
" समासो भणिओ
एसा कप्पवईणं
" गहितावि संती
" णं गंधविही
" भवणवईणं
" वंतरियाणं
एसो बलाबलविही
" तारापिंडो
" "

२७-१०७४
२४-७५
२०-७२०
२७-१४२०
२७-७४
२७-१३४
२७-१४४५
२७-५८८
२७-१७२९
२७-११०७
२४-९९
२७-११३२
२७-९४
२७-१००८
२७-९२८
२१-५२
२४-५६

एसो तारापिंडो
" वि ठिइविसो
" सवियारकओ
ओगाहणसंठाणा
ओगाहणा अवाए
ओगाहणाइ सिद्धा
" "
ओगाहणाए सिद्धा
ओ(उ)ग्गाहइ कैवइयं
ओमज्जायणमंडवा०
ओरालियसरीरस्स० कतिदि०
" केमहा०
ओरालियसरीरे० किंसं०
ओसन्नोवि विहारे
ओसग्णिणीइमीसे
ओसरणमवसरित्ता
ओहिन्नाणे निसओ

२७-१०५५
२७-९५९
२७-१५५८
२२-८
२२-२०८
२२-१६६
२७-१२१५
१९-१६
२४-७२०
२५-१०६
२२-२७२०
२२-२७०२०
२२-२६१२०
२७-७४३
२५-२५
२७-१८
२७-११६८

कइ णं० चंदमंडला २५-१४३२०
" " छाउमत्थियसमु० २२-३४४२०
" " णक्खत्तमंडला २५-१५८२०
" " भंते! अणुवेलंधर० २१-१६१२०
" " गंधा २१-९९२०
" " पुढवीओ २१-८२२०
" " माउअंगा २७-७२०
" " सत्ताओ २२-१४७२०
" " संठाणा २२-१५९२०
" " लेसाओ २२-२१४२०
" " २२-२२५२०
" " लेस्साओ २२-२३१२०
" " दुब्बि० २२-२२८२०
" " सूरमंडला २५-१२८२०
" " मंडलाइ वच्चइ २४-१
" " २४-३२०
कइया णु तं सुमरणं २७-१८३

सूर्य० २३
च० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥१६॥

औ० १०
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ १७ ॥

कइया णु तं सुमरणं २७-१४८१
कइविहा णं ओही २२-३१८सू०
" जोणी २२-१५३सू०
" जोणी २२-१५२सू०
" भंते ! पज्जा २२-१०३सू०
" वेदणा २२-३३०सू०
कइविहे णं आउयवंदे २२-१४५सू०
" उवओगे २२-३१३सू०
" गइप्पवाण २२-२०५सू०
कळुंभरि पिप्पलिया २२-२२
कणगत्तरत्ताभा २७-११२१
कणगमगिरयणधूमि० २७-९६८
कणगंकरययफालिय० २१-३१
कणगावलिमुत्तावलि २७-१६८८
कणहंसेस्सा णं कतिविहं २२-२२९सू०
" कैरिसिया २२-२२७सू०
" वत्तेणं २२-२२६सू०

कणहंसेसे णं जीवे कइसु २२-२२४सू०
" नेरइए० २२-२२३सू०
कणहे अ करकंठे य १९-६
कणहे कंठे वज्जे २२-५३
कति णं इंदिया २२-१९१सू०
" करणा २५-१५४सू०
" कम्मपगडीओ २२-३०१सू०
" " २२-३०२सू०
" " २२-३०३सू०
" " २२-२८९सू०
" " २२-२९४सू०
" " २२-३००सू०
" कसायससुग्घाया २२-३४२सू०
" कसाया २२-१८६सू०
" किरियाओ २२-२८०सू०
" " २२-२८५सू०
" किरियाओ २२-२८४सू०

कति णं कुला २५-१६२सू०
" णम्बत्ता २५-१५६सू०
" भंते ! पुढवीओ २२-१५४सू०
" भासज्जाया २२-१६७सू०
" " २२-१७४सू०
" " २१-१६०सू०
" " वेळंघरा २१-१८९सू०
" " समुद्दा २२-१७६सू०
" " सरीरा २२-२३२सू०
" लेसा २२-३३३सू०
" समुग्घाया २२-२६८सू०
" सरीरया २५-१५२सू०
" संवच्छरा २२-२१७
कति पगडी कह वंधति २२-१८७सू०
कतिपतिष्ठिणं णं कोहे २१-१०२सू०
कतिविघाणं भंते ! पुढवी २२-२००सू०
कतिविधे णं इंदियअवाण २२ १८८सू०
" " कोधे

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
लि० २६
प्रकी० २७

॥ १७ ॥

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२

॥१८॥

कतिविधे णं कोधे २२-१८९सू०
" परिणामे २२-१८१सू०
कतिविधा २२-२०१सू०
" इंदिया० २२-१४९सू०
" जेणी० २२-१५१सू०
" २२-३२५सू०
" परियारणा० २२-३१४सू०
" पासण्या २१-२३९सू०
" णिओया २१-१०१सू०
" संसारसमा० २२-३३१सू०
" वेदणा० २२-३३२सू०
" असण्णि० २२-२६७सू०
कतिविहे णं० २२-१९९सू०
" इंदियउव० २२-२०२सू०
" पओमे २१-१९२सू०
" भंते ! इंदिय २२-१७३सू०
" वयणे २२-३४९सू०
कतिसमतिप णं०

कतिसमतिप णं केवलि० २२-३५०सू०
कथइ अइदुण्णिकखो २७-१७९५
" दुड्विहिण्हि २७-१७९६
" सुहं सुरसमं २७-१८७५
कथ य मुद्धमिगत्ते २७२१७९४
कप्पतरुसंभवेसु २७-१४८६
" २७-१९३
कप्पमिप सहस्सारे २७-११०५
कप्पाओ कप्पमि उ २७-११२५
कप्पाकप्पविहिन्नू २७-१५६७
कप्पे सणंकुमारे २७-११२०
कमलामेलाहरणे २७-१६६८
कम्महुक्खयसिद्धा २७-२४
कम्मस्स आसवं २२-१८०८
कम्मासवदाराइ २७-१८५४
कम्हा णं० केवली समु० २२-३४८सू०
" भंते ! लवण० २१-१५७सू०

कयपावोऽवि मणुस्सो २७-१६३
कयपावोऽवि मणूसो २७-१४६५
" २७-१३३७
कयरे ते पत्तीसं देविंदा २७-९३६
करकरिण रायगल २४-९६
कलहं अब्भक्खाणं २७-२०२
" २७-१४९४
कल्लं कल्लपि वरं २७-१३६७
कल्लाणपरंपरयं २७-३४३
कल्लाणफलविवागा २७-११७७
कल्लाणं अब्भुदओ २७-५९४
कहं चंदमसो बुद्धी २४-४
कहं णं० जीवे अट्ट कम्म० २२-२९८सू०
कहि णं० अणवन्नियाणं २२-४९सू०
" ईसाणाणं २२-५३सू०
" २५-८९सू०
" उत्तरकुराप २५-८९सू०

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥१८॥

कहि णं० उत्तरकुराए जंबूवेढे २५-९१सू०
" " " गील० २५-९०सू०
" " जंबु० उत्तरह्रमरहे २५-१७सू०
" " उत्तरह्र० २५-१६सू०
" " बुद्धहिम० २५-७३सू०
" " गिसहे २५-८४सू०
" " गीलवंते० २५-१११सू०
" " दीवे दाहिणद्धे २५-११सू०
" " " भरहे० २५-१०सू०
" " " " २५-१२सू०
" " भारहे० वेअद्ध २५-१३सू०
" " महा० कच्छे० २५-९४सू०
" " चित्तकूँडे, २५-९५सू०
" " मंदरे० २५-१०४सू०
" " विज्जु० २५-१०२सू०
" " महाविदेहे २५-८६सू०
" " महा० सीआए २५-९७सू०

कहि णं० जंबु० सुकच्छे २५-९६सू०
" " " सोमणसे २५-९८सू०
" " " महाहिमवंते २५-८०सू०
" " " रम्मण० २५-११२सू०
" " " विजए णामं २५-८८सू०
" " " हेमवए २५-७७सू०
" " " हरिवासे०वासे २५-८३सू०
" " " जोइसियाणं २२-५०सू०
" " " देवकुराए चित्त० २५-९९सू०
" " " देव० कूडसामलि० २५-१०१सू०
" " " देव० गिसढहहे० २५-१००सू०
" " " पिसायाणं० २२-४८सू०
" " " भंते ! अग्निमंतरलावणगाणं
" " " असुरकुमारा० २१-१६४सू०
" " " उत्तरकुराए २१-१४९सू०
" " " " २१-१५२सू०

कहि णं भंते ! उत्तरकुराए २१-१५०सू०
" " " उत्तरिह्माणं २१-१२०सू०
" " " कालोयगाणं २१-१६६सू०
" " " जंबुद्दीवि० २१-१६३सू०
" " " जंबुद्दीवे २५-३सू०
" " " जंबु० विजये २१-१३०सू०
" " " जंबु० वेज० २१-१४५सू०
" " " जोइसि० २१-१२३सू०
" " " दाहिणिह्माणं २१-११०सू०
" " " दाहि० हयक० २१-११३सू०
" " " दीवससुद्धा २१-१२४सू०
" " " देवदीवगाणं २१-१६८सू०
" " " धायतिसंडी० २१-१६५सू०
" " " नागकुमाराणं २१-१२१सू०
" " " नेरइयाणं पज्ज० २२-४२सू०
" " " षंचिदिय० २२-४४सू०
" " " वादरपुढवी० २२-३९सू०

कहि णं भंते ! वादरवाउ०	२२-४०सू०
" " वेइंदियाणं	२२-४१सू०
" " भवणवासि०	२९-११सू०
" " रयण० नेरइ०	२२-४३सू०
" " वाण० देवाणं	२२-४७सू०
" " वाणमंतराणं	२१-१२२सू०
" " विजयस्स	२१-१३६सू०
" " वेमाणियाणं	२१-२०८सू०
" " सिद्धाणं ठाणा	२२-५४सू०
" " सुट्टियस्स	२१-१६२सू०
" " मणुस्साणं पज्जत्ता०	२२-४५सू०
" " महाविदेहे०	२५-८७सू०
" " उत्तर०	२५-८८सू०
" " मालवंते हरिस्सह	२५-९३सू०
" " मंदरए पव्वए सो०	२५-१०६सू०
" " मंदरए पव्वए पं०	२५-१०७सू०
" " मंदरे पव्वए पं०	२५-१०५सू०

कहि णं देअहे० पणत्ते	२५-१४सू०
" " सूरियामे णामं०	२०-२७सू०
" " हेमवए	२५-७८सू०
" " भवणवासीणं	२२-४६सू०
" " वेमाणियाणं	२२-५१सू०
" " सोहम्मगदेवाणं	२२-५२सू०
कहिं पडिहया लेसा	२४-२
" " सिद्धा	१९-९
" " "	२२-१५९
" " "	२७-१२०८
" " "	२२-३१
कंगू या कंडुइया	२७-१६५८
कंचणपुरम्मि सिट्ठी	२७-१६८
कंतारे दुब्भिक्खे	२७-१४७०
" "	२७-१२९६
कंदप्प कोकुयाइय	२७-१०२
" " देवकिब्बिस	२७-१२९५
" "	"

कंदा य कंदमूला य	२२-१०८
कंवलसाढे णं आवेडिय०	२२-१९८सू०
कंवूयं कन्नुक्कड	२२-४९
काइयवाइयमाणसिय०	२७-१३२९
काइंदीनयरीए	२७-६६२
काऊण तिहिं विउणं	२७-८८९
काऊण नमुकारं	२७-५८७
कागसुणगाण भक्खे	२७-५४१
का देवदुगई	२७-१०१
कामभुअगेण दट्ठा	२७-३८५
कामविडंबणचुक्का	२७-३९९
कामासत्तो न सुणइ	२७-३८८
कारणमकारणेणं	२७-८०८
का रंति व का लेणा	२७-९३८
कारुत्तामयनीसंद०	२७-२९४
कालत्तएवि न मयं	२७-४५
काला असुरकुमारा	२२-१४६

औ० १०
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ २१ ॥

काले अपहुयंते
" कालणानं
" गं० केरिसपहिं
काले नं भंते ! कुमारै
" य महाकाले
" "
" सुरुवपुणगे
कालो परमनिरुद्धो
कालोयं नं समुहं
किच्छाहिं पाविमिमि
किच्छाहिं पादिउ जे
किण्हं राशुविमाणं
" "
" "
किणहा नीला काऊ
" "
" "
" "

२७-३३३
२५-३३
२६-१९सू०
२६-१९सू०
२२-१५०
२७-१९७
२७-१००५
२७-५०४
२१-१७७सू०
२७-१३०६
२७-१८३९
२१-६८
२४-७२
२७-१०७१
२७-२०४
२७-१११९
२७-१४९५

किणहा नीला लोहिअ
किंतिअमित्तं वण्णे
किंतिया य विसाहा य
किंतियाहिं विसाहाहिं
किंतीगुणगम्भहरं
किन्नरकिंयुरिसे खलु
" "
किमाइआ गं० संवच्छरा
किमिकुलसयसंकिण्णे
किमिरासिभइमुच्छा
किसिपारासरढंढो
किर ताव घरकुडीरी
किं इत्तो लट्ठयरं
किं च तं नोवभुत्तं
" चित्तं जइ नाणी
" जायं जइ मरणं
" तं पंडियमरणं

२७-१७९
२७-५३७
२७-८८२
२७-८७१
२७-१२३९
२२-१५१
२७-१९८
२५-१५५सू०
२७-५३८
२२-५२
२७-१७३२
२७-५३५
२७-१३७९
२७-३१४
२७-१७४१
२७-१७८८
२७-२२४

किं तं पंडियमरणं
" तु महिलाण तासिं
" पुण अणगार०
" पुण "
" पुण "
" पुण अणगारसहायगेहिं
" पुण तरुणो अगहुस्सुओ
" पुण सपच्चवाए
" पुत्तेहिं पियाहिं य
कीरइ वीअपपणं
कुरगहपरुढमूलं
कुरुदत्तोवि कुमारो
कुरु मंदर आवासा
कुलगामनगरज्जं
कुल्लइरमिं य दत्तो
कुल्लउंमि पुरवरे
कुंभारकडे नगरे

२७-१५१६
२७-३९५
२७-१७८६
२७-२१५
२७-१५०७
२७-६९८
२७-७७४
२७-४९३
२७-५७८
२७-७९५
२७-३२८
२७-६७१
२२-२२६
२७-७३३
२७-१७२६
२७-६५७
२७-१७३

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रक्ती० २७

॥ २१ ॥

कृणविक्रोणलग्नेसु
केइत्थ सिय विमाणा
केइ य हरियविमाणा
केणं वड्डइ चंदो ?
" वड्डति चंदो
" " "
केवइयाणं ओरालिय०
" भंते ! जंक्क०
केवइया व विमाणा
केवतियाणं० कण्ह०
" भंते ! दीव०
केवलणाणुवउत्ता
" नाणुवउत्ता
" "
केवलिणो परमोही
केवली णं० इमं रयण०
कोइ पढमपाउसंमि

२७-९११
२७-११७१
२७-११७२
२७-१०७०
२१-६७
२४-७१
२२-१७७सू०
२१-१८७
२७-९३७
२२-३०सू०
२१-१९०सू०
१९-२०
१२२-१७०
२७-१२१९
२७-३२
२२-३१५सू०
२७-९३०

कोई पुण पावकारी
को केण समं जायइ
कोडी वाणउती खलु
" वातालीसा
" वायालीसा
को दुक्खं पाविज्जा
कोरिउधाउवणिउत्थ
को सडणपडणवि किरिण०
कोसंबीनयरीण
कोसायारं जोणीं
कोहमयमाय०
कोहस्स व माणस्स व
कोहं खमाइ माणं
कोहं माणं मायं
" " "
कोहाइकसाया खलु
कोहाईण विवागं

२७-४७१
२७-१८२२
२४-४४
२४-४९
२१-४५
२७-१४३२
२७-११७४
२७-५४०
२७-६६५
२७-४५८
२७-४९८
२७-१४२५
२७-१४२४
२७-२०१
२७-१४९३
२७-१६०८
२७-४२६

कोहेण नंदमाई
कोहे माणे माया
खइएण व पीएण व
खगुंडभिन्नदेहो
खज्जरिपत्तमुंजेण
खमगत्तणनिम्मसो
खरफरुसकक्कसाए
खरघोडाइट्टाणे
खलिअस्स य तेसि
खंडसिलोणेहि जवो
खंडा जोअण वासा
खंडिअसिणेहुदामा
खंते दंते गुत्ते मुत्ते
खामेमि सब्वजीवे
खामेमि सब्वसंघं
खित्तइयविच्छिन्ना
खित्ताणु० सब्व० तसकाइ०

२७-४२८
२२-१९५
२७ १९४
२७ १७४४
२७ ७८५
२२-१७५१
२७-७६३
२७-८३३
२७-५
२७-३६२
२५-८१
२७-२६
२७-७६२
२७-१४०
२७-६७७
२७-१२०५
२२-८९सू०

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ २३ ॥

खित्ताणु० सन्ध० पुगला २२-११सू०
" " पुडविका० २२-८८सू०
" " पंचिदिया २२-८७सू०
खीरदगेच्छुरसेसुं २७-१९६
खीरासवमहुआसव० २७-३३
खीरोदणं समुहं २१-१८३सू०
खीलगदामणि एगा० २५-११०
खुजाचिलाइवामणि० २५-९
खुडो बुडो तथा सेहो २७-८१५
खेत्ताणुवाणं सन्ध० २२-८२सू०
खेत्ताणु० सन्ध० विइंदिया २२-८६सू०
खेत्ता० सन्ध० पंगिदिया २२-८५सू०
" " नेरइया २२-८३सू०
" " भवणवासी २२-८५सू०
खेमा खेमपुरा चैत्र २५-५६
खेलपडिअमण्यां २७-७७८
खोदोदणं समुहं २१-१८५सू०

गइविम्भमाइएहिं
गच्छइ सविलासगई
गच्छायारं सुणिताणं
गच्छो महाणुभावो
गणसंगहणं कुज्जा
" "
" "
गणिअस्स य उण्पत्ती
गणि गोअम जा उच्चियं
गतिटिइ भन्ने य भासा
गतिपरिणामेणं० कति०
गम्भघरयम्मि जीवो
गयपुर कुरुत्तसुओ
गयगवयखगगंडय०
गयवसहसीहअभिसेय
गयसुकुमालमहेसी
गरहिता अण्णाणं

२७-८३०
२७-८२३
२७-८४६
२७-७६०
२७-८७३
२७-८८६
२७-९२२
२५-३०
२७-८२१
२२-१९१
२२-१८३सू०
२७-५७४
२७-१७२७
२७-१७९२
२७-८
२७-१६६६
२७-१५७२

गरुलोडवि देणुदेवो
गहदिणां उ मुहुत्ता
गं णए वालुयाए
गंधव्व अग्गिवेसे
" "
गिहदिज्जापडिण व
गीयत्थस्स उ वयणेणं
गीयत्थे जे सुसंविग्गे
गुड्डयपाओवगओ
गुड्डे पाओवगओ
गुणधारणरूद्धेणं
गुत्तीओ समिईओ
गुत्तीसमिइउदेओ
गुत्तीसमिइगुणद्धो
गुच्चरपाओवगओ
गुरुगुणगुरुणो गुरुणो
गुरुणा, कज्जमकजे

२७-९८३
२७-९२६
२७-५७२
२४-१८
२५-९९
२७-१३४९
२७-७५३
२७-७५०
२७-६६१
२७-५३७
- २७-७
२७-२०८
२७-६१५
२७-७०४
२७-१७१३
२७-३१०
२७-७६५

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ २३ ॥

औ० १०.
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ २४ ॥

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ २४ ॥

गुरुणो छंदपुर्विनी	२७-७६१	घोसोवि जंबुदीवं	२७-९८८	चउसट्टो सट्टो खलु	२२-१४३
गुरुसुक्कसोमदिवसे	२७-८९२	चइऊण कसाए	२७-१२८२	" "	२७-९७२
गूढसिरागं पत्तं	२२-८५	चउतीसा चउयाला	२२-१४१	" "	२५-७९
गेविज्जाऽऽवलिसरिसा	२७-१११६	चउतीसा चोयाला	२७-९६९	चउसरणगमणदुक्कड०	२७-१०
गेविज्जेसु य देवा रयणीओ	२७-११२४	चउत्थी उ बलानाम	२७-४८२	चउसरणगमणसंविअ०	२७-४९
गेहेसु गिहत्थाणं	२७-८२४	चउदसदसनवपुब्बी	२७-३३	चकट्टपइट्ठाणा	२५-३८
गेमेज्जाए य रयए	२२-१२	चउदसपुब्बधराणं	२७-१३८१	चक्कागं भजमाणस्स	२२-२५सू०
गोयमाइं समणे भगवं	२०-४८सू०	चउरंगो जिणधम्मो	२७-६२	चक्कागं	२२-८४
गोवज्जायण तेगिच्छ०	२५-१०७	चउरासीइ असीई	२५-७६	चक्खुदंसणी णं०पुच्छा	२२-२४३सू०
गोसीसागुरुकेयइ	२७-११३१	चउरासीइ असीई	२२-१५७	चत्तारि कसाए तिन्नि०	२७-१५४९
गोसीसावलिकाहार	२५-१०८	चउविहकसायमहणो	२७-६२५	" "	२७-२६७
घणउदहिपइट्ठाणा	२७-१११७	चउत्रीसं जोयणसयाइं	२७-११८७	" चैव चंदा	२४-३४
घणगज्जियहयकुहिअ	२७-८०४	" ससिरविणो	२१-३४	" "	२७-१०३९
घणमालाओ व दूरुन्न०	२७-४००	" "	२४-३८	" य कोडीओ	२७-५१८
घित्तूण समणदिक्खं	२७-१६७१	" "	२७-१०४१	" कोडिसया	२७-५१९
घोरम्मि गम्भवासे	२७-१६२०	चउसाट्ठि असुराणं	२२-१३९	" "	२७-५०२
घोराभिगहधारी	२७-१६९६	चउसट्टो	२७-९५३	" पंतीओ	२७-५८

चत्तारि य पंतीओ	२४-६२	चरियाए मरणमि उ	२७-१७३८	चंदातो सूरस्स य	२४-८३
" "	२७-१०६१	चंदगविज्झं लद्धं	२७-७०८	चंदा सूरा तारागणा	२७-१००९
" रयणीओ	१९-१४	चंदण गेरुय हंसगब्भ	२२-१३	चंदुव्व पिच्छणिज्जो	२७-६१४
" "	२२-१६४	चंदणपयट्ठिएहि य	२७-९६४	चंदे सूरै सुक्के	२६-२
" "	२७-१२१३	चंदमंडलस्स णं केव०	२५-१५५सू०	चंदेहि उ सिग्घयरा	२७-१०२२
" सहस्साहं	२१-४३	चंदमंडले णं केवइयं०	२५-१४६सू०	चंपगजीइ णीइया	२२-२८
" "	२४-४६	चंदविमाणे णं कति देव०	२५-१६८सू०	चंपासु णंदगं चिय	२७-१७३५
" "	२५-१२७	" देवाणं	२५-१७३सू०	चाउद्धंसि पन्नरसि	२७-८५३
चत्तारि च सहस्सा	२७-१०४७	" भंते !	२१-१९९सू०	चारित्तस्स विसोही	२७-२
चमरवइरोअणाणं	२७-९४९	" किं०	२१-१९८सू०	चिरउसियवभयारी	२७-१३०
चमरस्स णं कति परि०	२१-११९	" देवा०	२१-२०६सू०	चित्तामणी अउव्वो	२७-४४२
चमरस्स सागरोवम०	२७-९५६	चंदस्स णं कइ अग्ग०	२५-१७२सू०	चित्तेइ य खरकर०	२७-१६५५
चमरे धरणे तह वेणुदेव०	२७-९६७	" कति "	२१-२०३सू०	सुल्लहिमवत्ते णं वास०	२५-७६सू०
" " वेणुदेवे०	२२-१४४	चंदहोराविलग्गेसु	२७-९१०	सुलसीई किर लोए	२७-१४७४
चयणोववायउच्चत्ते	२४-५	चंदाउ नीइ जुण्हा	२७-१३८०	" "	२७-१७३
चरणईयाराणं	२७-६	चंदाओ सूरस्स य	२७-१०८२	चोत्तालं चंदसतं	२४-४५
चरिमे णं पुच्छा	२२-२४५सू०	चंदातो	२१-७८	चोयालं चंदसयं	२१-४२

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ २६ ॥

चोयालं चंदसयं
चोरिका निविचीए
चोरो परलोगं मिडि
चोरो रंखसपहओ
छकाया पडिविरओ
छवेव य अइरत्ता
छवेव य आरभडा
छजीवनिकाए रंखि०
छट्टुमदसमडुवाल०
छट्टि च इत्थियांओ
" हिट्टिमंज्झिम०
छट्टी उ हायणी नाम०
छट्टी हेट्टिमंज्झिम
छणउइ सयसहस्सा
छणउति "
छत्तीसगुणसम०

२७-१०४६
२७-३८१
२७-३८०
२७-१३०८
२७-६२७
२४-३०
२७-८९५
२७-१२६९
२७-१३६६
२७-१४१८
२२-१८४
२७-११६४
२७-४८४
२१-८८
२१-४४
२४-४७
२७-७२१

छत्तीसमट्टियाहि य
छत्तीसाट्टाणेषु य
छन्नउइ अगुलाइं (एसा (ए) दिवस०)
छन्नउइ सयसहस्सा
छन्नउइ पुच्छवाला
छण्णणं खलु भाए
" " भागा
छण्णं पंतीओ
" "
" पंतीणं
छण्णं च य सत्तेव य
" " "
छममासिया जहन्ना
छलिआ अवयक्खंता
छवीस जोयणसयाइं
छसु ठाणेषु इमेसु य

२७-१५४४
२७-१३१९
२७-८९८
२७-१०४८
२७-५१०
२५-१२३
२७-१०१५
२१-५९
२४-६३
२७-१०६२
२४-५सू०
२४-८
२७-१४१७
२७-४२३
२७-११८१
२७-१२७२

छावट्टिसहस्साइं
" "
" "
" छावट्टि
छावट्टिपि० णक्खत्ताणं
छावट्टि पिडगाइं
" पि० महागहाणं
" पिडयाइं
" "
छावट्टी० नक्खत्ताणं
" पिडयाणं
" पिडगाइं
" महगहाणं
" य मुहुत्ता
छावत्सरं गहाणं
" "

२१-८२
२१-८५
२४-८७
२७-१०८६
२७ १०७२
२४-६०
२४-५९
२४-६१
२७-१०५९
२७-१०५८
२१-५६
२७-१०६०
२१-५५
२१-५७
२५-(५०७टी०)
२१-६०
२४-६४

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ २६ ॥

औ० १०
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ २७ ॥

छावत्तरं गहाणं २७-१०६३
जइ इच्छसि नित्थरिडं २७-२६९
जइ इच्छसि नीसरिडं २७-१५५१
" उप्पज्जइ दुक्खं २७-१११
" कहवि असुहकम्मो २७-४३१
" खलु तस्सेव आदिच्चस्स २४-११सू०
" णं उक्खेवओ २६-२५सू०
" " २६-३०सू०
" " २६-२९सू०
" " २६-२७सू०
" " २६-२८सू०
" " २६-२४सू०
" पुप्फियाणं २६-२६सू०
" णं भंते ! उक्खेवओ २६-२६सू०
" " लवणं २१-१७४सू०
" " समणेणं २६-५सू०
" " समणेणं २६-२२सू०
" " निरया २६-२०सू०

जइ ताव ते मुणिवरा २७-६९६
" " सुपुरिसा २७-१५०५
" " २७-२१३
" " २७-२१४
" " सावयाकुलं २७-१५०६
" " २७-१७८५
" " २७-१८८१
जइया सयणिज्जगओ २७-७४२
जइवि न सक्कं काडं २७-४०३
" परिचत्तसंगो २७-३००
" स खंडिअचंडो २७-७७५
" सयं थिरचित्तो २७-११५९
जइ सागरोवमाइ २७-३०७
" सोवि सब्बनिरइ २७-६८९
जगआहारो संघो २७-५७७
जइणं बुद्धानं निब्बि २२-१९४
जणवयसमतठवणा २५-३
जणामया य कूडा

जति णं समणेणं २६-२१सू०
" २६-२३सू०
जत्तियमित्ते दिवसे २७-४५०
जत्तो वट्टविमाणं २७-११४३
जत्थ अणुत्तरगंधा २७-११५०
" जयारमयारं २७-८१९
" पियपुत्तगस्सवि २७-१८३३
" मुणीण कसाण २७-८०६
" य अज्जाकण्णं २७-७७०
" " लद्धं २७-८००
" " अज्जाहिं समं २७-७७१
" " उवस्सयाओ २७-८१७
" " एगा खुट्ठी २७-८१६
" " एगा समणी २७-८१८
" " एगो सिद्धो १९-१७
" " २२-१६७
" " २७-१२१६

॥ २७ ॥

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ २९ ॥

जस्स सालस्स भग्गस्स
जस्साउरण तुल्लार्तिं
जह अग्गिभि व पवले
" अयगोलो धंतो
" कागणीह हेउं
" कंटपण विद्धो
" खंदगसीसिंहिं
" खुहियचक्रवाले
" "
" जह दढप्पइण्णो
" जह दोसोवरमो
" निणवयणामय०
" जीवा वज्झंति
" उहइ वाउसहिओ
" " वायसहिओ
" णरगा गम्मंति
" णाम कोइ मिच्छो

२२-७०
२२-२२९
२७-१५२७
२२-१०२
२७-१३०७
२७-१२८४
२७-१६७८
२७-२११
२७-१५०३
२७-१८७१
२७-१८६६
२७-१८९५
१९-—४
२७-२३३
२७-१५२६
१९-—१
१९-२४

जह णाम कोइ मिच्छो
" तेण तत्थ मुणिणा
" त्रितथमुणिणा
" सो हुयासो
" ते न पिअ दुक्खं
" समंसचम्मे
" दमदंतमहेसी
" नाम असी कोसा
" " कोइ मिच्छो
" नाम पट्टणगओ
" " वच्चक्खो
" निवदुमुप्पन्नो
जहवपपसिया णं भंते !
जहन्नोगाहगणं
जहन्नोगाहगणं
जहन्नो० पंचिदिय०
" पुढविक्काइया०

२२-१७४
२७-१६७४
२७-१६५९
२७-१६६७
२७-३६५
२७-१६८३
२७-१६७७
२७-१७६६
२७-१२२४
२७-१८७७
२७-५५९
२७-१८९०
२२-१२१सू०
२२-११२सू०
२२-१११सू०
२२-११५सू०
२२-११३सू०

जहन्नो० देइदियाणं
" मणुस्साणं
जह पच्छिममि काले
" "
" पुव्वुद्धअगमणो
" वालो जंपतो
" "
" "
" "
" "
" "
" वीहंति अ जीवा
" मक्कडओ खणमवि
" य अणुद्धयसहो
" वा तिलपप्पडिया
जहा वा तिलसकुलिया
" वेयणावसट्ठा
" सगलसरिसवाणं
"

२२-११४सू०
२२-११६सू०
२७-२६०
२७-१५४३
२७-१२७७
२७-९५
२७-१५५
२७-१३३६
२७-१४५९
२७-१७९०
२७-३५९
२७-१५९३
२२-४६
२१-४
२७-१५९६
२१-३
२२-४५

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ २९ ॥

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ३० ॥

सूर्य० २३
चंद्र० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ ३० ॥

जह सव्वकामगुणियं	१९-२६	जं अन्नाणी कम्मं	२७-१३७०	जं वेममरागरत्तो	२७-५५१
" "	२२-१७६	" असियं वीभच्छं	२७-१६२२	जं बद्धमसंखिज्जाहिं	२७-६९३
" "	२७-१२२६	" किंचिवि दुच्चरियं	२७-८१	जंबुद्दीवसमा खलु	२७-१००३
" सव्वकालतिच्चा	२७-१२२७	" "	२७-१३६	जंबुद्दीवस्स णं० कति दारा	२१-१२९सू०
" सा वत्तीसघडा	२७-१७१५	" "	२७-१४४६	जंबु० दीवस्स दारस्स य	२५-९सू०
" सायरसे गिद्धा	२७-१५९४	" किंचि सुहमुआरं	२७-३७०	जंबुद्दीवस्स णं० "	२१-१४६सू०
" सिद्धिमग्गदुग्गइ	२७-१५९७	" कुणइ भावसल्लं	२७-१६१	" " दीव०	२५-७सू०
" सुकुसलोवि विज्जो	२७-१३३९	" "	२७-१३४६	" " पपसा	२१-१४७सू०
" "	२७-७२२	" "	२७-१४६३	" " पदेसा	२५-१२५सू०
" सोऽवि सव्वपसी	२७-१७१४	जं घट्टियासु ऊरू	२७-५५६	जंबुद्दीवं काऊण	२७-९९३
जहिं देवा जोइसिया	२७-१०१४	जं च दिसावेरमणं	२७-६७	" लवणे	२१-१५५
" भवणवई	२७-९६६	जंतेण करकएण व	२७-१७१६	जंबुद्दीवे० अट्टावीसाए	२५-१६७सू०
" वंतरिया	२७-१००४	जं देवाणं सोक्खं	१९-२२	" णं० कइ चंदा	२५-१२७सू०
जं अइतिक्खं दुक्खं	२७-४२७	" न लहइ सम्मत्तं	२७-१४३९	" " कति चंदा	२१-१५४सू०
" अज्ज सुहं भविणो	२७-२७९	" नामए समुदे	२७-९७५	" " किं पुढवि०	२५-१७९सू०
" अन्नाणी कम्मं	२७-२३४	" निजरेइ कम्मं	२७-१२८९	" " किं सासए	२५ १७८सू०
" "	२७-७०१	" पुब्बं तं पुब्बं	२७-१३४०	" " केवइअ	२५ १७७सू०

औ० १०.
रा० २०
जी० २१
प्रश्न० २२
॥ ३१ ॥

जंबुद्वीपे० गं० जहणपण २५-१७६सू०
" " तागण० अवाहाण २५-१७१सू०
" " ताराकवसग २१-२०२सू०
" " भग्ने चाये० सु० २५-२०स०
" " भरहणमाण० २५-१२६सू०
" " भारहे० कोले २५-१८सू०
" " मंदरसप्त पव्वय० २५-१३२सू०
" " सुरिआ उदीण० २५-१५१सू०
" " " उगमण २५-१३७सू०
" " " २५-१३८सू०
" " सुरिआणं० कि० २५-१३७सू०
" " सुरिआ० खत्तं २५-१४०सू०
" " मंदरसप्त० चव० २५-१४७सू०
" " लवणं २२-२०४
" " " २१-३२
" " सच्च० खरमंडले २५-१३३सू०
जंबुप गं सुदंमणण २१-१५३सू०

जंबुद्वीपे गं भंते! कयरे०
" " भंते! मंदर०
जं मणवयकाएहिं
" रागदोसमइअं
जंबित्थीओ पमासंति
जं सग्गहम्मि० कीरर
" संठाणं तु इहं
" " " "
" " " "
" " " "
" सासयसुहमाम्मण०
" मीसपूरउत्तिअ
" सुत्तिरेणवि होहिइ
जं मोग्गर नह जूरिया
जाउलगमीलपरिली
जा एस रातमी सा उ
जाओ परव्वसेणं
जाओलि अ इमाओ

२१-१९७सू०
२१-१९६सू०
२७-५४
२७-६३६
२७-९१७
२७-८६५
१९-११
२२-१६२
२७-१२१०
२७-२८१
२७-५४८
२७-१६०५
२२-२७
२२-२५
२७-८५१
२७-१६०९
२७-२०सू०

जा काइ पत्थणाओ
" " "
" तस्स खमा तइया
" पुव्वभायिया किर
जामइं जाम विण पक्ख०
जायमाणस्स जं दुक्खं
जायमित्तस्स जंतुस्स
जावइआइं दुम्माइं
जावइआ० किर दोसा
जावइयं किंचि दुहं
जावइयंसि पमाणमि
जावजीवं तिविहं
जाव य खेमसुभिमक्खं
" " जंबुद्वीवो
" " सुई न नासर
जावंति केइ ठाणा
" " दुम्मा

२७-१९८
२७-१४९०
२७-१६६९
२७-१४०७
२७-७१२
२७-४७२
२७-४७९
२७-३६२
२७-३८३
२७-१६३८
२५-४३
२७-३१८
२७-१३९०
२७-९८०
२७-१३८९
२७-१४२७
२७-६८७

सूय० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ ३१ ॥

ओ० १०
१० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ३२ ॥

जाहे य पावियव्वं
" होइ पमत्तो
" "
जिअलोयवंधुणो
जिहो चउदसपुब्बी
जिणमयभाविअचित्तो
जिणवयणअणुगया
जिणवयणे अणुरत्ता
जिणवयणनिच्छिअ०
जिणवयणमणुगयमई
" "
जिणवयणमणुगया मे
जिणवयणमणुगुणितो
जिणवयणमणुस्सट्ठा
जिणवयणमण्पमेय
" "
जीव गइइंदियकाए

२७-१८६५
२७-२३१
२७-१५२४
२७-३१
२७-१६९४
२७-१८९४
२७-२३०
२७-१०६
२७-६४८
२७-२३२
२७-१५२५
२७-१५२३
२७-१७५२
२७-१७५६
२७-१५०८
२७-२१६
२२-२११

जीवरिणामे णं
जीववहो अप्पवहो
जीवस्स णं भंते ! गम्भगयस्स
जीवस्स णं मारणं
जीवाणं कतिविधे
जीवा णं कतिहिं ठाणेहिं
" किं भासगा
" सकिरिया
" सच्चमणज्ज
" सणी
" सम्मदिट्ठो
" संजया
जीवे अंतकिरियं
" किं आहारण
" गम्भगण समणे
" जाइं ताइं
" "

२२-१८२सू०
२७-३६८
२७-४सू०
२२-२७६
२२-२०३सू०
२२-१९०सू०
२२-१६६सू०
२२-२८१सू०
२२-२०४सू०
२२-३१६सू०
२२-२५५सू०
२२-३१७सू०
२२-२५६सू०
२२-३१०सू०
२७-६सू०
२२-१७२सू०
२२-१६९सू०

जीवे
" जातं दव्वान्ति
" जीवेत्ति कालओ
" णाणा० कम्मं
" "
" णाणावरणिज्जं
" णाणातिवाएणं
" भते ! उत्ताणए वा
" गतिचरमे
" गम्भगए
" देवलोएसु
" नरएसु
" वेउडिवयससु
" वेदणाससु
जीसे तयाए भगगए
जीसे "
जीसे सालाए कट्ठाओ
" ण्तणु

२२-१६८सू०
२२-२३३सू०
२२-२९१सू०
२२-२९२सू०
२२-२८३सू०
२२-२८२सू०
२७-१०सू०
२२-१६०सू०
२७-५सू०
२७-९सू०
२७-८सू०
२२-३४६सू०
२२-३४५सू०
२२-५९
२२-६९
२२-७९
२२-८३

सूर्य० २३
अं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ ३२ ॥

जो निच्छेपण गिण्हइ
जो पुण अत्थं अवहरइ
" " दंसणमइओ
" " दंसणसुद्धो
" " पत्तम्भूओ
जो भत्तपरिन्नाप
जोयणसहस्स गाउय
" छागाउ०
जो रागदोसरहिओ
जो चाससयं जीवइ
" सम्मं भूयाइ
" साइआरचरणो
" सुत्तमहिजंतो
" संखिजभवट्ठिई
जोहाण य उण्णत्ती
जो हेउमयाणंतो
ज्ञाणाण परमसुक्कं

२७-१६७५
२७-३७८
२७-६२१
२७-६२२
२७-६२०
२७-७१
२२-२१६
२२-२१५
२७-६२३
२७-४९२
२७-१८५९
२७-३०२
२२-१२५
२७-६३३
२५-३६
२२-१२४
२७-५९६

ठविण पायच्छित्ते
ठिती सब्बेसि भाणियञ्चा
डुञ्जतेणवि मिम्हे
णक्खत्तारगाणं
णक्खत्तसहस्सं
णक्खत्ताण सहस्सं
णग्गोह णंदिरुक्खे
णट्ठविही णाडगविही
णपुंसकवेदस्स णं भंते !
" "
णरगं तिरिक्खजोणिं
णवमे वसंतमासे
णवि अत्थि माणुसाणं
णवि से खुहा ण विलिभ
णंदिस्सरवरणं दीवं
णंदीसरोदं समुहं
णंदुत्तरा य णंदा

२७-२९८
२१-२२१सू०
२७-७०६
२४-६६
२४-४२
२१-३८
२६-१९
२५-३७
२१-६२सू०
२१-६०सू०
१९-—३
२५-९२
१९-२१
२५-२०
२१-१८५सू०
२१-१८६सू०
२५-७२

णाणावरणिजस्स णं
णाणावरणिजस्स णं
" " क०
णाणाविहसंठाणा
णाणी चेव अण्णाणी०
" जहा सम्महिट्ठी
" णं णाणित्ति
णामिस्स णं कुल०
णिच्छिण्णसव्वदुक्खा
णिद्धस्स णिद्धेण दुयाहि०
णिंबवजंबुकोसंब०
णेरइयाणं० सव्वे सम०
" " समो०
णेसप्यंमि णिविमा
तइया कीस न हायइ
तईयाए मंदया नामं
तए णं० अकालपरिहीणा

२२-२९५सू०
२२-२९३सू०
२२-२९८सू०
२२-४४
२१-२४७सू०
२२-३१२सू०
२२-२४२सू०
२५-३१सू०
१९-२९
२२-२००
२२-१५
२२-२०८सू०
२२-२०६सू०
२५-२९
२७-१८००
२७-४८१
२०-१४सू०

तप० पं० अत्तार्णं संपल्लवः	२०-८१सू०	तप० पं० केंसालंकारेणः	२०-४३सू०	तप० पं० ताओ सुभद्रा०	१९-३७सू०
" " अयमारगं वा	२०-६९सू०	" " कैसीकुमारसम्पणे	२०-५९सू०	" " "	१९-३३सू०
" " आसिओनिमं देवे	२०-१५सू०	" " चउहं ठाणेहिं चि०	२०-६१सू०	" " पं० तुज्जे ता ने वा	२०-६४सू०
" " आहोहिया	२०-६३सू०	" " चत्तारि अयमहिंसी	२०-४५सू०	" " तुम्भं इयं यानं	२०-७२सू०
" " इमेथारुत्ते	२०-८०सू०	" " चत्तारि य सासा०	२०-४४सू०	" " पं० ते आनिओनीया	२०-८०सू०
" " इययेयाणं दक्खि	२०-७२सू०	" " चंपाणं लिंघाडं	१९-२७सू०	" " ते आवाडचिलाया	२५-५८सू०
" " इहं उव्विंसासि	२०-६५सू०	" " चित्ते सारही	२०-६०सू०	" " "वहने नेमालिया	२०-१३सू०
" " उत्तरपुरत्तिथमं	२०-१०सू०	" " जिणिदासिममण०	२०-१६सू०	" " ते मणुआ भरहं	२५-४०सू०
" " उम्मुकवालमाने	२०-८४सू०	" " णच्चासण्णे	२०-१९सू०	" " पं० तेसि सामाणियं	२०-४२सू०
" " उव्वुणाणीलीलाणि	२०-८७सू०	" " णो आढाति	२०-२३सू०	" " पं० दढपत्तिण्णे	२०-८३सू०
" " एगं भासं गलवाह०	२०-७९सू०	" " तस्स भ० अणया	२५-६८सू०	" " पं० दिव्वं देवडि	२०-२५सू०
" " एत्ता पण्णा उवमा	२०-६६सू०	" " भरहस्स	२५-४३सू०	" " परिसाण जाव	२०-२०सू०
" " कर आयरिया पं०	२०-७७सू०	" " "	२५-६१सू०	" " पचागीयपरि०	२०-१७सू०
" " कल्ल पाउवाभयिण	२०-६२सू०	" " विजयस्स	२१-१४४सू०	" " पायत्ताणिया०	२०-११सू०
" " ण कृणिअअस्स० वहने	१९-३२सू०	" " सूरियाभस्स	२०-६०सू०	" " वहने देवकुमारा	२०-२४सू०
" " कृणिणं पुअस्सवाण	१९-३६सू०	" " तहत्ति आणाए	२०-१२सू०	" " भवसिद्धिण अम०	२०-२१सू०
" " केइ उरिसे तरणे	२०-६८सू०	" " ते दिव्वं	२०-२५सू०	" " मय अज्जगस्स	२०-७५सू०

औ० १९

रा० २०

जी० २१

प्रज्ञा० २२

॥ ३६ ॥

तए	पं०	मम	पागरगुत्तिया	२०-७०सू०
"	पं०	समणे०	कल्लं पाउ०	१९-१३सू०
"	"	"	कूणिअस्स	१९-३४सू०
"	"	"	मिहिलाए	२५-१८१सू०
"	पं०	सब्बं	जाणह	२०-२२सू०
"	पं०	सा	महत्तिमहालिया	१९-३५सू०
"	"	सावत्थीए	नयरीए	२०-५४सू०
"	पं०	सूरियकंतप्पमु०		२०-७८सू०
"	पं०	से	अच्छुइंदे	२५-१२३सू०
"	"	अच्छुए	देवे०	२५-१२२सू०
"	"	अच्छुए	देविंदे	२५-१२१सू०
"	"	से०	अतियाओ	२०-५७सू०
"	"	से	आसमदोणमुह०	२५-४८सू०
"	"	कूणिए०	जेणेव	१९-३१सू०
"	"	"	वलवाउ०	१९-२९सू०
"	"	"	वामं०	१९-१२सू०
"	"	"	चित्ते	सारही
"	"	"		२०-५५सू०

तए	पं०	से	जियसत्तू	राया	२०-५६सू०
"	"	"	दिव्वे	चक्रयणे	२५-६२सू०
"	"	"	"	"	२५-६५सू०
"	"	"	"	"	२५-५१सू०
"	"	"	"	"	२५-४५सू०
"	"	"	"	"	२५-५०सू०
"	"	"	पवित्तिवाउए		१९-२८सू०
"	"	"	"	"	१९-११सू०
"	"	"	पालयदेवे		२५-११७सू०
"	"	"	बलवाउए		१९-३०सू०
"	"	"	भगवं	जंबू०	२६-४सू०
"	"	"	भरहे	राया	२५-६७सू०
"	"	"	अणया		२५-७१सू०
"	"	"	"	"	२५-५३सू०
"	"	"	उप्पि		२५-५९सू०
"	"	"	कयमाल०		२५-५२सू०
"	"	"	गंगाए		२५-६६सू०

तए	पं०	से	भरहे०	चउ०	२५-७०सू०
"	"	"	"	चाउघंटं	२५-४६सू०
"	"	"	"	छत्तरयणं	२५-६०सू०
"	"	"	"	तं दिव्वं	२५-४७सू०
"	"	"	"	"	२५-६४सू०
"	"	"	"	"	२५-६३सू०
"	"	"	"	तुरण	२५-५४सू०
"	"	"	"	मणिरयण०	२०-५८सू०
तए	पं०	सेयविया	नगरी		२०-५८सू०
"	पं०	से	निजए०	महया	२१-१४३सू०
"	"	"	सके	जाव	२५-११८सू०
"	"	"	"	पंच०	२५-१२४सू०
"	"	"	सेणावलस्स		२५-५७सू०
"	"	"	हत्थिस्स	कुंयुस्स	२०-७४सू०
तट्टे	अ	भाविअण्णा			२५-९८
"	य	भावियण्णा			२४-१७
तणकट्टेण	च	अग्गी			२७-१८८
"	"	"			२७-१८९

॥ ३६ ॥

सूर्य० | २३
च० | २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

तणकट्टेण व अग्गी २७-१९०
" " २७-१४८४
तणकट्टेहि " " २७-११३
तणमूल कंदमूले २२-५४
तणसंथारनिमज्जो २७-६३४
तते णं तस्स कृणियस्स २६-१४सू०
" " दारगस्स २६-१३सू०
" तीसे कालीए देवीए २६-७सू०
" चेहणाय २६-११सू०
" " २६-१०सू०
" सा चिह्णणां २६-१२सू०
" से काले कुमारे २६-६सू०
" कृणिए २६-१६सू०
" " २६-१८सू०
" कृणिए रायां २६-१५०सू०
तत्तो अणुपुत्रेणाहारं २७-१४१४
" तस्स महन्वयं २७-३०३

तत्तो भवचरिमं सो २७-३१२
" य जोगसंगह २७-१७०९
तत्थ खलु इमाओ २४-७६सू०
" " वावाट्टि २४-६३सू०
" " २४-८०सू०
" इमे अट्टासीती २४-१०६सू०
" छउङ्ख २४-७५सू०
" दसविधे २४-७८सू०
तत्थं छब्बसए उड्विद्धा २७-११८२
" जे० अट्टविहा० २१-२६८सू०
" " संसारं २१-२४२सू०
" चउड्विहा० मणं २१-२५८सू०
" छड्विहा० २१-२६४सू०
" जे ते एव० चउड्विहा २१-६६सू०
" " तिविधा २१-४५सू०
" जे० पंचविधा० कोहं २१-२६२सू०
" सत्तविधा २१-२६६सू०

तत्थ जे० सत्तविहा २१-२४१सू०
" णं अयं जंबुद्वि २१-१२५सू०
" चंपाए णयरीए १९-६सू०
" " सेणियस्स २६-१७सू०
" छड्विहा संसारं २१-२२७सू०
" जे एव० दुविहा २१-१सू०
" जे० णवविहा २१-२४३सू०
" जे ते फासपरियारं २२-३२८सू०
" जे० दसविधा २१-२४४सू०
" णं णवविधा० एणिं० २१-२७०सू०
" तिविहा सव्वजीवा २१-२५१सू०
" दसविधा० पुढविं २१-२७२सू०
" पंचविहा संसारं २१-२२५सू०
" णं विणीआए रायं २५-४३सू०
" सुमई० एतेसि पंचं २५-३०सू०
" य मुणिवरवसहो २७-६६८
" वणयरसुरवर २७-१७५३

ता कतिकहुं ते सूरिण २४-३०सू०
" " " २४-३१सू०
" कतिणं चंदिमसूरिया २४-१००सू०
" " भैते ! संव० २४-५४सू०
" संवच्छरा २४-५२सू०
" कति ते चंदमंडला २४-४५सू०
" कहे ते अणुभवि २४-१०२सू०
" " अद्धमंडलसंठिती २४-१२सू०
" " उच्चते २४-८९सू०
" " उत्तरा अद्ध० २४-१३सू०
" " उदयसंठिती २४-२९सू०
" " एवंभागा २४-३५सू०
" " ओयसंठिती २४-२९सू०
" " कुला २४-३७सू०
" " गोत्ता २४-५०सू०
" " चयणोववाता २४-८८सू०
" " चंदमग्गा २४-४४सू०

ता कहे ते चंदमसो वड्डो २४-७९सू०
" " चंदे ससी २४-१०४सू०
" " चारा २४-५२सू०
" " जोगस्स आदी २४-३६सू०
" " जोतिसस्स दारा २४-५९सू०
" " णक्खत्तविजये २४-६०सू०
" " णेता २४-४३सू०
" " तारग्गे २४-४२सू०
" " तिही २४-४९सू०
" " दिवसा २४-४८सू०
" " देवताणं २४-४६सू०
" " दोसिणाल० २४-८७सू०
" " नक्खत्तसं० २४-४१सू०
" " पुणिमालिणी २४-३८सू०
" " भोयणा २४-५१सू०
" " मंडलसंठिती २४-१९सू०
" " मंडलाओ मंडलं २४-२२सू०

ता कहे ते भासा २४-५३सू०
" " मुहुत्ताणं २४-४७सू०
" " मुहुत्ता य २४-३३सू०
" " राहुकम्मे २४-१०३सू०
" " तेरिच्छगती २४-२१सू०
" " वद्धोवद्धी २४-८सू०
" " संवच्छराणादी २४-७१सू०
" " सणिवाते २४-४०सू०
" " सिग्घगती वत्थू २४-८३सू०
" " सीमाविकल्मे २४-६१सू०
" " सेआते संठिईया २४-२५सू०
" कंसि स णं सूरियस्स २४-२६सू०
" के ते चित्रं पडिचरंति २४-१४सू०
" " सूरियं वरंति २४-२८सू०
" केवइयं एए दुवे सूरिया २४-१५सू०
" केवतियं खेसं चंदिम० २४-२४सू०
" " ते एगमेगेणं २४-१८सू०

तां केवलियं ते खेतं २४-२३सू०
" " नोजुगे २४-७३सू०
" " दीवं स० २४-१६सू०
" चदविमाणेणं २४-९४सू०
" चंदस्स णं जोति० २४-१०५सू०
" " " २४-९७सू०
" चंदेण अद्धमासेणं २४-८१सू०
" जया णं इमे चंदे २४-७०सू०
" " चंदं गति० २४-८४सू०
" " सूरीण २४-९सू०
" जंतु० तारारुवस्स य २४-९६सू०
" जंतु० दीवे कतरे २४-२३सू०
" जुगसंवच्छरे णं २४-५६सू०
" जेणं अज्जणक्खल० २४-६९सू०
" जोगेति वत्थुस्स २४-३२सू०
" णक्खत्तसंवच्छरे णं २४-५५सू०
" णक्खत्तेणं मासेणं २४-८५सू०

ता तं निज्जिणिऊणं २७-१८०१
" धीर ! धीवलेणं २७-४२५
" पमाणसंवच्छरे २४-५७सू०
" पुक्खवरं णं दीवं २४-१०१सू०
" मंदरस्स णं पव्व० २४-९२सू०
तार(य)ग्गं च नेता य २४-१२
तारूत्रेण य तारूवं २७-९१८
" लब्बुलणसंवच्छरे २४-५८सू०
ताल तमाले तक्कलि २२-३९
ताव खमं काउं जे २७-१३९१
ता सव्वावि णं मंडलवया २४-२०सू०
ता साविट्ठिणं पुण्णिमा० २४-३९सू०
ता सो अइसुसुमालो २७-१७०५
ताहिं दुक्खविवांगाहिं २७-२५८
तिगतिगपंचगसयदुग २५-१०२
तिणिण सता छत्तीसा २४-५१
" ५ सया . " २७-१०५०

तिणिण सया तेत्तीसा १९-१३
" सहस्सा सत्त य २५-६
तिण्णेव उत्तरा २५-११३
" " २५-११७
तिण्णेव य नेविज्जा २७-११०८
" सतसहस्सा २१-३०
तित्तीस सयसहस्सा २७-५१७
तित्थयरसमो सूरी २७-७३६
तिन्नि रयणीइ खइओ २७-६५२
" सया छत्तीसा २१-४७
" " छासट्ठा २७-१२१२
" सयाणि सट्ठाणि २७-८८१
" सया तित्तीसा २२-१६३
" सहस्सा सत्त य २७-५०७
" सहस्से सगले २७-५२२
तिन्नेव उत्तराइ २७-१०३१
" " २७-१०३५

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ४२ ॥

तिन्नेव कंसणामा
" य कोडीओ
तियलोयमत्थयत्था
तिरिअगइं अणुपत्तो
तिरिणसु व मेरवसह
तिरिओववाइयाणं
तिरिक्खजोणित्थयाओ
तिरिक्खजोणित्थीणं
तिरियं तु असंखिजा
तिरियं वाहरंतेसु अद्धा
तिलए लउए छत्तोह
तिल्लविह्वणो दीवो
तिविहं तिकरणसुद्धं
तिविहं पि भावसल्लं
तिविहं भणंति मरणं
तिविहाहिं पसणाहि
तिविहेण य सुहमउलं

२४-११
२७-४५४
२७-२५
२७-६८२
२७-१६३१
२७-११४६
२१-६५सू०
२१-४८सू०
२९-१११
२७-९०४
२२-२०
२७-१६०२
२७-१२४०
२७-१३३४
२७-९८
२७-१४१५
२७-१९७

तिविहेणवि सहमाणो
तिविहेणवि सुहमउलं
तिविहेसु होइ भेयो
तिविहोवसग्ग सहिउं
तिसु तणुअं तिसु तवं
तिहिं उत्तराहिं रोहिणीहिं
" गारवेहिं रहिओ
तिहुअणरजसमाहिं
तिहुयणसरीरवंदं
तीआणागयकाले
तीसा चत्तालीसा
" "
" य पण्णवीसा
" " पन्नवीसा
तीसे णं आमलकप्पाए
" " चंपाए० पुण्णभेइ
" " जगईए उरिपि

२७-१५७८
२७-१३८९
२१-५
२७-१६५१
२५-२७
२७-८७२
२७-६२४
२७-६११
२७-१२३६
२७-७४६
२२-१४२
२७-९७०
२१-७
२२-१३७
२०-२सू०
१९-२सू०
२५-५सू०

तीसेणं जगतीए उरिपि
" " वाहिं
" " तिमिसगुहाए
" णं दोहिं सागरो०
" " भरहस्स०
" णं स० इक्कवीसाए
" " "
" " समाए एक्काए
" " चउहिं
" " तिहिं
" " पच्छिमे०
" " भरहे
" " भरहे
" " समाए भारहे०
तु(यु)ट्ठमि सयं मोहे
तुच्चिमत्थ सामि सुअ०
तुम्हारिसावि मुणिवर

२१-१२६सू०
२१-१२७सू०
२५-५५सू०
२५-३५सू०
२५-४१सू०
२५-३८सू०
२५-३७सू०
२५-३६सू०
२५-२७सू०
२५-२८सू०
२५-२९सू०
२५-२२सू०
२५-२१सू०
२५-२६सू०
२७-५२७
२७-१२४४
२७-७२८

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ ४२ ॥

तेतीसाए सुंदरि !
ते मेरु परियडंता
" माणुसुत्तर
" मेरुमणुचरंता
तेयगसरीरे णं० कति
तेयाकम्मसरीरा
तेलुकस्स पहुत्तं
तेल्ले कोट्टसमुग्गे
ते विहरिऊण विहिणा
तेवीसं च विमाणा
" जोयणसयाइं
तेसि णं खुट्ठाखुट्ठियाओ
" णं० दब्बाणं कतिविहे
" दाराणं० चंदणं०
" देवाणं
" पासायवडेंसगा
" भग० अर्द्धिभतरं०
२७-११५३
२१-६१
२७-१०६४
२४-६५
२२-२७५सू०
२१-२२
२७-३४४
२५-११
२७-१६९५
२७-११३३
२७-११९१
२०-३२सू०
२२-१७०सू०
२०-२८सू०
२५-१४२सू०
२०-३३सू०
१९-१८सू०

तेसि णं भंते ! जीघाणं
" णं० मणुआणं
" सोलस० जाल०
तेसि आराहणनायगाण
" कलंबुयापुप्फ०
" कलंबुयापुप्फसंठिया
" कलंबुयापुप्फ०
" णं वणसंडाणं
" पविसंताणं
" "
" "
" महालयाए
" मेरुमहोयहि०
(इसिवा०) तेसि सुरासुरगुरू
तेसुवि अलद्धपसरा
तो(दो)अणगारा धिज्जा०
तो इंदियपरिकम्मं
२१-१३सू०
२५-२३सू०
२०-२९सू०
२७-३४८
२१-६६
२७-१०६१
२४-७०
२०-३१सू०
२१-६५
२४-६९
२७-१०६८
२१-१०
२७-१३२८
२७-१२३४
२७-१३०९
२७-१७२८
२७-१३९९

तो उद्धरंति गारव०
" उद्धरंति गारवरहिया
" "
" जीवदयापरमं
" ते कयसोहीया
" तेऽवि पुव्वचरणा
" पढमे मासे करिसूणं
" परियागं च बलं
" सीलगुणसमग्गे
" सो नमंतसिरसं०
थावरस्स णं भंते ! केवति०
थिरजायं पि हु रक्खइ
थिररासिविलग्गेसु
थुइ चंदणमरिहंता
थेरस्स तवस्सियस्स
थोवा विमाणवासी
दक्खिणपुरत्थियमे-
२७-१६२
२७-१३४७
२७-१४६४
२७-३७९
२७-१३९८
२७-१४०६
२७-३३सू०
२७-१३६०
२७-१५७३
२७-३२२
२१-४४सू०
२७-४६५
२७-९०८
२७-१५
२७-७५३
२७-११४७
२५-४७

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रश्ना० २२
॥ ४५ ॥

दग्गपिण्णली य दग्गी
दट्ठणवि अण्णसुहं
दट्ठचारित्तं मोत्तु
दट्ठमूलमहाणंमिषि
दण्णभद्दासणं
दग्वाण सव्वभात्ता
दग्गेहिं पल्लवेहि य
दसगस्स उवक्खेवो
दसदोसविण्णमुक्कं
"
दसवाससहस्साइ
"
दंइत्ति विस्सुअजसो
दंइत्ति य अणगारो
दंतमलक्कणगूहं
दंतमुसलेत्तु गहणं
दंतवि अक्कज्जकरा

२२-४२
२७-१८७६
२७-८०३
२७-१३८३
२५-८०
२२-१२८
२७-१४४१
२७-४८९
२७-१६५
२७-१४६७
२७-१००७
२७-११५५
२७-६४७
२७-१७००
२७-५३९
२७-५५२
२७-५५४

दंसणनाणचरित्तं
दंसणनाणचरित्ते
"
"
दंसणभट्ठो दंसणभट्टस्स
" भट्ठो न हु
दंसणयारं कुणई
दंसणयारविसोही
दाडिमपुण्णगारा
दाडिदुक्खवेयणं
दारुणदुहजलयरं
दाहिणकुच्छो पुरिस्सस्स
दिक्खं मइलेमाणा
दिवसतिही नक्खत्ता
दिवसाओ तिहिवल्लिओ
दिवसा राइ बुत्ता य
दिव्वमाणुसत्तेरच्चे

२७-२७०
२२-१२९
२७-१२८३
२७-१५५२
२७-३४१
२७-३४०
२७-८४१
२७-३
२७-५०९
२७-१८८७
२७-२९९
२७-४६३
२७-१३१२
२७-८४८
२७-९२५
२४-१४
२७-८७९

दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा
दिसाणुवाएणं सव्वं
दिसिगइंदियकाण
दिति य सि उवएसं
दीवदिसाअग्गीणं
" उदहीणं
"
दीवसमुदा णं भंते ! किं
दीवसिहासरिसवणित्थं
दीवाभिग्गहधारी
दीवोदहिरणेत्तु य
दीहं वा हस्सं वा
" " "
" " "
" " "
दुओणयं अहाजायं
दुक्खक्खयक्कम्मक्खय
दुग्गो भवकंतारे

२२-५५सू०
२२-५६सू०
२२-१८०
२७-१५९९
२७-९९७
२७-९५४
२२-१४०
२१-१९१सू०
२७-११७३
२७-१६७६
२७-१७८४
२७-१२११
१९-१२
२२-१६१
२७-१२४१
२७-४१४
२७-१८६७

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ ४५ ॥

औ० १२
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ४६ ॥

दुण्हं आयरियाणं
दुण्हं पि रत्तलुक्काण
दुण्यसिणं नं भंते !
दुण्यणिहिणं य मिहिऊण
दुमखंधे वाहरंतैसु
दुविहम्मि अहक्खाण
दूरत्थं पि विणासं
दुरज्झिअपत्ताइसु
देवत्ते मणुअत्ते
देवत्ते माणुस्से
देवाइ० पोराणमेयं
देवाणं किं सदेवीया
" केवइयं ठिई
देवाणंदा निरई
" निरत्ती
देवावि देवलोण
देविंदचक्कवट्ठित्ताणं

२७-१५६४
२७-४७०
२२-१५८सू०
२७-१२६६
२७-९०५
२७-१२५८
२७-१६०४
२७-७६६
२७-६८२
२७-१६१७
२०-९सू०
२२-३२४सू०
२२-९५सू०
२५-९६॥
२४-२२॥
२७-६१३
२७-१९५

देविंदचक्कवट्ठित्ताणं
" देवे णं भंते ! महिद्धीण
देवो नेहेण णण
देसं खित्तं तु जाणित्ता
देसिक्कदेसविरओ
देहो पिपीलियाहिवि
दो अच्छिअट्ठियाइं
" उदहिकुमारिंददा
" कोसे अ गहाणं
" चंदा इह दीवे
" " "
" " "
" " "
" " दो सूरा
" " "
" " "
" " चेव जंबुद्वि
" " चेव० नव य सया

२७-५८३
२७-१४८७
२१-१९३सू०
२७ १७७१
२७ ७२३
२७-६४
२७-१६६४
२७-५५७
२७-९४५
२५-१२५
२१-७४
२४-७९
२७-१०७७
२४-३१
२७-१०३७
२७-९७४
२७-१०४०

दो चवेव सतसहस्सा
दोण्हं च पंच चत्तारि
दो दो जंबुद्वि
" नालिया मुहुत्तो
दोन्नि अहोरत्त०
" सण छावहु
दो मासे संपुणे
" वाउकुमारिंददा
" विज्जुकुमारिंददा
दोससयगागरीणं
दो सागरोवमाइ
दोसुत्थ अप्पमाणे
दो सुयणु ! सुवोर्णेणदा
" " "
" हत्था दो पाया
धणिट्ठा सयमिसा साई
धण्णा कलत्तनियलेहिं

२४-३५
२६-१
२१-७५
२७-५०८
२७-४५१
२७ १०२८
२७-१६९८
२७-९४६
२७-९४७
२७-५७०
२७-११०३
२७-१५८३
२७-९४४
२७-९५१
२७-५६४
२७-८८४
२७-१८६१

सूर्य० २३
चंद्र० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ ४६ ॥

औ० १०
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ४७ ॥

धृष्णा(उ)करोति तत्रं २७-१८६२
धृष्णा सत्तहियांद्रं २७-१८६०
धक्कोऽहं जेण मण २७-४४०
धम्मथिकागणं पुच्छा २२-२५३सू०
धम्मं जिणपन्नत्तं २७-२३९
धम्मंतरायभीण २७-८०७
धम्मगसुसीलजुयलं २७-१७११
धम्माणं च अहिंसा २७-५९३
धम्माधम्मागासं २७-१२५३
धम्मणे विणा जिण० २७-१८३६
धम्मो ताणं धम्मो सरणं २७-५८०
" न कओ साहू २७-१३१०
धरणियलाउ समाओ २७-१०११
धरणोवि नागराया २७-९८२
यातइसंज्जप्यमितिचु २४-८०
धानइमंज्जपरिरओ २४-३७
धायइमंज्जं गं दीयं कालोत्रे २१-१७६सू०

धायइसंज्जप्यमिइं २१-७६
" २७-१०७९
धिइवलविअलाण० २७-२८७
धिद्धो अहो अकज्जं २७-१४३६
धिधी (धी धी)मोहो जेणिह २७-१८४८
धीधणिअवद्धकच्छा २७-१७८३
" २७-६९७
धीधणिअवद्धकच्छो २७-६५०
धीर ! पडागाहरणं २७-२६६
" २७-१५४८
धीरपुरिसपणत्तं २७-२१७
" २७-६७९
" २७-१५०९
" २७-१७८१
धीरपुरिसपणत्ते २७-२६५
धीरपुरिसपन्नत्तं २७-१५४७
धीरपुरिस्सेहिं कहियं २७-१२७
धीरेणवि मरियव्वं

धीरेणवि मरियव्वं २७-२७४
" २७-१५५६
धीरो चिलाइपुत्तो २७-१६६५
" जरमरणविऊ २७-१३३
धी संसारो जहियं २७-१८३४
धुरण षमुहे वियडे २४-९३
धोइंति कंठिआओ २७-८३३
नइवेगसमं चवलं २७-५२८
नउई नमइ सरीरं २७-४९१
नक्खत्ततारगाणं २१-६२
" तारयाणं २७-१०६५
नक्खत्तमिगसहस्सं २७-१०४३
न चयंति किंचि काउं २७-१४०५
नत्थि किर सो पणसो २७-१७२
" " २७-१४७३
" भयं मरणसमं २७-६८५
" " २७-१६३६

॥ ४७ ॥

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

नत्थि य ते संघयणं
" इहं संसारे
न निमित्ता विघज्जन्ति
नपुंसपसु सउणेसु
नपुंसकनिमित्तेसु
नभिज्जण महाइसयं
" महावीरं
नमुत्थु धुयपावाणं
नयणोदगंपि तासि
न य मणसा चित्तिज्जा
नरएसु अणुत्तरेसु अ
" वेयणाओ
" "
नरगतिरिक्खगईसु
नरयगइगमणरोहं
नरविबुहेसरसुक्खं
न लहइ जहा लिहंतो

२७-१६०७
२७-१८४०
२७-१९५
२७-१०३
२७-१९९
२७-२७६
२७-१९०
२७-८०
२७-१६३५
२७-१५५०
२७-१५३९
२७-६८१
२७-१६१६
२७-१६१५
२७-४७
२७-२८०
२७-४१७

नवयंभवेरगुत्तो
नवमी मुम्मुही नाम
नवमे वसंतमासे
नवमो अ आणइंदो
नवि अत्थि माणुसाणं
" "
नवि कारणं तणमओ
" "
" "
" " जाई कुलं वावि
" तं करेइ अग्गी
" " कुणइ अमित्तो
" " विसं च सत्थं
" " सत्थं च विसं
" " " "
" माया नवि य पिया
न हु तम्मि देसकाले

२७-६२९
२७-४८७
२४-२४
२७-१०९३
२२-१२२२
२२-१७१
२७-२२९
२७-६३९
२७-१५२२
२७-४९५
२७-३३६
२७-१४३३
२७-१४६२
२७-१६०
२७-१३४५
२७-१८८१
२७-१२१

न हु तेसुं वयणं खलु
" " मरणंमि उवग्गे
" " "
" " सका नासेउं
" " सा पुणरुत्तविही
" " सिल्लई ससल्लो
नंदमाणो चरे धम्मं
नंदो भद्दा विजया
नंदे जए य पुन्न
नाउमिह अमावासं २५ (पु० ५०७टी०)
नागकुमारिदाणं
नाणमयवायसहिओ
नाणसहिं चरित्तं
नाणस्स कैवलीणं
" दंसणस्स य
नाणंमि दंसणंमि अ
" " य

२७-१६००
२७-२३५
२७-१५२८
२७-१३७६
२७-१४४४
२७-१५७
२७-४९४
२७-८५५
२७-८५६
२७-५०७टी०)
२७-९५०
२७-१८६३
२७-१३७३
२७-१२९७
२७-१२९
२७-७२९
२७-९६

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्र० २२
॥ ४९ ॥

नाणंमि दंसणंमि य
नाणं मुसिक्खियच्चं
नाणंईआ उ गुण
नाणाविधसंठाणा
नणाविहदुक्खेहि य
नाणे असगउताओ
" आउत्ताणं
नाणेण य आणेण य
" चज्जणिज्ज
" विणा करण
" सच्चभावा
नामेण चंडवेगो
नारयतिरियगईण
निअदव्वमपुव्वजिणिदं
निक्कमायस्स दंतस्स
निक्खममाणे सिग्घगर
नित्थिला फासेयव्वा

२७-१२२०
२७-१३७४
२७-३
२१-२
२७-१५४१
२७-१७३७
२७-१३७१
२७-१८५६
२७-१३७२
२७-१३८२
२७-१३७५
२७-६६४
२७-६८०
२७-३०६
२७-१३१
२४-१०
२७-१४२३

निगोदा णं भंते ! दव्वट्टयाण २१-२४०सू०
निगगहियकसाएहिं २७-१८५६
निच्चलनिप्पडिकम्मो २७-१७६१
निच्चं तिदंडविरया २७-१२६१
निच्चपि तस्स भाउज्जुअस्स २७-६४०
निच्छिअमरणावत्थो २७-२८९
निच्छिणसव्वदुक्खा २२-२३१
निच्छिन्नसव्वदुक्खा २२-१७९
२७-१२२९
" २७-४४८
निज्जरियजरामरणं २७-७५१
निट्ठविअ अट्टमयथाणे २७-४४
निदलिअकलुसकम्मो २७-५७५
निद्धन्नयं च खलयं २७-४३२
निद्धं महुं पल्हा० २७-१६६०
निग्गेडियाणि दुण्णिञ्चि २७-१८२८
निच्चत्थणावमाण० २७-९२०
निमिसे त्तिस्सिमे नत्थि

निमिसेसु पसत्येसु २७-९२१
निमिसेसु० सव्वकज्जाणि २७-९२३
निम्ममनिरहंकारा २७-६४६
निम्ममनिरहंकारो २७-१५७७
" २७-१७११
निम्मलद्वारयवण्णा २७-१२०२
निरयगईणं केवइयं कालं २२-१२२सू०
निरयावलिया सुयखंधो २६-३१सू०
निव्वाणसुहावाए २७-३३२
निसग्गुवरसहई २२-१२०
निसहे माअनिवहवहे २६-५॥
निसरित्ता अप्पणं २७-१५८८
निससल्लस्सेह महव्वयाइ २७-४१०
निससंकि य निक्कंखिय २२-१३३
निससंधिणातणंमि व २७-१५८२
निहण हण निह दह० २७-१३२९
निंदामि निंदणिज्जं २७-९४

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
लि० २६
प्रकी० २७

औ० १२
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ५० ॥

निंदासि निंदणिज्जं २७-१४१
नीअंगमाहिं सुपओहराहिं २७-३९१
नीलवंतहहस्स णं पुरत्थि० २१-१५१सू०
नीलाणुरागवसणा २२-१४९
नेरइए णं० जाइं० २२-१७१सू०
" नेरइएसु २२-२२२सू०
" नेरइएहिंतो २२-२५९सू०
नेरइयअंतकिरिया २२-२१३
नेरइयतिरियमणुया २२-२२१
नेरइयदेवतित्थंकरा २७-११६७
नेरइया णं० अणंतरं उव्व० २२-१३८सू०
" अणंतराहारा २२-३२२सू०
नेरइया णं० आहारे किं २२-३२३सू०
" एग० कै २२-१२८सू०
" एगसमएणं २२-१२७सू०
" ओहिस्स किं २२-३२१सू०
" ओही किंसंठिए २२-३२०सू०

नेरइया णं० कइ इंदिया २२-१९३सू०
" कइ लेसाओ २२-२१५सू०
" कति भागाव० २२-१४४सू०
" कतो उ० २२-१२९सू०
" किं अणंतरा० २२-२५७सू०
" आहारस० २२-१४८सू०
" एगिंदियस० २२-३०८सू०
" ओयाहारा २२-३०९सू०
" सचित्ता० २२-३०४सू०
" संतरं उव० २१-१२६सू०
" संतरं २२-१२५सू०
" सिता जोणी २२-१५०सू०
" केवइयं खेत्तं २२-३१९सू०
" केवइया पज्जवा २२-१०४सू०
" केवतिकालस्स २२-१४६सू०
" केवतिया २२-१७८सू०
" कै० वेदणंसिमु० २२-३३५सू०

नेरइया णं० नेरइयत्ते के० २२-३३९सू०
" णं भंते ! केवइयं० २२-९४३सू०
" " केवतियं २१-२२३सू०
" णं० सव्वे रामकम्मा २२-२०७सू०
नेरइयाणुप्पाओ २१-२०
नेर० कतोहिंतो उव० २२-१२९सू०
नेसण्वे पंडुअए २५-२८
नेहक्खेवे दीवो २७-१५७९
पउमलया णागलया २२-२९
पउमा पउमण्णमा चेव २५-४९
पउमुत्तरे णीलवंते २५-६५
पउमुण्णलनलिणाणं २२-९०
पउमुण्णल संघाडे २२-१०९
पउमुण्णलिणीकंदे २२-८८
पक्कमंतेसु सउणेसु २७-९०७
पच्चक्खाइ य ताहे २७-१५७५
पच्चक्खावित्तिं तओ तं २७-३२०

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ ५० ॥

औ० १०
श० २०
जी० २१
प्र० २२
॥ ५१ ॥

पच्छायावपरद्धो	२७-२९०	पढममि य संघयणे	२७-१७६८	पण्णावीसं जोअणसयाइं	२७-११८४
पच्छावि ते पयाया	२७-६३८	पढमं अट्टारसगं	२७-१३२३	पण्णासंगुलदीहो	२५-१८
पजलंति जत्थ धगधग०	२७-७५९	" अणिच्चभावं	२७-१८०७	पत्तउरसी य उरए	२२-२३
पजत्तए गं पुच्छा	२२-२४९सू०	" वट्टविमाणं	२७-११३९	पत्तं विचित्तविरसं	२७-१७९९
पजलियं हुयवहं	२७-७५८	पढमा गं भंते ! पुढवी किंनामा		पत्ता उत्तमपुरिसा	२७-६०५
पडिणीययाइ कोस	२७-१७१७	किंगोत्ता	२१-६८सू०	पत्ताणि दुहसयाइं	२७-१४५४
पडिचन्नसाहुसरणो	२७ ४१	पढमित्थ नीलवंतो	२५-४६	पत्तेण अपत्तेण य	२७-४३
पडिपिहिअ कामकाले	२७-३८९	पढमिल्लुगंमि दिवसे	२७-६३२	पत्तेय विमाणानं	२७-११४८
" पडिणीया	२७-२७	पढमीपंचमि दसमी	२७-८५४	पत्तेयं पत्तेयं नियगं	२७-१८२१
पडि(णिय)मायगओ अ मुणो	२७-१७०२	पढमो तइओ नचमो	२२-१८६	पत्तेया पजत्ता	२२-१०६
पडिमासु सीहनिक्कीलियासु	२७-१२७५	पढमो तइओ सत्तमो	२२-१८७	पत्तेसुवि एएसुं	२७-१८६९
पडिचत्ताओ उदए	२४-२	" सोहम्मवई	२७-१०९१	पन्नरसइभागेण	२७-१०७३
" "	२४-६सू०	पणपण्णा य परेणं	२७-४६०	"	२१-७०
पट्टपन्नपुढवि० केवति० मिहेया	२१-१०३सू०	पणयालीसं आयामवि०	२७-१२०३	पन्नवणा ठाणाइं	२२-६
पढंनु साहुणो एअ	२७-८४५	पणनीसट्टारसवारसेव	२५-५१	पन्नासयस्स चक्खुं	२७-४९०
पढमणीसर ईसर	२५-२३	पण्णरसइभागेण य	२४-७४	पण्णोगडियकलिकल्लुसा	२७-११५१
		पण्णरस सतसहस्सा	२४-३३	पभू अन्नयरो इंदो	२७-९९२

परं णं चंद्वडिंसपरभोग० २१-२०४सू०
परमे सुपरमे महापरमे
परयइकुडिलमि कत्थइ
परयलीरुच्छुरसेसु
परमट्टो परमउलं
परमणगंयं मुणंता
परमत्थओ न तं अमयं
परमत्थओ विसं णो तं
परमत्थमि सुदिट्टे
परमत्थसंथवो जा
परम(पसम)सुहमपिवासो
परमाणुपोगलाणं० पज्जवा २२-१२०सू
परमाणुपोगले णं किं चरिमे २२-१५७सू
परमाणुमि तइयो २२-१८५
परिगरणिगरिमज्झो २२-१५
परिजाणइ तिगुत्तो २७-६७५
परिजाणे मिच्छत्तं २७-१४५६

परिणामजोगसुद्धा
" "
परिणामवन्नरसंगंथ०
परिणामविसुद्धोप सोहम्मे
परित्तणं पुच्छा
परिमंडलो मुहुत्तो
परिवड्ढिओवहाणो
परिहर असच्चवयणं
" छजीववहं
परिहरसु तओ तांसि
पलंडुल्लसुणकंदे य
पलिओवमट्ठिइया
पलिओवमट्ठभागो
पलिओवमं गहाणं
पवरसुकपाहिं पत्तं
पव्वज्जाई सव्वं
पव्वज्जाप अवमुज्जाओ

२७-१३९५
२७-१२६४
२२-२१०
२७-४४०
२२-२४८सू०
२७-८९६
२७-१४१९
२७-३७२
२७-३६४
२७-४०१
२२-८९
२५-४०
२७-१०८९
२७-१०८८
२७-४२
२७-१२४७
२७-२८३
पसत्थेसु० अपसत्थनिमित्तसु
पसमिअकामपमोहं
पहुणो सुकयाणात्ति
पंचगमहिंसीओ
पंच० नयरंमि कुंभकारे
पंचमपर पुण वंभो
पंचम भत्तपरिणा
पंचमहव्वयकलिओ
पंच महव्वयसुत्थिय
पंचमी उ दसं पत्तो
पंच य अणुव्वयाइ
पंच य महव्वयाइ
" "
पंचविहं जे रुद्धि
पंचविहं० पत्ता निखिलेण
पंचसमिप तिगुत्ते
पंच सया पगूणा

२७-९२४
२७-४६
२७-३०१
२७-२७३
२७-६४४
२७-१०९२
२७-१८९७
२७-६२६
२६-१२६२
२७-४८३
२७-६५
२७-२००
२७-१४९२
२७-१३०३
२७-१३०४
२७-१५६०
२७-६४५

ओ० १०
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ५३ ॥

पंच सयापरिबुडया २७-१७०३
पन्वेव इगुणपन्नं २५ (पू० ५०८डी०)
पंचेव धणुसयाहं २७-१०२७
पंचेवणुत्तराहं २७-११४९
पार्चदियतिरिक्ख० अणंतरं २२-१४१सू०
" कओहिंनो उव० २२-१३३सू०
" जोगि० केव० डिई २२-१८सू०
" पंवि०
उच्च० नेर० उच्च० २२ २६३सू०
पंचदियतिरिक्ख० पज्जवा २२-१०८सू०
पंचदियसंचरणं २७-२०३
" २७-१४९७
पंडक० अभिसेअसिलाओ २५-१०८सू०
पाओवममं भणिअं २७-१७६३
पागडियपासुलीयं २७-५६२
पागारपरिस्सित्ता २७-११४२
पाउलचंपयमहिय० २७-५६६

पाडल्लिउत्तंमि पुरे २७-६५६
पाडल्लिपुत्तंमि० विस्सु० २७-६५६
पाडिवय पडिवत्ती २७-८५०
पाढामियवालुंकि २२-५०
पाणातिपातविरणं गं० कम्मप० चं २२-२८७सू०
पाणातिवायविरयस्स गं० जी०
कि आगमिया किरिया कज्जति २२-२८८सू०
पाणिवत्तमुसावाण २७-६६
पाणोऽवि पाडिहेरं २७-३७१
पारिच्चायगभत्तो २७-१६३७
पालय पुक्के य सोमजसे २५-७८
पावहं इहेव वसणं २७-३३७
पावाणं० कम्मणं २७-१५१३
पावाणं पावाणं २७-२२२
पानियपरमाणंदं २७-२८

पासित्तु ताहं कोहं २७-३१३
पिउभगअज्जमसविआ २२-१३१
पिच्छसि वाहिरमट्ठं २७-५४४
पिच्छसि मुहं सतिलयं २७-५४३
पित्तस्स य सिंभस्स य २७-४७५
पित्ताय भूआ जक्खा य २७-९९५
पिंडं उवहिं च सिज्जं २७-७३०
पीईकरो वण्णकरो २७-५८१
पीयं थणअच्छोरं २७-१६३४
" " २७-१७०
" " २७-१४७२
पुक्खवरणं दीवं पु० वट्टे २१-१८१सू०
पुट्ठाहं सद्धाहं सुणेति २२-१९४सू०
पुट्ठोगाढअणंतरं २२-१९८
पुट्ठविकाइणं भंते ! पुट्ठं २१-२२९सू०
पुट्ठदिमाइयस्स गं भंते ! केवतियं
काल डिती २१-२२८सू०

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
मि० २६
प्रकी० २७

॥ ५३ ॥

पुढविकाइयां आहारकम्म २२-२१०सू०
पुढविकाइयाणं अणंतरं २२-१४०सू०
" आहारद्वी २२-३०६सू०
" केवइया २२-१८०सू०
" केवइया २२-१०६सू०
" केवइयं २२-९६सू०
पुढविदगअगणिमारुअं २७-७८४
" २७-१७६९
पुढविदगाणं च रसं २४-२८
" २५-८८
पुढवीं ओगात्ता २१-९
" २१-९५सू०
पुढवीकाइयं णं भंते २२-२६१सू०
पुढी य सक्का चालुया २२-१०
पुणवस्सणा पुस्सेण २७-८७०
पुणाइं चालु आउसो २७-१४
पुणा य इक्कीसा २७-११०६

पुणेहिं हायमागेहिं २७-४१६
पुण्णोवि जंजुदीवं २७-९८४
पुत्तं जीवयस्सिद्धि २२-१६
पुत्ता चयंति मित्ता २७-५७९
" मित्ता य पिया २७-१८१७
पुत्तामधिजसउणेसु २७-९०२
पुप्फा जलया थलया २२-८६
पुप्फाणं बीआणं तयं २७-७९०
पुरओ वहंति सीहा २७-१०२१
पुर(कुह) मंदरमावासा २१-३३॥
पुरिसवरपुंडरीओ २७-५९०
पुरिसवेदस्स णं भंते ! कं २१-१८सू०
केवतियं बंधं २१-१८सू०
पुरिसस्स णं भंते० का० अत० २१-१६सू०
पुरिसस्स णं भंते ! कालं ठिती २१-५४सू०
पुरिसे णं भंते ! पुरिसेत्ति २१-५५सू०
पुव्वभवियवेरणं २७-१७६४

पुव्वमकारियजोगा २७-१४००
पुव्वमकारियजोगो २७-२१९
" २७-१५११
" २७-१२९२
पुव्वविराहियवंतरं २७-१६९७
पुव्वंगे सिद्धमणोरमे २४-१९
" २५-९३
पुव्वाचरदाहिणं २७-१७६७
पुव्वि० अनियाणो ईहिऊण २७-२२१
पुव्वि कयपरिकम्मो २७-११५
" कारियजोगो २७-१५१२
" २७-२२०
" कारिय० ताहे मलि० २७-१५१३
पुव्वेण होइ विजयं २७-१११३
पुस्सस्सिणिमिगसिररेवई २७-८५७
पुस्सायणे अ अरसायणे २५-१०५
पुस्सो हत्थो अभिई २७-८७४

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ५५ ॥

पुस्तके हृत्यो अभिर्ह य
पूइयकाय य इहं
पूइयर्निवकरजे
पूइयसीसकवालं
पूइयसुविहियदेहो
पूसफलं कालिंगं
पूसफली कालिगी
पोराणगं च कम्मं
पोराणयं " "
पोराणिअपञ्चुप्पनिआ०
फासिदिण्ण दुडो
फासेहिंति चरित्तं
फुसइ अणंते सिद्धं
" " "
" " "
वज्जं अभित्तं
मत्तीसअट्टीमा

२७-८६७
२७-५५३
२२-१७
२७-५४५
२७-१७०८
२२-९४
२२-३०
२७-२६३
२७-१५४६
२७-७००
२७-४२१
२७-१२८०
२७-१२१८
२२-१६८
१९-१८
२७-८२
०२-१५५

यत्तीसट्टीसीसा
यत्तीसमंडिआहिं
वत्तीसं चंदसतं
" चंदसयं
" "
" देविदत्ति
" देविदा जस्स
वम्हा विण्हू अ वसू
" " "
ववं वालवं च तह
ववे उवट्टावणं कुज्जा
ववे य वालवे चेव
वलवीरियरूवजोव्वण
वलि भूयाणदे वेणुदालि
वहिता तु माणुसनगस्स
वहिया उ
" "
वहियाओ

२५-७७
२७-२६१
२४-५३
२७-१०५२
२१-४९
२७-९३५
२७-९३४
२५-१३०
२५-१७४
२७-८८७
२७-८९१
२७-८९०
२७-१८१२
२२-१४५
२४-८२
२७-१०८१
२१-८३

वहुजुणे णं भंते ! अण्ण०
वहुटुक्खपीलिआणं
वहुपलियसागराहं
वहुसो अणुभूयाहं
वहुभयकरदोसाणं
वहुसो उच्छोलिती
वहुसोवि मए रुणं
वंधणपरिणामे णं० कत्तिविचे २२-१८५सू०
बंधपओसं हरिसं
बंधं मुक्खं गइरागयं
वंमे लंतयकण्ये
वंमे वलए वाउम्मि
वातालीसं चंवा
वायरस्स णं० कालं विती २१-२३५सू०
वायालीसं चंदा
" "
वायरे णं भंते ! वायरेत्ति २१-२३६सू०

१९-४०सू०
२७-१८४१
२७-१६४४
२७-१८३५
२७-१४३८
२७-८३१
२७-१७१
२७-१४४८
२७-१३७७
२७-११२९
२७-९०१
२४-४१
२७-१०४३
२१-३७

वारवई सोरठ्ठा २२-११५
वारस चउवीसाइं २२-१८२
वारस चैव मुहुत्ता २७-४५९
वारस मासा संवच्छरो २७-५१५
वारसवि भावणाओ २७-१८७३
वारसविहम्मिवि तवे २७-१३६३
वालमरणणि बहुसो २७-१०७
वालमरणे अवार्य २७-१५९२
वालाए बुहाए नत्तुय २७-७९३
वाला किहु मंदा २७-४७८
वालाणं जो उ सीसाणं २७-७२५
वावट्टि वावट्टि २१-६९
" २४-७३
वावत्तरं सयं २५-(पृ० ५०८टी०)
वावत्तरिकलापडिया उ २७-११७६
वावत्तर च चंदा २४-५०
" २१-४६

वावत्तरि च चंदा २७-१०४९
वावीसमाणुपुड्वि २७-१७५९
वावीसं च मुहुत्ता २५ (पृ० ५०७टी०)
वावीसं जोयणसयाइं २७-११९३
वावीस सयसहस्सा २१-३६
वाहंति इंदियाइं २७-१४०२
वाहिरजोगविरहिओ २७-११८
वाहिरचंभंतर उवहिं २७-१३७
वाहंति इंदियाइं २७-२१८
वाहेइ इंदियाइं २७-१५१०
विचउत्थ० एते वज्जिय भंगा २२-१९०
विचकत्थपंचच्छुं० वीसेक्कीस २२-८८
विचउत्थ० वावीसइमविहणा २२-१८९
विसरीरविलग्गेसु २७-९०९
विलमूले वाहरंतेसु २२-९०६
विटसमं सकडाहं २२-९५
विटं वाहिरपत्ता य २२-९१

बीअवणं सारुवि० २७-७८९
वीण जोणिम्मूण २२-९७
वीण विणा सस्सं २७-३४९
वीयाए किहुया नामं २७-४८०
वेइंदिय पं० उच्च० नेर० उच्च० ?
वेइंदिया पं० आहारट्टी ? २२-२६२सू०
" " केवइयं० टिइ २२-९७सू०
" " जीवा पाणा० वंधंति ?
वेइंदिया पं० पुच्छा २२-२९७सू०
" तेइंदिया चउ० जहा० २२-१३२सू०
वे उदधिसहस्सा खलु २१-९०
भगवांपे वहरसामी २७-१७०८
भट्टायारो सूरी २७-७३७
भणइ य तिविहा भणिया २७-१२५०
भण केरिसस्स भणिओ २७-६१७

औ० १०.
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ५७ ॥

भक्तपरिभ्रमरणं दुविहं २७-२८५
भक्तिं च कुणसु तिव्वं २७-३२९
भदं सुवहुसुयाणं २७-१३७८
भयवं केहिं लिंगेहिं २७-७१८
भरहस्स चत्तारि एमिदि० २५-६९सू०
भरहे अ इत्थ देवे महिद्दीए २५-७२सू०
भवगहणभमणीणा २७-२७७
भवण० इसिवालिय० २७-१२३२
भवण० कप्पवईणवि २७-११२७
भवणवई दो इंदा २७-९४३
भवणवइविमाणवईणं २७-९७१
भवणवइवाणमंतर २७-१०९०
" " २७-११२२
भवण० सव्विणी परिय० २७-१२३१
भवणेहिं व वणेहि य २७-१८११
भवमयसहस्सडुल्लहे २७-१४४०
भवसंसारे सव्वे २७-१८४

भवसिद्धिए णं पुच्छा २२-२५२सू०
भंजिय परीसहचमूं २७-६१०
भंतेत्ति० काले णं भंते कुमारे २६-८सू०
" दिव्वा देविद्धी० कहिं० २०-२६सू०
भालुक्कीए करणं २७-४३५
भावनमुक्कारविवज्जिआइं २७-३५४
भावाणुरायपेमाणुराय० २७-३३९
भाविज्ज भावणाओ २७-१८७४
भासएणं पुच्छा २२-२४७सू०
भासगपरित्तपज्जत्त २२-१८१
" २२-२१२
भासाकओ य पभवति २२-१९२
भासा णं भंते किमादीआ ४ २२-१६५सू०
भासासरीरपरिणाम २२-७
भासुरसुवन्नंसुंदर २७-४८
भिक्खाचरणत्ताणं २७-८७७
भणिभणिभणंतसइं २७-५६१

भिन्नसुहुत्तो नरएसु २१-१५
भिन्निदियपंचिदिय २७-१६१८
भिगा भिगप्पभा चेव २५-५०
मुत्तूणवि भोगसुहं २७-१६२७
मुयगपुरोहियडक्को २७-१७४७
भूईगहणं जह नक्कयाण २७-५८९
भूए अत्थि भविस्सति २७-७४५
भूयत्थेणाहिगया २२-१२१
भेदविसय संठाणे २२-२२३
भोगंकरा भोगवई २५-७०
भोगाणं परिसंखा २७-६८
भोमेल्लवणयराणं २७-१२३५
मउए निहुअसहावे २७-७८२
मए कयं इमं कम्मं २७-२५७
मगतिणिहआहि तोअं २७-३३५
मज्झंमि वंधवाणं २७-१८१९
मज्झे वेअहुस्स उ २५-२

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ ५७ ॥

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ५८ ॥

सूय० २३
च० २४
ज० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ ५८ ॥

मणवयणकायजोगा	२७-१८५८	मम मंगलमरिहंता	२७-२४७	महुरा जियसत्तुसुओ	२७-१७३३
मणसा अचित्तिज्जं	२७-२४३	मरणम्मि जस्स मुक्कं	२७-१६७३	महुरा य सूरसेणा	२२-११७
मणसा मणसच्चव्ज	२७-२०६	मरण समाहीकुसले	२७-१५६१	मंखलिणावि य अरहओ	२७-६७४
"	२७-१४९९	मरणे विराहिय	२७-१००	मंताभिओगं कोउग	२७-१२९८
मणसावि अचित्तिज्जं	२७-१५३३	मसपहिं मच्छियाहि य	२७-१६५३	मंदणुभावा बद्धा	२७-६०
मणिकणगरयणथूमिथ	२७-१००६	महया भडचडगरपहं	२७-१८१५	मंदरमेरुमणोरम	२५-६६
मणुअत्तं ज्ञिणवयणं	२७-२७८	महानिसीहकप्पाओ	२७-८४४	मंदरस्स णं० प० कइ कंडा	२५-१०९सू०
मणुयत्तं वि बहुविहं	२७-१६३२	महा भरणिपुब्बाणि	२७-८८०	" " " कति णाम०	२५-११०सू०
मणुस्साणं० अणंतं	२२-१४२सू०	महाहिमवंतस्स णं बहु भाए०	२५-८१सू०	" " " केव०जोइसं	२५-१६६सू०
" कओहितो उव०	२२-१३४सू०	महापउमद्वहे०	२५-८१सू०	मंसट्टियसंघाय	२७-१८४३
" केवइयं० डिई	२२-१९९सू०	महाहिमजंते णं वास० कइ०	२५-८२सू०	माऊए दुहिआए सुण्हाए	२७-८४०
" केवइया पज्जवा	२२-१०९सू०	महिला कुलं सुवंसं पियं	२७-३९०	मा कासि तं पमायं	२७-३३८
" सव्वे समाहारा०	२२-२११सू०	महिलापसंगसेवी न लहइ	२७-४१८	मा कुणसु धीर! बुद्धि	२७-३७७
मत्तगइंदनिवाडिय	२७-१७९३	महिलासंसग्गीए	२७-४०२	माणुसुत्तरे पव्वते केव०उड्डं?	२१-१७९सू०
ममत्तं परिजाणामि	२७-१४३	महुरविरेअणमेसो	२७-३१७	माणुस्सदेसकुलकाल०	२७-१८६८
" परिवज्जामि	२७-८६	महुराइ महुरखमओ	२७-१७२९	माणुस्सयं सरीरं	२७-५३१
सम मंगलमरिहंता	२७-१५३६	महुराइइंददत्तो	२७-१७३६	माणुस्सं च अणिच्चं	१९-२

मायापिद्वयं धुहि २७-१७६
" बंधुहि २७-१४७७
मायापिद्विहि सहवद्विहि २७-१८१०
माया मिति पिया मे २७-१४७६
माया मिति पिया मे २७-१७५
माऽऽया हु व चित्तिजा २७-२६८
मारणं तियसमुग्रातो मद्रुणे २२-३३८ सू०
मान्यपणिमुग्यपणी २५-५१
मासाणं परिणामा २५-११९
मासे मासे उ जा अजा २७-८४३
माहिदे साहियाई सत्त दम २७-११०४
मा हु य सरीरसंता० २७-१६४१
मा होइ वामगण्या २७-६३७
मिगसिर अदा पुस्तो २७-८६९
मिगसिर महा य मूलो २७-८५८
मिगसीमानलिरुहिरचिदु २५-१०९
मिच्छत्तनमंघ्रेण २७-५१

मिच्छत्तं परिजाणामि
मिच्छादंसणरत्ता
मिच्छादंसणसहं
मित्तसुयबंधवाइसु
मित्ते नंदे तह सुट्ठि
मिल्हियविसयकसाया
मिंदो किलिहुकम्मो
मोग्गहायण संखायणे
मुग्गिह्छगिरिमि
मुणिचंदेण विदिणस्स
मुणिणं नाणाभिग्गह
मुदिय अवाचली
मुखरुक्ख हिंगुरुक्खे
मुहवाससुरहिगंधं
मूलगुण उत्तरगुणा
मूलगुणे उत्तरगुणे
" "

२७-१५२
२७-१०३
२७-१३३१
२७-१६४२
२७-८९९
२७-३७
२७-३५३
२५-१०४
२७-४३६
२७-१७२३
२७-७८३
२२-३३
२२-४०
२७-५६७
२७-१४५२
२७-१४५
२७-९१

मूलगुणेहि विमुक्कं
मूलं तह संजमो वा
मूलंमि जोअणसयं
" तिणिण सोले
मूलुक्खयपडिवक्खा
मूलुत्तरगुणभट्टं
मेढी आलं वणं खंभं
मेदो वत्ता य रसिया
मेरुक्ख पव्वयाणं
मेरुस्स मल्लयारे
मेहंकरा मेहवई
रइअरइतरलजीहाजुएण
रक्खवाहि वंभचेरं
रत्तिं च पयइविहसिय
रत्तुक्कडा य इत्थी
रमणिज्जाहरयतरवर
रमणीअदंसणाओ

२७-७९६
२७-५९८
२५-४४
२५-४५
२७-२६
२७-७२०
२७-७१७
२७-५४९
२७-६१६
२५-८४
२५-७१
२७-३८४
२७-३८२
२७-१६५४
२७-४६२
२७-१६९०
२७-३९४

औ० १०
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ६० ॥

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ ६० ॥

रमणीण दंसणं चेव	२७-३९६	राइंदिण तीसं तु	२७-५२१	रायसिगिमुवक्कमिस्ता	२७-१४
रयण० के० विरहिया उव्वट्ट०	२२-१२४सू०	रागहोससियत्तो	२७-१७४९	राहुकेउविलगोसु	२७-११३
रयण० नेर० के० उव्वाएणं	२२-१२३सू०	रागहोसपमत्तो	२७-१८४७	रिक्खलगहत्तारग्गा	२७-१०८०
रयणप्पमाइकुडिनि	२७-९४२	रागहोसाभिहया	२७-१२८६	"	२१-७७
रयण० पु० नेर० णं० चक्क०	२२-२६५सू०	रागहोसारीणं हंता	२७-१३	"	२४-८१
" " " रयण०	२२-२६४सू०	रागवंधं पओसं	२७-१३८	रक्खवा गुच्छा गुम्मा	२२-१४
रयणाइं सव्वरयणे	२५-३२	रागस्स य दोसस्स य	२७-१८५०	"	२१-१
रयणिकर० णक्खत्ताणं	२४-६८	रागं वंधं पओसं	२७-८५	रुहे सेए मित्ते	२५-९७
रयणिकरदिणकराणं	२४-६७	रागेण गंगदत्तो	२७-४१२	रुहो उ मुहुत्ताणं	२७-८९४
रयणियर० चारविसेसेण	२७-१०६७	" न जाणंति य	२७-५३६	रुरु कुंडरिया जीरु	२२-४८
रयणियरदिणयरारणं	२१-६४	" व दोसेण व	२७-१४७१	रूविअ० जात्र पज्जावा कइ०	२२-११९सू०
" "	२७-१०६६	" " "	२७-९७	रोगायंकेसु पुणो	२७-१६४३
" "	२१-६३	" " "	२७-१४४९	रोहे सेते मित्ते	२४-१६
(२)विभोमंकोण (ड)दिवसे	२७-८९३	" " "	२७-१६९	रोसेणं पडिनिवसेणं	२७-१३९
रविससिगहणक्खत्ता	२४-५८	" " "	२७-१३४८	रोहीडगंमि नयर	२७-६५४
रविससिगहनक्खत्ता	२१-५४	" " "	२२-११३	लज्जाइ गारवेण	२७-१५१९
"	२७-१०५६	रायणिह मगह चंपा	२७-१७२३	लज्जाइ गारवेण य	२७-१३३८

लजाङ्ग गारवेण य	२७-२२७	लात्तिअलउसिअदमिली	२५-१०	वहोवहो मुहुत्ताण	२४-६
लहं अलद्धपुञ्चं	२७-१२६	लीलाअलसमाणस्स	२७-७१३	" "	२४-४सू०
" तु तण पव्वं	२७-५९५	लेसाण सुक्कलेसा -	२७-५९९	वण्णेहि य गंधेहि य	२७-१३४२
लद्धुणत्वे माणुस्सं	२७-१८८५	लेत्ता विट्ठी नाणे	२१-१२	वत्तुलसरिसवरूवा	२७-११७८
लद्धकनिरयविअणाओ	२७-३८६	लोगविजयं करित्तेण	२७-७०७	वत्थाण य उण्णत्ती	२५-३३
लवणयमुहसामाणो	२७-१३८५	लोगसहावो धी धी	२७-१८३२	वण्णे सुवण्णे महावण्णे	२५-६३
लवणममुदं धायङ्ग संडे०	२१-१७५सू०	लोगागासपपसे निगोयजीवं	२२-१०४	वम्महसरसयविद्धो	२७-३८७
लवणसिहा णं केवतियं चक्क०		लोगागास परित्तजीवं	२२-१०५	वयछक्क कायछक्कं	२७-१३२०
केव० अङ्गं वहुति वा	२१-१५९सू०	लोसेण अहव धत्थो	२७-१८५०	वयणामएण भुवणं	२७-२०
लवणस्स णं के महालय २१-१७२सू०		लोहस्स य उण्णत्ती	२५-३५	वयं पुण० सूरिए सव्वम्भं तरं	२४-१७सू०
लवणस्स० केरिसण अस्साण २१-१८८सू०		लोहियहालिहा पुण	२७-११८६	वरपउमकण्णियामं हियाहिं	२७-९६३
लवणे कतिगुत्तो० वहुति वा २१-१५८सू०		वइराड वच्छ वरणा	२२-११६	वरपउमगम्भगोरा	२७-११५२
लवणे णं कति चंदा २१-१५६सू०		वच्चाओ असुइतरे	२७-५६३	वरणोदस्स णं जहानामए	२१-१८८सू०
लवणे णं किं उसितोदगे २१-१७०सू०		वच्छे सुवच्छे महावच्छे	२५-५७	वलयामुहसामाणो	२७-१९१
लवणे " संडित्ते २१-१७३सू०		वज्जेह अण्णमत्ता	२७-७७२	वदगयजरमरणभये	२२-१
लवणे " केवतियं उव्वेहपरि० २१-१७१सू०		वट्ठं खु वलयगं पिव	२७-११३८	ववहारगणियट्ठिं	२७-५०३
लट्ठे ऊणं संसारे २७-१३०५		वट्ठं वट्ठस्सुवर्णि	२७-११३४०	वसिऊण देवलोए	२७-१६२४

औ० १०
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ६२ ॥

वसिष्ठा व सुहिमज्ज्ञे २७-१६१२
" वि जणमज्ज्ञे २७-१७८९
" विमाणेसु य २७-१६२३
" विचिन्तेसु अ २७-१६२६
" सुरनरीसर २७-१६२५
वसियं दरीसु वसियं २७-१६३३
वसुहर गुणहर जयहर २५-२१
वंसाणं जिणवंसो २७-५९२
वंसे वेच्छ कण २२-३६
वाङ्गणि सल्लशुडई २२-२१
वाउकुमारिदाणं २७-९५२
वाउसुवर्णिदाणं २७-९७८
वाण० सोहम्मीमाणा य जहा अत्तुर०
२२-१४३सू०
वाणमंतर० कओहिंतो उव० २२-१३५सू०
वाणमंतरा ओगाहणट्टयाए २२-११०सू०
वाणमंतरा० जहा असुरकु० २२-२१७सू०

वाणमं० जहा असुरकुमाराणं २२-२१२सू०
" णं० केवइयं० ठिई २२-१००सू०
वायगवरवंसाओ २२-३
वायमित्तेणवि जत्थ २७-७८०
वारुणवरणं समुहं खीर० २१-१८२सू०
वाससयं परमाडे २७-५२३
वासमयाउयमेयं २७-४६१
वाससयाउस्सेण २७-५२०
वाससहस्सं पल्लिओवमं २७-१०८७
वाससहस्सा संखा २१-८९
वासाणं० मासं कति णक्खत्ता २५-१६३सू०
वामारत्तंमि तवो २८-६४१
वाहिजरमरणप्रयगे २७-२०१
विग्गहग य रिद्धे २७-१७७८
विजउ पंचंगुलिओ २७-८९७
विजयस्स० उभओ० दो दो २१-१३१सू०

विजयस्स णं० उभओ० दो दो २१-१३२
" उवरिपागारा २१-१३४सू०
विजयं च वेजयंतं २७-१११२
विजया णं राय० चत्ता० २१-१३७सू०
विजया वेजयंति २५-९६
" वेजयंती २५-६४
विजया य विजयंता २४-२२
विजये णं अट्टसतचक्रय्याणं २१-१३३सू०
विज्जा जहा पिसायं २७-३५७
विज्जाणं धारणं कुज्जा २७-८७५
विज्जावि भत्तिमन्तरस २७-३४७
विणओवयार माणस्स २७-१३१८
विणपं वेयावच्चे २७-१३६३
विणओवयार ओवहम्मियाइ २७-९३९
विणयपणपहि लिहिल २७-९३३
विमले वितत विवत्थे २४-९५
विरसं आरसमाणो २७-१७९८

सूयं० २३
चं० २४
जं० २५
निं० २६
प्रकी० २७

॥ ६२ ॥

दिलगगओ निहि साओ २७-१२७
विवेह तु मानमल्लं २७-१३३२
विविहाहि न पडिमाहि २७-१४१६
विनण अवियन्तवता २७-४२४
विमन पवाल्लिणोपरि २५-८७
विमनं पवाल्लिणोपरि २४-२७
विनमा अज्जतुलाओ २७-४१९
विममसु य वाससु २७-५००
वित्तयजलं मोहकलं २७-४०५
विमयाविस्खो निवडड २७-४२२
वित्तममरं रसंतो २७-४७३
विस्मयणिजो माया २७-३९४
विणिणा जो उ चोण्ड २७-७३४
विणिगडाणमणे २२-२१४
विट्ठलिआणि पउजति २७-८२८
विग्गम्म भगवतो २४-१०२
वीरिणं तु जीवत्त २७-७१५

वीसंभन्तिमपि हु २७-३९३
बुच्छ वलावलविहि २७-८४७
बुच्छ वलावल, हि २७-५८७
बुद्धाणं तरुणाणं रतिं २७-८२५
विदिहेहि मंगअेहि य २७-१८१६
वेडधियं केमं सरिरोगां २२-२७३सू०
वेडधियसरीरे णं कतिविधे २२-२७१सू०
वेडधियसरीरे, किं संटिते? २२-२७२सू०
वेणुजलं कयुवाडिय २२-९२
वेमाणिणसुकप्पो २७-७२
वेमाणिणा णं कओहितो २२-१३७सू०
वेमाणिं देवाणं केवं ठिई २२-१०२सू०
वेयणकसायमरणे २२-२२८
वेयण वेयावच्चे २७-७६८
" " २७-१२७१
वेयणासु उइत्तासु २७-२५५
वेयगि खारकलिमल २७-१६३०

वेवलियमणिक्वाडा २५-३९
वेरुल्लिउच्च मणी २७-५९१
वोसट्ठनिसट्ठो २७-१६७२
सइदिण णं सइदिणत्ति २२-२३३सू०
सरणि चउप्यय नागं २७-८८८
स एव भव्वसत्ताणं २७-७३५
सकथं वक्कलं ठाणं २६-३॥
सकसाई णं सकसादित्ति २२-२३९सू०
सकाइए णं सकाइएत्ति २२-२३५सू०
सकस्स णं कति परिसाओ २१-२०९सू०
सक्कीसाणा पढमं २१-८६
सग्गेसु य नग्गेसु य २७-१८२७
सच्चित्ताहारट्ठी २२-२१८
सच्छंदयारिं दुस्सीलं २७-७१९
सजोगी णं सजोगित्ति २२-२३७
सज्झायकरणं कुज्जा २७-८८५
सज्झाय (छक्काय)मुक्कजोगा २७-८३५

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रशा० २२
॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

सणपाणकासमुद्रगं	२२-२४	सतथगहणं विसभक्खणं	२७-१०८	समयखेत्ते णं भंते !	२१-१७८सू०
सण्णी णं पुच्छा	२२-२५१सू०	सतथेण सुतिकखेणवि	२५-७	समयं नक्खत्ता जोगं	२५-८५
सत्तगुगुगुगुपंचग	२५-१०३	सद्दहणा पत्तियगा	२७-१२५१	समये वक्कताणं	२२-२६सू०
सत्तद्दु जाइकुलकोडि०	२२-११२	सद्दे कथे गंधे रसे	२७-१२८१	"	२२-९९
सत्तहं थोषाणं	२७-११५८	" " सव्वेसु कसापसु	२७-१४०९	समासीस परिच्छिणं	२७-८३६
सत्तपाण्हं से थोवे	२५-५	सद्धाधितित्ठणुच्छाह	२४-९९	समाहारा सुप्पइण्णा	२५-७३
सत्त पाणूणि से थोवे	२७-५०६	सद्दसु आसवेसु अ	२७-१४३१	समिइसु पंचसमिओ	२७-१४३०
सत्त भए अट्ट मए	२७-१२२	सन्निहिए सामाणे	२७-९९९	समुइणवैयणो पुण	२७-१५३८
सत्तभयविज्जप्पमुक्को	२७-१४९८	सप्फाप सज्झाप	२२-९६	" "	२७-२५४
"	२७-२०७	सभाए णं सुधम्मपाए	२१-१४०सू०	समुइणेषु य सुविहिह	२७-१७१९
सत्तमी य पवंचा उ	२७-४८५	सभाए णं सुहम्मपाए	२०-३९सू०	" "	२७-१७८७
सत्तरिसयं जिणाण व	२७-४४७	समगं णक्खत्ता जोयं	२४-२५	सम्मगमग्गसंपट्टियाणं	२७-७४४
सत्तावीसं जोयणसयाइं	२७-११६९	समणिद्धयाए बंधो	२२-१९९	सम्मत्तनाणदंसणवर०	२७-६०६
सत्ताहं कललं होइ	२७-४६४	समणेण सावपण य	२७-१८०६	सम्मत्तस्साहिगमे	२२-२२५
सत्तेव य कोडिसया	२५-८२	समणोत्ति अहं पढमं	२७-१२५	सम्मत्तं समिइओ	२७-१५०१
" " कोडीओ	२७-११४५	समणोमिप्पि य "	२७-२४१	सम्मद्दंसणचत्तं	२७-१३२५
सत्तेव सहस्साइं	२७-११३५	समणोऽहं ति य "	२७-१५३२	सम्मद्दंसणरत्ता	२७-१०४

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ६५ ॥

सम्प्रद्वितीं नं० सम्म० २२-२४१सू०
सम्प्रं मे सन्वभूरसु २७-२७३
" " २७-७६
" " २७-८४
" महिऊण तओ २७-१७५३
सयणस्म य मज्झगओ २७-१८१८
सयभिमया भरणीओ २७-१०३०
" " २५-११६
" " २५-११२
नयभिसया० वच्चंति २७-१०३३
सयरी भवंति अणवि० २७-७४७
नरीएणमवा भासा २२-१९३
सजेसा नं० नेरइया सब्बे २२-११३सू०
मलेसेणं जीवे किं आहा० २२-३११सू०
" सलेसेत्ति २२-२४०सू०
महं उरिअ(उ)मणो २७-२९६
मयणेण धणिट्ठाई २७-८६८

सवेदए नं० सवेदएत्ति २२-२३८सू०
सन्वगंथविमुक्को २७-४०९
सन्वजिआणमहिंसं २७-१७
सन्वद्वविमाणस्स उ २७-१२०१
सन्वद्वणाई असास्याई २७-१८०९
सन्वत्थ इत्थिवगंमि २७-७७६
सन्वत्थेसु विमुत्तो २७-७७७
सन्वदुक्खण्यहीणाणं २७-७९
" २७-१३५
सन्वऽण्यगई चंदा २७-१०२३
सन्ववभंतराओ नं चंद० २५-१४४सू०
सन्ववभंतराओ नं सूर० २५-१२९सू०
सन्ववभंतरे नं० चंदमंडले २५-१४८सू०
सन्ववभितरऽभीई मूलो २७-१०२५
सन्वसुहण्यमवाओ २७-१७७७
सन्वस्स जीवरासिस्स २७-६९२
" समणसंघस्स २७-६९१

सन्वस्स समणसंघस्स २७-१५७१
सन्वं च असणपाणं २७-१४६९
सन्वं पाणारंभं २७-७५
" " २७-८३
" " २७-१६६
" " २७-१४६८
सन्वंपि असणपाणं २७-१६७
सन्वं चाहारविहिं २७-७७
सन्वा आभरणविही २५-३१
सन्वाणि सव्वलोए २७-१८३०
सन्वाभि म अज्जाओ २७-१७७६
सन्वाहिवि लक्खीहिं २७-१७७४
सन्वुत्तमतित्थाणं २७-६००
सन्वुत्तमलाभाणं २७-५९७
सन्वे अवराहपए २७-३२४
" " २७-६७८
सन्वे उवसगपरीसहे य २७-१६४०

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रकी० २७

॥ ६५ ॥

सव्वे रसे पणीए
सव्वेवि य संबंधा
सव्वे सब्बद्वाप
सव्वेसु य दव्वेसु य
सव्वोवि किसलओ खलु
ससिसमगपुण्णपासि
ससिसमगपुनिमासि
ससिवी दुगोत्तफुसिया
सहसकारमणाभोगओ
संजुइअवलीचम्मो
संखंक० अज्जुणसुवण्णय०
संखंकसन्निकासा
"
"
संखिज्जजोयणा खलु
संखेवेण मए सोम्म
संगनिमित्तं मारइ

२७-१४१०
२७-३६७
२७-१७७३
२७-१४५०
२२-९८
२५-८६
२४-२६
२२-३४
२७-१३५१
२७-४८६
२७-१२०६
२७-११९६
२७-११९३
२७-११९९
२७-११६५
२७-७४९
२७-४०७

संगहो(हु)वग्गहविहिणा
संगं परिजाणामि
"
संगो महाभयं जं
संघयणधिइजुत्तो
संघयणं संठाणं
संघो सइंदयाणं
संजएणं० संजतेति
संजयअसंजयमीसगा
संजोगमूला जीवेणं
"
संज्झागयंमि कलहो
संज्झागयं रविगयं
"
राहुगयं
संखिय मंति य होत्तिय
संठाणं अइ पुस्सो
संठाणं न पमाणं

२७-७२४
२७-१५०२
२७-२१०
२७-४०८
२७-१७६०
२७-४९७
२७-७०५
२२-२४४सू०
२२-२२२
२७-१५०
२७-९०
२७-८६४
२७-८६९
२७-८६६
२२-३७
२५-१०१
२५-१२२

संठाणं वाहहं
संतोवसंतधिइमं
संथारयपव्वज्जं पव्वज्जइ
संनिहिया सामाणा
संपत्ते वलविरिण
संवंधिवंधवत्ते
" वंधयेसु
संभरसु सुअण ! जं तं
संलेहणा य दुविहा
संवच्छरस्स सुंदरि !
संविग्गा भीयपरिसा य
संसारचक्कवालंमि
संसारचक्कवाले
"
संसारबंधणाणि य
संसारमूलवीयं
संसारंगमज्जे

२२-२०२
२७-१४२८
२७-३०८
३२-१५३
२७-१८७८
२७-१८३१
२७-१६११
२७-४३३
२७-१४११
२७-११५६
२७-८३७
२७-११२
२७-१४८२
२७-१८५
२७-१२६५
२७-३३४
२७-२६२

औ० १०
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ३७ ॥

संसारंगमज्ज्ञे
संसारममावर्णे य
साय कोसला गयपुरं
सा किर दुग्गडिपूरा
साकेअपुराहियइ
सागरगिरिभैरागं
सागरतरं णट्ठिय मई
सागरोवओगुवडत्तेणं पु०
सा णं पउमवरचेतिया
सा य पगलंतेलोहिय
सायममाय सब्बे
सायनल्लुल्लोहिय०
सावज्जोगविण्णई
मावन्ती जियमत्तु
सावयभयाभिभूओ
साता गतनम्बत्ता
सातागणमाहागे

२७-१५५५
२७-१२५२
२२-११४
२७-५५०
२७-३९७
२५-२३
२७-१६०१
२२-२४५सू०
२१-१११सू०
२७-१६५२
२२-२२७
२७-१६४८
२७-१
२७-१७३५
२७-१७९२
२७-१०२६
२२-१०१

साहुत्तसुट्ठिया जं
साहुत्त नट्ठिय लोण
साहुत्त कयसंलेहो
साहुत्त साहुत्तरिअ
साहुत्त नोवकयं
साहुत्त य मंगलं मज्झ
सिअकमलकलस०
सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य
" " " "
" " " "
सिद्धसरणेण नव०
सिद्धस्स सुहो रासी
" " "
" " मज्झ
सिद्धा य मंगलं मज्झ
सिद्धे अ विज्जुणामे
उवसंपण्णे

२७-४०
२७-७७९
२७-१५५९
२७-५७
२७-१३११
२७-२५२
२७-६०१
२७-१२२८
१९-२८
२२-१७८
२७-३०
१९-२३
२२-१७३
२७-१२२३
२७-२४९
२५-६०
२७-२५३

सिद्धे उवसंपन्तो
" कच्छे खंडग०
" णीले पुव्वविदेहे
" य मालवत्ते
" रुक्पी रम्मग
" सोमणसे विअ
सिरिहिरिधितिकिस्तीओ
सिंगारतरंगाण
सिआडगस्स गुच्छो
सिमे पिते सुत्ते
सीआवेइ विहारं
सीउण्हपंथगमणे
सीता य दव्वसरार
सीयायवज्जडियंगा
सीलई ससिहारे य
सीलतवदाणभाअण
सीलेणवि मरियच्चं

२७-१५२७
२५-५५
२५-६८
२५-५३
२५-६९
२५-५९
२६-४॥
२७-४०३
२२-५५
२७-५५५
२७-७३२
२७-५२३
२२-२२६
२७-१६८१
१९-७
२७-८०९
२७-१२८

॥ ३७ ॥

सूर्य० २३
चंद्र० २४
जं० २५
मि० २६
प्रकी० २७

सीवणं तुन्नणं भरणं	२७-८२२	सुणह गणिप दस दस	२७-४४९	सुयसागरा विणेऊण	२२-४५०
सीसघडीनिगालं	२७-५४५	सुणह जह जिणवयणा०	२७-१८९५	सुरगणइहिसमग्गा	२७-१२३०
सीसोऽवि वेरिओ	२७-७२७	" सुयसारनिहसं	२७-१२३७	सुरगणसुहं समत्तं	२२-१७२
सीहे कुडुंबयारस्स	२७-५७३	सुदंसणा अमोहा य	२२-५२	"	२७-१२२१
सुअधम्मसंघसाहु	२७-५२	"	२१-२७	सुविहिअगुणवित्थारं	२७-६०७
सुअणाणसागराओ	२७-९४०	"	२७-११०९	सुविहिअनिज्झाप	२७-३३०
सुक्कम्मि सोणियम्मि य	२७-१९सू०	सुदिट्ठेण निमित्तेणं	२७-९१६	सुविहिय ! अईयकाले	२७-१६१९
"	२७-५३२	सुद्धंमि अ सोहणगे	२५-(५०९डी०)	"	२७-६८४
सुगहियसावगधम्मा	२७-१६८६	सुद्ध सुसाहुमगं	२७-७४१	सुविहिय ! इमं पइण्णं	२७-१२५६
सुगहियजिणवयणामय०	२७-१६८७	सुद्धे सम्मत्ते अवरिओऽवि	२७-३४२	सुव्वंति य अणगारा	२७-१७८२
सुचिरमवि संकिल्हिं	२७-१२८८	सुवहुस्सुयावि संता	२७-१२९०	सुसीमा कुंडला चैव	२५-५८
सुज्झइ दुकरकारी	२७-२२८	सुबहुपि भावसहं	२७-१४६०	सुहपरिणामो निच्चं	२७-५९
"	२७-१५२०	"	२७-१५८	सुहुमस्स णं भंते ! अतरं २१-२३३सू०	२७-२३३सू०
सुहुवि जिआसु सुहुवि	२७-३९२	सुभदा य विसाला य	२१-२८	"	२१-२३१सू०
" मग्गिजंतो	२७-४१९	"	२५-५३	सुहुमंमि भावसहं	२७-१३३३
सुण जह पच्छिमकाले	२७-१२४६	सुयदिट्ठिवायकहियं	२७-१७५५	सुहुमे णं भंते ! सुहुमेत्ति २१-२३२सू०	२१-२३२सू०
सुण वागरणावल्लिअ	२७-९४१	सुयरयणनिहाणं	२२-२	" सुहुमित्ति० पुढविकालो २२-२५०सू०	२२-२५०सू०

ओ० १०
रा० २०
जी० २१
प्रश्न० २२
॥ ३० ॥

सुहमे० सुदुमंति कालतो २२-२३६सू०
सई जहा समुत्ता २७-३६१
खणारंभपवसं २७-८११
सूरमंडलस्त पं० सूर० २५-१३०सू०
सूरमंडले पं० केवइयं २५-१३१सू०
सूरमंडले पं० का अग० २१-२०५सू०
सूरस्त पं० का अग० २७-१०८३
सूरस्त य सूरस्त य २१-७१
" " " २३-८३
" " " २३-८५
" " " २७-१०८३
सूरंगिया चंद्रा २१-८०
" " " २०-५६सू०
" " " २०-८२सू०
" " " २०-१८सू०
" " " २०-३०सू०
" " " २०-५७सू०

मूरिया० केवइयं काले छिती
सूरियाभस्म०
सूरियाभानि ! नमंण
सूरियाभे० अद्रुमयं चण०
सूरियाभे० नेपेण मा निज्जा

से इमे गामागर जाव० १९-४१सू०
सेओ राया धारिणी केवी २०-४सू०
से किं तं अकम्मभूमग० २१-११४सू०
" " अजीवपन्नवणा २२-२सू०
" " अजीवाभिगमे २१-३सू०
" " अणंतरलिङ्ग० २२-७सू०
" " अणितरण तत्रे १९-२०सू०
" " अरुविअजीव० २२-३सू०
" " धम्मत्थि० २१-४सू०
" " असंसारसमा० २२-६सू०
" " असंसारसमावणं० २१-७सू०
" " अंतरदीवगा २१-१०९सू०
" " आउक्काइया २१-१६सू०
" " दुविहा० पं० २२-१६सू०
" " इत्थीओ २१-४६सू०
" " उवमिण २५-१९सू०
" " पमंठियसंसार० २२-१०सू०

से किं तं ओराला तसा पाणा २१-२८सू०
" " खरवायरपुढवि० २२-१५सू०
" " खहयरपं० ति० २२-३६सू०
" " खहयरा २१-४१सू०
" " गच्चमवक्रतिय० २१-३८सू०
" " " २१-१०८सू०
" " चउरिदियसंसार० २२-२९सू०
" " चउरिदिया० अधिया१-३१सू०
" " जलयरपं० चिदिय० २२-३३सू०
" " जलयरा २१-३६सू०
" " " २१-३०सू०
" " " २२-५सू०
" " जीवपन्नवणा २१-६सू०
" " जीवाभिगमे २१-२सू०
" " जीवाजीवाभिगमे २१-५२सू०
" " णपुत्तका २१-२३सू०
" " तसा २१-९७सू०
" " तिरिन्धल०

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
ति० २६
प्रकी० २७

॥ ३० ॥

से किं तं तेइदियसंसार०	२२-२८सू०
" " तेइदिया०ओवइया	२१-३०सू०
" " तेऊकाइया	२१-२४सू०
" " "	२२-१७सू०
" " थलयरपंचि०	२२-३४सू०
" " थलयरसमु०	२१-३७सू०
" " थलयरा	२१-४०सू०
" " थावरा	२१-१०सू०
" " देवा	२२-३८सू०
" " "	२१-४३सू०
" " "	२१-११५सू०
" " नेरइया	२१-३३सू०
" " "	२१-६७सू०
" " "	२२-३१सू०
" " पत्तेयसरीर०	२२-२२सू०
" " "	२१-२१सू०
" " पन्नवणा	२२-१सू०

से किं तं परंपरसिद्धअसंसा०	२२-८सू०
" " परिसप्पथल०	२२-३५सू०
" " पंचेदियतिरिक्ख०	२१-३४सू०
" " पंचिंदिय०जलयर०	२२-३२सू०
" " पंचेदियसंसार	२२-३०सू०
" " पंचेदिया	२१-३२सू०
" " पुढविकाइया	२१-११सू०
" " " सुहुम०	२२-११सू०
" " पुरिसा	२१-५३सू०
" " वादरपुढवि०	२२-१३सू०
" " वादरतेउक्काइया	२१-२६सू०
" " वादरवणस्सति	२२-२१सू०
" " वायरआउक्काइया	२१-१७सू०
" " वायरपुढवि०	२१-१४सू०
" " वायरवणस्सइ०	२१-२०सू०
" " बाहिरप	१९-१९सू०
" " वेइंदिया	२१-२९सू०

से किं तं वेइं० पुलाकिसिया	२२-२७सू०
" " भवणवासी	२१-११६सू०
" " मणुस्सा	२२-३७सू०
" " " संमुच्छिम०	२१-४२सू०
" " "	२१-१०६सू०
" " रुक्खा	२२-२३सू०
" " रुविअजीव०	२२-४सू०
" " रुविअजीवा० खंधा	२१-५सू०
" " वणस्सइकाइया	२२-१९सू०
" " "	२१-१८सू०
" " वाउकाइया	२२-१८सू०
" " वाउ० सुहुम०	२१-२७सू०
" " सणहवायर०	२२-१४सू०
" " सणहवा०सत्तविहा	२१-१५सू०
" " सव्वजीवाभिगमे	२१-२४५सू०
" " संमुच्छिम० ति०	२१-३५सू०
" " संमुच्छिममणुस्सा	२१-१०७सू०

औ० १९
रा० २०
जी० २१
प्रज्ञा० २२
॥ ७१ ॥

से किं तं संसारसंविण्णगं २१-८सू०
" " संसारसमावण्णं २२-९सू०
" " साहारणसरीरं २१-२२सू०
" " साहारणं वा०व० २२-२३सू०
" " सुहुमतेउक्काइया २१-२५सू०
" " सुहुमपुढविकाइया २१-१२सू०
" " " २२-१२सू०
" " सुहुमवणस्सइका २२-२०सू०
" " " २१-१९सू०
से केणट्टेणं उत्तरकुरार २५-९२सू०
" " जटुदीवेर २१-१४८सू०
" " " २५-१८०सू०
" " भारहे वासे २५-४२सू०
" " विजणं २१-१३५सू०
" " वेअहे पच्चण २५-२५सू०
" " हेमवण वासे २५-७९सू०
से जलणामण सिया २२-३२६सू०
से णयण णोमालिय २२-२६

से णं एगाए पडमवरवेइया २०-३४सू०
" " " वइरामईए २५-४सू०
" " णं० नहासजोगी सि० २२-३५२सू०
" " तहा समुग्रातगते २२-३५१सू०
" " पुण्णं वणसंडे णं १९-३सू०
" " णं भंते ! तहासजोगी १९-४३सू०
से णूणं भंते ! मण्णामीति २२-१६१सू०
सेयवियावि य णयरी २२-११८
सेयंकर खेमंकर २४-९४
सेलम्मि चित्तकूडे २७-१७०१
सेवं भंते ! णमो सुयदेवयाए २०-८५सू०
सेसावि पंडुपुत्ता २७-१६९९
सो अन्नया णिदाहो २७-१७५१
सोअसरी डुरिअदरी २७-३९८
सोइंदिए णं० कतिपदेसो २२-१९२सू०
सोऊण निसासमए २७-१६७०
" " सुइयणरयइ २७-१६२८

सोएण पवसिअपिआ
सोपाहिं अइगयाओ
सोगजरामरणाइं
सो गंगमुत्तरंतो
सोत्तिदियस्स णं
सोत्थि य सोवित्थि य
सो देवकम्मविहिणा
सो नत्थि इहोगासे
सो नाम अणसणतवो
सो पवयणकुलगण
सो भरियमहुरजलहर
सोमग्गहविलग्गेसु
सोमे सहिए आसणे य
सोमे सहिते अस्सासणे
सो य प्हो उवलद्धो
सोलस चैव सहस्सा
" " देव
" " रोगायंका

२७-४२०
२७-१६६३
२७-१८८३
२७-६४३
२२-१९५सू०
२४-९३
२५-१७
२७-१८२९
२७-१३६९
२४-१००
२७-१२४५
२७-९१२
२५-१२९
२४-९०
२७-१८७०
२७-१०२०
२५-१२६
२७-१६४५

सूर्य० २३
चं० २४
जं० २५
नि० २६
प्रक्ती० २७

॥ ७१ ॥

सोलसहि सहस्सेहि २७-११५४
सो वानरजूहवई २७-१७४५
सो सीहचंदमुनिवर २७-१७४८
सोहम्मी० कायपवियारा २७-११२८
" देवा केरिसया २१-२१६६
" देवा णं सरीरगा २१-२१५६
" विमाणपुढवी २१-२१०६
" विमाणा किंसं २१-२११६
" केवइ० उ० २१-२१२६
" केवति० २१-२१४६
" सव्वपाणा २१-२२२६
सोहम्मीसाणदेवा ओहिणा २१-२१७६
सोहम्मीसाण पढमं २७-११६२
" सुरा २७-११२३
सोहम्मीसाणा देवा २१-२१९६
सोहम्मीसाणेषु णं २१-२१८६

सोहम्मीसाणेषु देवा २१-२२०६
सोही उज्जुयभूयस्स २७-१५६
सो होइ अभिगमरूई २२-१२७
हट्टस्स अणवगल्लस्स २७-५०५
" २५-४
" २७-१८४२
हयगव्वभावासजम्मण २५-२२
हयवइ गयवइ णरवइ २२-११
हरियाले हिंगुलय २७-१९९
हंतूण मोहजालं २७-१४९१
" २७-११९
" रागदोपं २७-१३९२
हंदि अणिच्चा सट्ठा २५-१३
हंदि सु० अब्भंतरं २५-१२
" सुणंतु भवंतो २७-५३४
हा ! असुइसमुण्णच्चा २७-१८२५
हा जइ मोहियमइणा २७-६१८
हायंति जस्स जोगा

हालिहमेयवण्णा २७-११८९
हासं खेड्ढा कंदणं २७-७९१
हासेण व कोहेण व २७-३७३
हासे हासरईविय २७-१०००
हिड्डिळा उवरिळा २७-१११५
हिड्डि ससिपरिचारी २५-१२१
हिमचूलसुरूपत्ती २७-१७५८
हिंसाइदोससुच्चा २७-३८
हीणभिन्नसरो दीणो २७-४८८
हुज्जा इमंमि समय २७-७८
हुंति अजुत्तस्स विणास० २७-१८५२
" गुणकारगाइ २७-१८५७
हेट्ठिमगेविज्जाणं २७-११११
होउ व जडी सिंहडी २७-३७५
होरा वलिया दिवसा २७-८४९
उपांगप्रकीर्णकानां सूत्रगाथाऽका-
रादिक्रमः

णमोऽयु णं समणस्म भगवओ महावीरस्स
श्रीआगमोद्धारसंग्रहे भागः २.

॥ श्रीउपांगादीनां विषयानुक्रमः॥

श्रीऔपपातिकोपांगे लघुविषयानु-

क्रमः

सूत्राणि ४३ सूत्रगाथाः ३०

सूत्राकः । पत्राकः ।

१. चम्पापूर्णभद्रवनखण्डाशोकवृक्षपृथ्वी-

शिलापट्टकक्रोणिकराजधारिण्यादि-

वर्णनम्

१.४

लघुविषयानुक्रमः

२१ श्रीवीरागमनश्रीवीरवर्णनसाधुतदुण-

वर्णनम्

४८

३३ असुरादिदेववृषपराज्ञीपर्यन्निर्गमवर्ण-

नम्

७७

४३, ३० देशना गौतमस्वामिप्रश्नैकवि-

ज्जतिअमडसमुद्धातसिद्धवर्णनम् ११९

इति श्रीऔपपातिकोपाङ्गस्य संक्षिप्त क्रमः

श्रीराजप्रश्रीयोपांगे लघुविषयानु-

क्रमः

सूत्राणि ८५

५ आमलकल्पादिश्वेतनृधारिणीसूर्यामि-

तद्वद्धिवर्णनम्

१७

१९ वन्दनविचारमण्डलाद्यादेशमण्डलक-

रणयानविमानादिवर्णनम्

४४

२६ धर्मकथानाट्यकूटागारदृष्टान्ताः

५९

४५ सौधर्मविमानपीठिकोपपातादिसभा- ११३
पूजनफलस्नानपूजादयः
८५ प्रदेशिचरित्तदास्तिकतादेवत्वप्राप्ति-
विदेहमोक्षवर्णनम् १५०
इति राजप्रश्नोयोपाङ्गम्.

जीवाजीवाभिगमसूत्रस्य लघु-
विषयानुक्रमः ॥

सूत्राणि २७३ सूत्रगाथाः ९३*
४४ प्रथमा प्रतिपत्तिः ५१
६५, ५* द्वितीया प्रतिपत्तिः ८८
२२४, ८८* तृतीया प्रतिपत्तिः ४०७
८१, ७* प्रथमो नारकोद्देशः (१०२)
९५, १३* द्वितीयो नारकोद्देशः (१२९)

९६, २४* तृतीयो नारकोद्देशः (१३१)
इति नारकाः ॥
१०० प्रथमस्तिर्यग्द्देशः (१३९)
१०५ द्वितीयस्तिर्यग्द्देशः (१४३)
१५४, २९* जम्बूद्वीपाधिकारः (३००)
१९१, ८३* द्वीपसमुद्राः (३७३)
२०७, ८५* ज्योतिष्कोद्देशः (३८५)
२०९, प्रथमो वैमानिकोद्देशः (३९०)
२२४, ८८* द्वितीयो वैमानिकोद्देशः ४०७
२२६ चतुर्थी प्रतिपत्तिः ४११
२४०, ९२* पञ्चमी प्रतिपत्तिः ४२७
२४१ षष्ठी प्रतिपत्तिः ५२८
२४२ सप्तमी प्रतिपत्तिः ४३१

२४३ अष्टमी प्रतिपत्तिः ४३३
२४४ नवमी प्रतिपत्तिः ४३५
इति संसारसमापन्नाः
२७३, ९३* सिद्धादीनां स्थित्यन्तरालप-
बहुत्वानि ४६७

इति जीवाजीवाभिगमसूत्रस्य
लघुविषयानुक्रमः ॥

प्रज्ञापनासूत्रस्य
लघुविषयानुक्रमः

सूत्राणि ३५२ सूत्रगाथाः २३१*
३८, १३३* प्रज्ञापनापदम् १ ७१
५४, १७९* स्थानपदम् २ ११३

१३, १८१* बहुवक्तव्यतापदम् ३	१६८	२०१, २०८ द्वितीय इन्द्रियोद्देशः (३१७)	२९९, २१७* कर्मप्रकृतिपदम् २३	४२१
१०२ स्थितिपदम् ४	१७८	२०५ प्रयोगपदम् १६	२९३, २१७* प्रथम कर्मप्रकृत्युद्देशः (४६५)	
१२१ विशेषपदम् ५	२०४	२३२, २१०* १७ लेश्यापदम् ३७३	२९९ द्वितीयः कर्मप्रकृत्युद्देशः (४९२)	
१४५, १८४* वृत्तक्रान्तिपदम् ६	२१८	२१३, २०९* प्रथमो लेश्योद्देशः (३४३)	३०० कर्मवन्धपदम् २४	४९४
१४६ उच्छ्वासपदम् ७	२२१	२२१ द्वितीयो लेश्योद्देशः (३५२)	३०१ कर्मवेदपदम् २५	४९४
१४८ सञ्ज्ञापदम् ८	२२४	२२४ तृतीयो लेश्योद्देशः (३५८)	३०२ कर्मवेदवन्धपदम् २६	४९७
१५३ योनिपदम् ९	२२८	२३०, २१०* चतुर्थो लेश्योद्देशः (३७०)	३०३ कर्मवेदपदम् २७	४९८
१६०, १९१* चरमाचरमपदम् १०	२४६	२३१ पञ्चमो लेश्योद्देशः (३७२)	३१२, २२०* आहारपदम् २८	५२४
१७५, १०८* भाषापदम् ११	२६८	२३२ षष्ठो लेश्योद्देशः (३७३)	३०९, २१०* प्रथम आहारोद्देशः (५११)	
१८० शरीरपदम् १२	२८४	२५४, २१२* कायस्थितिपदम् १८	३१२ २२०* द्वितीय आहारोद्देशः (५२४)	
१८५, २००* परिणामपदम् १३	२८०	२५५ सम्यक्त्वपदम् १९	३१३ उपयोगपदम् २९	५२८
१९०, २०१* कषायपदम् १४	२९२	२६७, २१३* अन्तक्रियापदम् २०	३१५ पश्यत्तापदम् ३०	५३३
२०१, २०८* इन्द्रियपदम् १५	३१७	२७९, २१६* शरीरपदम् २१	३१६ २२१* सञ्ज्ञापदम् ३१	५३४
१९८, २०६* प्रथम इन्द्रियोद्देशः (३०८)		२८८ क्रियापदम् २२	३१७, २२२* सत्यतपदम् ३२	५३८

३२१, २२३* अवधिपदम् ३३ ५४३
३२९, २२५* प्रवीचारपदम् ३४ ५५३
३३२, २२७* वेदनापदम् ३५ ५५८
३५२, २३१* समुद्घातपदम् ३६ ६११.

इति प्रज्ञापनाया लघुविषयानुक्रमः ।

श्रीसूर्यप्रज्ञाशेलेष्टुविषयानुक्रमः ॥

सूत्राणि १०७ सूत्रगाथाः १०२*

२०, १५* प्रथमं प्राभृतम् १ ४४
११, १५* प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् (१६)
१३ द्वितीयं प्रा० (२१)
१४ तृतीयं प्रा० (२४)
१५ चतुर्थं प्रा० (२८)
१७ पञ्चमं प्रा० (३१)

१८ षष्ठं प्रा०	(३५)	७०, २२* दशमं प्रा०	१९७
१९ सप्तमं प्रा०	(३७)	३२ प्रथमं प्राभृतप्राभृतम्	(१००)
२० अष्टमं प्रा०	(४४)	३४ द्वितीयं प्रा०	(१०४)
२३ द्वितीयं प्राभृतं	६३	३५ तृतीयं प्रा०	(१०५)
२१ प्रथमं प्राभृतप्राभृतम्	(४८)	३६ चतुर्थं प्रा०	(११०)
२२ द्वितीयं प्रा०	(५०)	३७ पचम प्रा०	(१११)
२३ तृतीयं प्रा०	(६३)	३९ षष्ठं प्रा०	(१२८)
२४ तृतीयं प्राभृतं	६६	४० सप्तमं प्रा०	(१२९)
२५ चतुर्थं प्रा०	७६	४१ अष्टमं प्रा०	(१३०)
२६ पञ्चमं प्रा०	७९	४२ नवमं प्रा०	(१३१)
२७ षष्ठं प्रा०	८३	४३ दशमं प्रा०	(१३७)
२८ सप्तमं प्रा०	८४	४५ एकादशं प्रा०	(१४५)
२९ अष्टमं प्रा०	९२	४६ द्वादशं प्रा०	(१४६)
३१ नवमं प्रा०	९९	४७, १८* त्रयोदश प्रा०	(१४७)

४८, २२* चतुर्दश प्रामृतप्रामृत (१४८)	८७ षोडश प्रा०	२५६	११०, ६९* चतुर्थो वक्षस्कारः	३८२
४० पचदश प्रा०	८८ सप्तदश प्रा०	२५८	१२४, ८०* पञ्चमो वक्षस्कारः	४२४
५० षोडश प्रा०	९९ अष्टादश प्रा०	२६८	१२६, ८२* षष्ठो वक्षस्कारः	४३२
५१ सप्तदश प्रा०	१०१, ८७* एकोनविंशतितमं प्रा०	२८५	१८१, १३१* सप्तमो वक्षस्कारः	५४२
५२ अष्टादश प्रा०	१०७, १०२* विंशतितम प्रा०	२९७	श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्लेख्यविषयानुक्रमः ॥	
५३, २४ एकोनविंशतितमं प्रा०	इति सूर्यप्रज्ञप्तेर्लेख्यविषयानुक्रमः ॥		निरयावलिकानां लघुविषयानुक्रमः	
५८, २०* विंशतितम	श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्लेख्यविषयानु- क्रमः ॥		सूत्राणि ३१ सूत्रगाथाः ५	
५९ एकविंशतितमं प्रा०			२० प्रथमो वर्गः	१९
७० द्वाविंशतितम प्रा०			१९ प्रथमाध्ययनम्	(१९)
७१ एकादश प्रामृत	सूत्राणि १८१ सूत्रगाथाः १३१		२० अध्ययनचतुस्क्रमम्	(१९)
७८ द्वादश प्रा०	१७, ३* प्रथमो वक्षस्कारः	८८	२२, १* द्वितीयो वर्गः	२१
८१ त्रयोदश प्रा०	४१, ८* द्वितीयो वक्षस्कारः	१७८	२८, २* तृतीयो वर्गः	३६
८२ चतुर्दश प्रा०	७२, ४१* तृतीयो वक्षस्कारः	२८१	२३, २* प्रथमाध्ययनम्	(२३)
८६ पचदश प्रा०	७१, ४१* भरतचरित्रम्	(२८०)		

- २४ द्वितीयमध्ययनम्
२५ तृतीयमध्ययनम्
२६ चतुर्थमध्ययनम्
२७ पञ्चममध्ययनम्
२२ ४* चतुर्थो वर्गः
३१ ५* पञ्चमो वर्गः

इति निरयावलिकानां लघुविषयानुक्रमः ॥

- (२३) प्रकीर्णकदशके लघुविषयानुक्रमः
(२९) सूत्राणि २० सूत्रगाथाः १८२०*
(३५) ६३* चउसरणं १. ५
(३६) १, १३३* आउरपच्चक्खाणं २. ७०, * १०
३८ २७१* महापच्चक्खाणं ३. १४२, * १९
४२ ४४७* भउपरिणं ४. १७२, * ३१
२०, ५८६* तंदुलवेयालियं ५. १९, * ५३

- ७०९* संथारपइणयं ६. १२३, * ६१
८४६* गच्छायारपइणयं ७. १३७, * ७०
९२८* गणिविज्जापइणयं ८. ८२, * ७६
१२३५* देविदत्थयपइणयं ९. ३०७, * ९६
१८ ९* मरणविहिपइणयं १०. ६६४, * १४२
इति प्रकीर्णकानां लघुविषयानुक्रमः ॥

॥ श्रीउपांगादीनां बृहद्विषयानुक्रमः

श्रीओपपातिकोपांगस्य बृहद्- विषयानुक्रमः	७ धारिणीराज्ञीवर्णनम् । १३	दि, कनकावल्यादितपो, मासिक्या-
सूत्राणि ४३; सूत्रगाथाः ३०.	८ प्रवृत्तिव्याघृतिवर्णनम् । १४	दिप्रतिमाकारवसाधुवर्णनं, जाल्यादि-
मङ्गलोपोदघातादि । १	९ कोणिकराजोपस्थानशालोपवेशनम् । १४	साधुगुणवर्णनम् । ३४
१ चम्पावर्णनम् । ४	१० श्रीमहावीरवर्णनं, उपश्रामे श्रीवीरा- गमनं च । २२	१७ ईर्यासमित्यादिगुणानामप्रतिबद्ध- तायाश्च वर्णनम् । ३७
२ पूर्णभद्रैत्यवर्णनम् । ६	११ प्रवृत्तिव्याघृतकृता वर्द्धापनिका । २४	१८ बाह्याभ्यन्तरे तपसी । ३७
३ वनखण्डवर्णनम् । ८	१२ कोम्रिककृतमभ्युत्थाननमस्कारप्रीति- दानादि । २६	१९ अनशनादीनां बाह्यभेदानां वर्णनम् । ४१
४ अशोऋक्षवर्णनम् । १०	१३ श्रीवीरस्य पूर्णभद्रे समवसरणम् । २६	२० प्रायश्चित्तादीनामभ्यन्तरभेदानां वर्णनम् । ४५
५ दृष्टवीजिलापट्टवर्णनम् । ११	१६ उग्रप्रव्रजितादिसाधुवर्णनं मतिज्ञान्या-	२१ मुनीनां वाचनापृच्छाधर्मकथादि-
६ कोणिकराजवर्णनम् । १२		

वर्णनं, संसारस्य समुद्रेण रूपकं, संय- मस्य च पोतेन । ४८	२९ आभिषेक्यहस्तिस्त्रिस्तानयनादेशः । ६१	पञ्चमहाव्रतद्वादः व्रतस्वरूपम् । ८२
२२ असुरकुमारगमनवर्णनम् । ५०	३० हस्तिनो वर्णनं, तदानयनं, यानवर्णनं, यानशालिकेन यानानयनम् । ६४	३५-३७ श्रोतॄणां दीक्षाद्वा दशव्रतप्रतिपत्ति- सम्यक्त्वानि ३५ कोणिककृता- प्रशंसा, ३६ सुभद्रादिराशीकृता- प्रशंसा ३७ । ८३
२३ शेषभवनवास्यागमनवर्णनम् । ५१	३१ कोणिकस्याद्वनशालाप्रवेशमर्दनमज्ज- नविलेपनालङ्कारनिर्गमाष्टमङ्गलपूर्ण- कलशादिच्छत्रयष्टिग्रहादिहयगजर- थवर्णनं, महद्भूर्या निर्गमश्च । ७३	३८ ६-७* गौतमस्य वर्णनं, जातश्रद्ध त्वादि, प्रश्नश्च (१.२)
२४ व्यन्तरागमनवर्णनम् । ५२	३२ अर्थाध्यायमिन्नन्दनादि, पञ्चाभि- गमाः, पर्युपासना च । ७६	(१) असंयतस्य पापाश्रवः, (२) मोहाश्रवः (३) मोहनीयवेदने मोहबन्धभजना (४) उत्सन्नव्रस- घातिनां नरके उपपातः, (५) अका- मनृदुष्टादिमता दशसहस्रस्थितिषु देवेषूपपातः (६) अन्दुबद्धादीना द्वादशवर्षसहस्रस्थितिकेषु (७) प्र-
२५ ज्योतिष्कागमनवर्णनम् । ५२	३३ कुब्जादिदासीरिवृत्तसुभद्रारज्याग- मनादिवर्णनम् । ७७	
२६ वैमानिकागमनवर्णनम् (देव्यागमन- वर्णनम् । ५६	३४, १-५* श्रीवीरस्य पर्षत्स्वर्योर्वर्णनं, लेकालोकास्तित्वादिप्राणातिपातवि- रमणादिदेशना, नरकादिगतिहेत्वादि,	
२७ चम्पायां जनसमवायः, वीरागमनसमा- चारः, उग्रपुत्रादीना वन्दनपूजनाद्यर्थ- मागमेच्छा, स्नानादि, हयरोहादि, प्रदक्षिणादि । ६१	२८ प्रवृत्तिन्यापृतकृता वर्षापनिका, प्रीति- दानादि च । ६५	

कृतिभद्ररूपानपितृशुश्रूषकादीनां च-
तुर्दशवर्षमहस्रस्थितिकेषु (८) पति-
गतिराना चतुःषष्टौ (९) दक-
द्वितीयादीनां चतुरशीतौ (१०)
होत्रिकादिदानप्रस्थाना (११) का-
न्दर्पिकादिनामपि (१२) साह्य-
उद्योगादिपरिव्राजकानां दानशौच-
तीर्थार्थभिक्षवादिनां च दशसागरोप-
भेषूपपातः ७ ९४

३३. (१३) अम्बडगिष्यससगत्या अदत्ता
दानगशां बालुकासस्तारकः अर्ह-
द्वाराम्बडनमन्त्रारः अम्बडसमीपप्र-
त्याख्यातहिसादेर्भीरुसाक्षिक प्रत्या-
ख्यानं चतुर्विधाहारत्याग शरीर

व्युत्सर्गः, अनशनं च, दशसागरोप-
भेषूपपातः, नवरमाराधकाः । ९६
४० (१४) अम्बडस्य वैक्रियलब्धिव-
धिज्ञानं गतगृहे वमतिः अभिगत-
जीवत्वादि आयाकमादिवर्जनं अ-
नर्थदण्ड (४) त्यागः लटमानादि
अन्यतीर्थिकवन्दनत्यागश्च, अनश-
नेन ब्रह्मलोकं उत्पत्तिः, महाविदेहे-
ऽन्तरः दृढप्रतिज्ञैः अभिधानं, द्वास-
सतिः कलाः कलाचार्यसत्कारः
भोगेऽव्यासः, प्रव्रज्या सिद्धिश्च १०३
४१ (१५) आचार्यप्रत्यनीकादीनां त्रयो
दशसागरोपभेषूपत्तिरनाराधकाश्चः
(१६) जातिस्मारकाणुवतादिमता, ति-

रथा चाष्टादशसागरेषूपत्तिराराधकाश्च,
(१७) द्विगृहान्तरिकाद्याजीविकानां
द्वाविंशतौ (१८) आमोत्कषिता-
दीनां द्वाविंशतौ (१९) बहुस्तादीना-
मेकविंशतौ, अनाराधकाश्च. (२०)
अन्वारम्भदेशविरतिजीवाजीवाव-
बोधादिगौपयालोचनसमाधियुतानां
द्वाविंशतौ (२१) अनारम्भसर्वपाप-
निवृत्तिमता साधूनां तु त्रयस्त्रिंशति,
(२२) क्षीणक्रोधादीनां मोक्षः । १०७
४२, ८० केवलिसमुद्घाते (प्रदेशैर्निर्जरापु-
द्गलैश्च लोकज्यासिः, व्याप्तघ्राणपुद्ग-
लवच्छन्नैश्चैरज्ञानादि, वेदनीयादि-
धार्थ्यं समुद्घातः, असंख्यतसाम-

यिकमावर्जीकरणं, अष्टसामयिकः
समुद्घातः, औदारिकतन्मिश्रकर्म-
णयोगास्तत्र, निवृत्तानां त्रियोगिता,
पीठादिप्रत्यर्पणम् । १११
४३ सयोगानामसिद्धिः, योगनिरोधः,
गुणश्रेणिकर्मक्षपणं, सिद्धिः, सि-
द्धानां स्वरूपं, संहननसंस्थानांयूषि,
ईषत्प्रागभाराया वर्णनं, नामानि,
उपरितने गव्यते स्थानम् । ११५
९*-३० सिद्धाना प्रतिघात-प्रतिष्ठा-तनु-
त्यागसंस्थानावाहनापरस्परस्पर्श-
लक्षणसुखस्वरूपादि । ११९

॥ इत्यौपपातिकसूत्रबृहद्विषयानुक्रमः ॥

श्रीराजप्रश्नीयोपाङ्गस्य बृहद्-
विषयानुक्रमः । सूत्राणि ८५.

वीरनमस्कारः ॥

गुहिनयोगाद्विवरणकरणप्रतिज्ञा ॥

राजप्रश्नीयोपाङ्गशब्दयोरन्वर्थौ ।

१ आमलकल्पानगर्गतिदेशः ।

२ आम्रशालवनाद्यतिदेशः ।

३ अशोकवर्णनाद्यतिदेशः ।

४ श्वेततृणधारिणीदेवीवीरसमवसरणा-
द्यतिदेशः ।

५ सूर्याभदेवतदृक्छिवीरवन्दनानि ।

६ वन्दनाय गमनविचारः ।

७ आभियोगिकाय योजनमण्डलकरणा-
द्यादेशः ।

८ आभियोगिकानामुत्तरवैक्रियकरण-
मागमनं वीरवन्दनादि च । २०
९ पुराणजीतादिकथनम् । २०
१० वैक्रियसमुद्घातः, सर्वैकज्ञातविकु-
र्वणा, अत्रार्दलं, वृष्टिः, पुष्पवार्दलं,
जलस्थलजपुष्पवर्षणं, प्रत्यागत्य नि-
वेदनम् । २३
११ सुस्वरघण्टावादनाऽऽदेशः । २५
१२ वन्दनार्थं गमनाज्ञा । २६
१३ जिनभक्तिधर्मादिभिर्वन्दनपूजनाद्यर्थं
देवागमन १३, यानविमानविकु-
र्वणादेशः १४ । २७
१५ यानविकुर्वण, त्रिसोपानतोरणबहु-
मध्यभूभागकृष्णादिमणितद्गन्धस्पर्श-

दिकाशाश्वताशाश्वतत्ववनखण्डायामा-
दिवर्णनम् । ८५

३५ मध्यप्रासादतत्परिवारप्रासादवर्णनम् । ८६

३६ सुधर्मासमातद्द्वारादिमुखमण्डपप्रेक्षा

गृहमण्डपाक्षपाटकमणिपीठिकासिंहास-

नस्तूपजिनप्रतिमाचैत्यवृक्षमहेन्द्रध्व-

जनन्दापुष्करिणीमनोगुलिकादिचैत्य-

स्तम्भफलकनागदन्तसमुद्रकजिनस

क्थितस्पृज्यतावर्णनम् । ९२

३७ देवसैन्यवर्णनम् । ९३

३८ क्षुरकमहेन्द्रध्वजवर्णनम् । ९४

३९ सिद्धायतनमणिपीठिकादेवच्छन्दजि-

नप्रतिमाहस्तपादादिस्वरूपच्छत्रधरा-

दिप्रतिमाष्टशतध्वजक्रुच्छुकान्तव-

र्णनम् । ९६

४० उपपातसमाहृदाभिषेकसभाभाण्डा-

लङ्कारिकसभान्यत्रसायसभापुस्तक-

रत्नतटुपकरणादिवर्णनम् । ९७

४१ सूर्याभस्योत्पत्तिः, पूर्वश्रेयआदिवि-

चारजिनप्रतिमासक्थिपूजनफलम् । १०४

४४ जलावगाहाभिषेकसभागमनाष्टसह-

स्रसौवर्णकलशादिवैक्रियक्षीरोदपुष्क-

रोदमागधादितीर्थजलहृदनदीमलम्

त्तिकाक्षुरकहिमवदादितुचराद्यानयने-

न्द्रत्वाभिषेकगन्धोदकवृष्ट्यादिवाजि-

त्रगीतृत्यादिदेवाशीर्वादस्नानालङ्कार-

परिधानवर्णनम् ४२, व्यवसायसभाग

मन-पुस्तकरत्नवाचनानन्दापुष्करिणी

गमनजलोत्प्लादिग्रहणानि ४३, उ-

त्पलहस्तशेषदेवदेवीयुक्ता, जिनप्र

तिमाप्रणामपूजाऽष्टमङ्गलस्तुतिपुष्प-

प्रकारदक्षिणमुखमण्डपतस्तम्भपङ्क्ति-

स्तूपप्रतिमापूजनसुधर्मसभागमनादि-

व्यवसायसभागमनपुस्तकपूजादि-

वर्णनं त्रिकादिषूद्रघोषणा च ४४ ।

११२

४५ सामानिकाग्रमहिषीर्षदात्मरक्षक-

वर्णनम् । ११३

५५ सूर्याभस्थितिः ४६, तद्भङ्गिप्रा-

सिप्तम्भः ४७ प्रदेशिराजवर्णनं ४८,

सूर्यकान्तादेवीसूर्यकान्तकुमारवर्णनं

४९, ५०, चित्रसागथिवर्णनं ५१,

सप्रभृतस्य चित्रस्य, श्रावस्तीगमनम् ५२, केशिकुमारवर्णनम् ५३, चित्र-
स्य श्रावकधर्माङ्गीकारः ५४, चित्र-
स्य श्रावकधर्मपालनम् ५५ । १२४
६१. चित्रस्य विमजन, श्वेताम्बिकाऽऽगम-
नाय केशिनो विज्ञप्तिः, प्रदेशिनृपस्व-
रूपकथन ५६, स्वोद्यानपालकाय के-
शिकुमारागमने वन्दनाद्युपदेशः ५७,
प्रदेशिसमाचारकथन ५८, केशि-
कुमारागमन, उद्यानपालकवन्द-
नादि वन्दोपनमागमनं च ५९,
प्रदेशिप्रतिबोधविज्ञप्तिः ६०, धर्म-
प्राप्त्यप्राप्तिकारणानि, अध्वव्याजेना-
नयनकथनम् ६१ । १२८

६४ अध्वव्याजेनानयन, जडमूढादिवि-
चारः; आहारादिप्रश्नः, केशिस्वरूप-
कथन जिगमिषा च ६२, आधोऽ-
नघ्निकात्रजीविकप्रश्नः, विचारकथ-
नं च ६३, मतिश्रुतादिज्ञानस्वरू-
पम् । १२१
६६ उपवेशज्ञा, तज्जीवतच्छरीरे पित्र-
नागमः साधन ६५, मात्रनागमेन
जीवाभावसाधनम् ६६ । १३८
७४ अयःकुम्भीचौरदृष्टान्त. ६७, वृद्ध-
स्य पञ्चकण्डकानुत्पादनं ६८, अ-
योभाराद्यवहनं ६९, भारविशेषः,
देहच्छेदेऽदर्शनं ७०, पर्यत्तदपराध-
दण्डनिरूपणं, व्यवहार्यव्यवहारिनि-
रूपणं च ७१, वायोरदर्शनं, धर्मो-

स्तिकायाद्यदर्शन ७२, हस्तिदुन्धुजी-
वसमत्वम् ७३ । परम्परागतमिथ्या-
त्वात्यागेऽयोग्राहिदृष्टान्तः ७४-१४१
८० गृहिधर्मप्रतिप्रतिः ७५, कलाशि-
ल्पधर्माचार्यविनयः ७६, सान्तः-
पुरेण द्वितीयदिने क्षामणं ७७, पश्चा-
दरमणीयतानिवेधः सदृष्टान्तः राज्य-
चतुर्भागाकरणोक्तिः ७८, राज्यचतु-
र्भागाकरण ६९, विषदानं ८०, १४५
८५ आराधना ८१, महाविदेहे दृढप्रति-
ज्ञजन्मादि ८२, कलाग्रहणादि ८३,
निलेपता दीक्षा सिद्धिश्च ८४,
उपसहारः ८५ । १५०

इति श्रीराजप्रश्रीयोपाङ्गवृहद्विपयानुक्रमः

श्रीजीवाजीवाभिगमस्य विषयसूचिः

१	शालभूमिका प्रामाण्यं च	२
२	अभिगमभेदौ	४
३	अजीवाभिगमभेदाः	
४	अरूप्यजीवाभिगमभेदाः	
५	रूप्यजीवाभि०	
६	जीवाभिगमभेदाः	७
७	असंसारसमापन्नभेदाः	८
८	संसारसमापन्नभेदाः	८
९	प्रतिपत्तिभेदाः	९
१०	स्थावरभेदाः	९
११	पृथ्वीकायिकभेदाः	१०
१२-१३	सूक्ष्मपृथ्वीकायिकभेदाः	१०
१४-१५	इलक्षणबादरपृथ्वीकायौ	२२

१६	अष्कायभेदाः	२४
१७	बादराष्कायभेदाः	२४
१७-१८	वनस्पतिभेदाः, सूक्ष्मवनस्पति- भेदाः	२५
१९	बादरवनस्पतिभेदाः	२६
२०	प्रत्येकवनस्पतिभेदाः	२६
२१	साधारणबादरवनस्पतिभेदाः	२७
२२	त्रसभेदाः	२७
२३	तेजस्कायभेदाः	२८
२४	सूक्ष्मतेजस्कायभेदाः	२८
२५	बादरतेजस्कायभेदाः	२८
२६	वायुकायभेदाः	२९
२७	औदारिकत्रसभेदाः	३०
२८	द्वीन्द्रियभेदाः	३०
२९	त्रीन्द्रियभेदाः	३१
३०	चतुर्न्द्रियभेदाः	३२
३१	पञ्चेन्द्रियभेदाः	३३
३२	नैरयिकभेदाः	३५
३३	तिर्यक्पञ्चेन्द्रियभेदाः	३५
३४	समूर्च्छिमभेदाः	३६
३५	जलचरभेदाः	३७
३६	समूर्च्छिमपञ्चन्द्रियतिर्यग्भेदाः	३७
३७	गर्भजतिर्यग्भेदाः	३८
३८	गर्भजजलचरतिर्यग्भेदाः	३८
३९	गर्भजस्थलचरभेदाः	३९
४०	गर्भजखेचरभेदाः	४०
४१	मनुष्यभेदाः	४१
४२	देवभेदाः	४२

४३	त्रसस्यावरस्थितिभेदाः इति प्रथमा प्रतिपत्तिः	५०	५६	पुरुषात्पबहुत्वभेदाः	७१	६९	पृथ्वीकाण्डादिभेदाः	८८	श्रीजीवा० विषयसूचिः
४४	जीवास्त्रिभेदाः	५२	५७	पुरुषवेदस्य स्थितिभेदाः	७४	७०	नारकावाससंख्याभेदाः	८९	
४५	स्त्रीभेदाः	५२	५८	नपुंसकभेदाः	७४	७१	घनोदध्यादिभेदाः	९०	
४६	स्त्रीवेदस्थित्यादिभेदाः	५३	५९	नपुंसकस्थित्यन्तरभेदाः	७५	७२	काण्डाद्यन्तरभेदाः	९०	
४७	तिर्यक्स्त्रीस्थित्यादिभेदाः	५४	६०	नपुंसकानामरूपबहुत्वभेदाः	७९	७३	रत्नप्रभाकाण्डादिद्रव्यस्वरूपभेदाः	९१	
४८	सामान्यविशेषतया स्त्रीत्वस्थितिभेदाः	५७	६१	नपुंसके बन्धस्थितिभेदाः	८२	७४	रत्नप्रभादिसंस्थानभेदाः	९२	
४९	स्त्रीणामन्तरभेदाः	६१	६२	वेदानामरूपबहुत्वभेदाः	८३	७५	रत्नप्रभादीनामलोकावाधादिभेदाः	९४	
५०	स्त्रीणामल्पबहुत्वभेदाः	६२	६३	वेदाना स्थितिभेदाः	८७	७६	घनोदधिबाहल्यमानभेदाः	९५	
५१	स्त्रीवेदबन्धस्थितिभेदाः	६४	६४	वेदानामरूपबहुत्वभेदाः	८७	७७	रत्नप्रभासर्वजीवपुद्गलोत्पादः	९७	
५२	पुरुषभेदाः	६४	६५	इति द्वितीया प्रतिपत्तिः		७८	रत्नप्रभायाः शाश्वतेतरत्रे भेदौ	९८	
५३	पुरुषस्थितिभेदाः	६५	६५	जीवाश्चतुर्भेदाः	८८	७९	काण्डाद्यन्तरवर्णनम्	१००	
५४	पुरुषवेदस्य स्थितिभेदाः	६५	६६	नारकाणा पृथ्वीनां भेदाः	८८	८०	रत्नप्रभादीनामरूपबहुत्वभेदाः	१०१	
५५	पुरुषवेदस्यान्तरभेदाः	६७	६७	नारकाणा पृथ्वीना नामगोत्रभेदाः	८८	८१	नरकावासस्थानभेदाः	१०२	
		६९	६८	बाहल्यभेदाः	८८	८२	नरकावाससंस्थानभेदाः	१०४	॥ १५ ॥

८३	नरकावासानां वर्णभेदाः	१०६	९७-१०२	तिर्यग्योनिभेदाः	१३३	भवनानि भेदश्चः	१६६
८४	नरकावासानां महत्त्वं	१०८	१०३-१०४	तिर्यक्कलीपुंभेदाः	१४२	१२० नागादिकुमाराणां भवनभेदाः	"
८५	नरकावासाधिकारः	१०९	१०५	मनुष्यभेदाः	१४३	१२१ वानमन्तराणां भवनभेदाः	१७१
८६	उपपातसंख्याऽवगाहनाभेदाः	११०	१०६	संमूर्च्छिममनुष्यभेदाः	"	१२२ ज्योतिष्काणां भवनभेदाः	१७४
८७	नारकाणां संहननसंस्थानगन्धाद्या भेदाः	११८	१०७	गर्भजमनुष्यभेदाः	१४४	१२३ तिर्यग्लोकद्वीपसमुद्रभेदाः	१७६
८८	नारकाणां आसाहारलेइयाहृष्टिज्ञाना- ज्ञानयोगोपयोगसमुद्घातभेदाः	११८	१०८	अन्तरद्वीपभेदाः	"	१२४ आकारभेदाः	१७७
८९	नारकाणां क्षुत्पिपासभेदाः	११५	१०९	एकोरुक्कमनुष्याणां भेदाः	"	१२५ पद्मवरवेदिका	१८०
९०	नैरयिकाणां स्थितिभेदाः	११६	११०-११३	मनुष्याधिकारः	१५६	१२६-१२७ वनखण्डवर्णनम्	१८५
९१	नारकाणामुद्धर्तनाभेदाः	११६	११४	देवभेदाः	१५८	१२८ विजयद्वारवर्णनम्	२०२
९२-९५	नरकेषु पृथिव्यादिस्पर्शस्वरूप- भेदाः	११६	११५	भवनवासिभेदाः	"	१२९ जंबूद्वीपविजयद्वारवर्णनम्	२०४
९३	तिर्यग्भेदाः	११९	११६	भवनवासिभवनभेदाः	"	१३० विजयद्वारवर्णनम्	२०८
९४	तिर्यग्भेदाः	१२१	११७	असुरकुमाराणां भवनभेदाः	"	१३१ विजयद्वारतोरणभेदाः	२०९
९५	तिर्यग्भेदाः	१२१	११८	चमरस्य पर्षद्भेदाः	१६४	१३२ विजयद्वारचक्रध्वजभेदाः	२१५
९६	तिर्यग्भेदाः	१२१	११९	उत्तरत्यानामसुरकुमाराणां		१३३ विजय० रत्नवर्णनम्	२१६

१३४	विजय० विजयदेववर्णनम्	२१६	१४६	स्पर्शोत्पादपृच्छावर्णनम्	२६१	१५९	वेलन्धरभेदाः	३०९
१३५	विजयदेवराजधानीवर्णनम्	२१८	१४७	उत्तरकुहवर्णनम्	२६२	१६०	अनुवेलंधरराजभेदाः	३१३
१३६	विजयद्वारवनखण्डभेदाः	"	१४८	यमकर्पवर्तवर्णनम्	२८६	१६१	गौतमद्वीपवर्णनम्	३१४
१३७	विजयदेवसगवर्णनम्	२२६	१४९	नीलवद्भद्रादिवर्णनम्	२८७	१६२	जम्बूद्वीपगतचन्द्रसूर्यवर्णनम्	३१५
१३८	माणवकस्तम्भदेवशयनीय- वर्णनम्	२३०	१५०	काञ्चनपर्वतवर्णनम्	२९१	१६३	लवणगतचन्द्रसूर्यवर्णनम्	३१५
१३९	सिद्धायतनादिवर्णनम्	२३२	१५१	जम्बूद्वीपवर्णनम्	२९३	१६४	धातकीखण्डगतचन्द्रसूर्यवर्णनम्	३१७
१४०	तिर्यग्धिकारे सिद्धायतनम्	२३५	१५२	जम्बूद्वीपवर्णनम्	२९५	१६५	कालोदगतचन्द्रसूर्यवर्णनम्	"
१४१	विजयदेवाभिपकवर्णनम्	२३७	१५३	जम्बूद्वीपे चन्द्रसूर्याधिकार- वर्णनम्	३००	१६६	द्वीपसमुद्रवर्णनम्	३१८
१४२	विजयदेवजिनपूजावर्णनम्	२५२	१५४	लवणसमुद्रवर्णनम्	३०१	१६७	देवद्वीपादिचन्द्रसूर्यद्वीपादि- वर्णनम्	३१९
१४३	विजयदेवपरिवारस्थित्यादि- वर्णनम्	२५९	१५५	लवणे चन्द्रादीना वर्णनम्	३०३	१६८	लवणे वेलन्धराणा उन्निन्नतो	
१४४	वैजयन्तद्वारभेदाः	२६०	१५६	लवणे वेलावृद्धिवर्णनम्	३०५		दत्तादिवर्णनम्	३२०
१४५	वैजयन्तस्यान्तरभेदाः	"	१५७	लवणे जलवृद्धौ कारणं	३०७	१६९	लवणे चन्द्रसूर्यद्वीपादिवर्णनम्	३२१
			१५८	लवणे वेलन्धरवर्णनम्	३०८	१७०	लवणे उद्गोत्सेधो वर्णनम्	३२२

१७१	लवणे गोतीर्थवर्णनम्	३२३	१८४	नंदीश्वरोद्वर्णनम्	३६५	१९७	चन्द्रादिसंस्थानायामादिवर्णनम्	३७८
१७२	लवणस्य विष्कम्भवर्णनम्	३२४	१८५	त्रिप्रत्यवताराः समुद्राः	३६६	१९८	चन्द्रादिवाहानि वर्णनम्	३८०
१७३	लवणसमुद्राधिकारः	३२५	१८६	सह्यमानोऽसंख्यद्वीपवर्णनम्	३७०	१९९	चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतिमत्त्वं	३८२
१७४	धातकीलण्डवर्णनम्	३२७	१८७	लवणोदयुदकवर्णनम्	३७१	२००	चन्द्रा० अल्पमहर्द्धिकत्वं	"
१७५	कालोदधिवर्णनम्	३२९	१८८	समुद्रेषु मत्स्यकच्छपवर्णनम्	३७२	२०१	जम्बूद्वीपे तारान्तरवर्णनम्	३८३
१७६	पुष्करवरद्वीपवर्णनम्	३३१	१८९	द्वीपोदधिमानम्	"	२०२	चन्द्रस्याग्रमहिषीवर्णनम्	"
१७७	समयक्षेत्रवर्णनम्	३३३	१९०	द्वीपसमुद्रवर्णनम्	३७३	२०३	चन्द्रस्य देव्यः	"
१७८	मानुषोत्तरवर्णनम्	३४१	१९१	पुद्गलपरिणामः	"	२०४	सूर्यस्य देवीनां वर्णनम्	"
१७९	अन्तर्बहिश्चन्द्रादीनामूर्ध्वोप- पन्नत्वादिभेदाः	३४२	१२२	देवकृतः पुद्गलग्रहो बालग्रन्थं च	३७४	२०५	चन्द्रस्य स्थितिवर्णनम्	३८५
१८०	पुष्करवरवरुणवरौ	३४७	१९३	चन्द्रादेरधःसमोपरिभागेषु ताराः	३७५	२०६	चन्द्रसूर्याणामस्पृशुत्वं	"
१८१	क्षीरवरक्षीरोदयोर्वर्णनम्	३५२	१९४	ग्रहादिपरिव रवर्णनम्	३७६	२०७	वैमानिकभेदाः	"
१८२	घृतवरघृतोदवरक्षोदोदाः	३५३	१९५	मेरुलोकान्तपरस्परप्राधावर्णनम्	"	२०८	वैमानिके शक्रस्य पर्पटवर्णनम्	३८६
१८३	नंदीश्वरवर्णनम्	३५७	१९६	अन्तर्बाह्योपधस्तानास्ताराः	३७७	२०९	विमानाधारवर्णनम्	३९४

२११-२१२	विमानानामुच्च-संस्थान- वर्णनम्	३२५	२२४	एकेन्द्रियादिभेदस्थित्यन्तराणि	४०८	२३७	सूक्ष्मवादयोरल्पबहुत्व	४१८
२१३	आयामादिवर्णनम्	"	२२५	एकेन्द्रियादीनामल्पबहुत्वं	४१०	२३८	निगोदाधिकारः	४२३
२१४	वैमा० सहनसंस्थानवर्णनम्	३०६	२२६	इति चतुर्थो प्रतिपत्तिः	४११	२३९	निगोदसंख्या	४२४
२१५	देववर्णादिवर्णनम्	"	२२७	पृथ्वीकायभेदाः	"		इति पंचमी प्रतिपत्तिः	
२१६	वैमा० अवधिवर्णनम्	४०८	२२८	पृथ्व्याः स्थितिः	"	२४०	नैरयिकस्थित्यादिवर्णनम्	४२७
२१७	समुद्रघातवर्णनम्	"	२२९	कायस्थितिः	"		इति षष्ठी प्रतिपत्तिः	
२१८	वैमानिकानां विभूषावर्णनम्	४०४	२३०	अल्पबहुत्व	४१३	२४१	प्रथमसमयनैरयिकादिवर्णनम्	४२९
२१९	वैमानिकानां कामभोगवर्णनम्	"	२३१	स्थितिः	"		इति सप्तमी प्रतिपत्तिः	
२२०	वै० स्थितिर्वर्णनम्	"	२३२	सूक्ष्मस्य कायस्थितिर्वर्णनम्	४१४	२४२	पृथ्यादेः कायादिस्थितिः	४३१
२२१	वै० उद्भवनावर्णनम्	४०६	२३३	सूक्ष्मस्यान्तरवर्णनम्	"		इत्यष्टमी प्रतिपत्तिः	
२२२	वै० जीमानां स्थितिर्वर्णनम्	"	२३४	सूक्ष्मस्याल्पबहुत्वं	४१५	२४३	प्रथमसमयिकादीनां स्थितिकाय- स्थित्यन्तराल्पबहुत्वं	४३३
२२३	वै० अल्पबहुत्वं	"	२३५	वाद्दरस्य स्थितिर्वर्णनम्	४१७	२४४	सर्वजीवाभिगमे सिद्धासिद्ध- भेदाः	४३६
	॥ इति तृतीया प्रतिपत्तिः		२३६	वाद्दरस्यान्तरं	४१८			

२४५	सर्वजीवानां सेन्द्रियकायवेद- कपायलेदयामेदाः	४३७	२५६ सर्व० त्रसादिवर्णनम्	४४९	२७१ सर्व० दशविभत्वं पृथ्यादिभिः
२४६	सर्वजीवज्ञानस्थितिः	४३९	२५७ " मनोयोगादिवर्णनम्	"	प्रथमाप्रथमसमयनाराकादिभिश्च ४६४
२४७	सर्वजीवाहारकेतरस्थिति- वर्णनम्	४४०	२५८ " स्त्रीवेदादिवर्णनम्	४५०	२७२ सर्वजीवदशविधत्वमुपसहारः ४६६
२४८	सर्वजीवमापकसशरीरेतखर्णनम् ४४३	४४३	२५९ -२६४ सर्वजोवचातुर्विधे चक्षुर्दर्शनादिवर्णनम्	४५१	इति जीवाजीवाभिगमस्य विषयसूचिः ।
२४९	सर्व० चरमेतखर्णनम्	४४४	२६५ -२६६ सर्व० सप्तविधत्वं काय- लेख्यावर्णनम् च	४५७	श्रीजीवाजीवाभिगमस्य बृहद् विषयानुक्रमः
२५०	सम्यग्दृष्ट्यादिवर्णनम्	४४५	२६७ सर्व० अष्टविधत्वं ज्ञानज्ञाने	४५९	सूत्राणि २७३; सूत्रगाथाः ३३*
२५१	सर्वजीवत्रैविध्ये परिचादिवर्णनम् ४४६	४४६	२६८ सर्व० नारकतिर्यग्योनितिर्यग्- योन्यादिभेदाः	४६०	मङ्गलं, प्रयोजनाद्युपन्यासः, द्वीप- समुद्रनामग्रहणस्य मङ्गलता, मङ्गल- त्रयम् ।
२५२	सर्व० पर्याप्तापर्याप्तवर्णनम्	४४७	२६९ सर्व० नवविधत्वमिन्द्रियगति- सिद्धमेदाश्च	४६१	१ जिनमतादिविशेषणं जीवाजीवा- भिगमाध्ययनं स्थविरप्रणीतम् ।
२५३	सूक्ष्मवादखर्णनम्	४४८	२७० सर्व० प्रथमाप्रथमसमय- नाराकादिभिः	४६२	२ जीवाजीवाभिगमौ
२५४	सर्व० त्रैविध्ये संज्ञित्वादि- वर्णनम्	४४८			
२५५	सर्व० भव्यत्वादिवर्णनम्	४४९			

- ५ रूप्यरूप्यजीवाभिगमौ ३, धर्मास्तिका-
यादयोऽरूपिणः (१०) ४, रुक्म्या-
दयो रूपिणः ५, (धर्मास्तिकायादि-
सिद्धिः क्रमोपन्यासप्रयोजनम्) । ७
७ संसारससारसमापन्नजीवाः ६, अन-
न्तर(१५) परस्परसिद्धभेदाः ७ । ८
८ संसारसमापन्नं प्रतिपत्तिनयकम् । ९
९ त्रसस्थावराः । ”
१० पृथिव्यचक्रनस्पतयः स्थावराः । ”
११ सूक्ष्मवाटरपृथ्वीकायिकाः । १०
१२ पर्याप्तापर्याप्तसूक्ष्माः (पर्याप्तिस्वरूपं,
शरीरावगाहनादीनि गत्यागत्यादीनि
च द्वाराणि) । ११
१३ शरीरावगाहनसंहननसंस्थानकपाय-

- सञ्ज्ञालेश्वेन्द्रियसमुद्घातसञ्ज्ञिवेद-
पर्याप्तपर्याप्तिहृष्टिदर्शनज्ञानयोगोप-
योगाः, अनन्तप्रदेशत्वाद्याहारस्वरूपं
आगतिस्थितिमरणसमुद्घात-
गतिनिरूपणं(स्वरूपानामोगसंभवात्
पृच्छा, शरीरपञ्चकव्युत्पत्त्यादि,
संहननसंस्थानवर्णनं, इन्द्रियस्वरूपं,
समुद्घातस्वरूपम्) । २१
१५ सूक्ष्मखरगारपृथिवीकायिकाः १४,
सूक्ष्मा सप्ता, पर्याप्ताऽपर्याप्ता च,
शरीरादीनि द्वाराणि, (चत्वारिंशत्-
खरपृथ्वीभेदाः) १५ । २४
१७ अपृकायस्य सूक्ष्मादिभेदादिः १६,
नादरेऽवश्यायादिभेदादिः । २५

- २२, १-४* सूक्ष्मवाटरवनस्पतयः १८,
पर्याप्तापर्याप्ताः १९, प्रत्येकसाधारण-
भेदौ २०, वृक्षगुल्मादि(१२)-
भेदाः, (एकवहुबीजादि, एकाखण्ड-
शरीरसमाधानम्) २१; १-४*,
आलुकादिसाधारणभेदादिः २२ । २८
२६ तेजोवायुद्वीन्द्रियाद्यास्तसाः २३,
सूक्ष्मवाटरतेजसी २४, सूचीकलाप-
संस्थिताः सूक्ष्माः २५, नादरेऽङ्गा-
रादिभेदादिः २६ । २९
२७ सूक्ष्मवाटरा वायवः, प्राचीनादि-
भेदादिः, पताकासंस्थानं, शरीर-
चतुष्कम् । ३०
२९ द्वीन्द्रियाद्याः (४) उदारमृत्ताः २८,

क्षीन्द्रियाणां पुलाकृम्यादिभेदादिः

३९ ।

३१ त्रीन्द्रियाणामौपयिकादिभेदादिः

३०, चतुरिन्द्रियाणामन्धिकादि-

भेदादिः ३१ ।

३३ पञ्चेन्द्रियाणां नारकादयो भेदाः

३२, नारकाणां रत्नप्रभादिभेदादिः

संहननविचारः) ।

३७ संमूर्च्छिमगर्भजास्तिर्यञ्चः ३४, जल-

स्थलखेचराः ३५, संमूर्च्छिमजल-

चराणां मत्स्यादिभेदादिः ३६,

संमूर्च्छिमस्थलचराणां चतुष्पदोरःपरि-

सर्पभुजपरिसर्पभेदाः, चर्मपक्ष्यादि-

भेदादिः ३७ ।

४१.

३९ गर्भजा जलचराद्याः ३८, जलचराणां

मत्स्यादिभेदादिः ३९, (संहनन-

संस्थानवर्णनम्) ।

४१ स्थलचराणामेकखुरादिचतुष्पदोरगादि-

परिसर्पभेदादिः ४०, चर्मपक्ष्यादयः

खेचराः ४१ ।

४२ संमूर्च्छिमगर्भजमनुष्याणां शरीरादिः

(केवले शेषज्ञानागमः) ।

४३ असुरकुमारादिभवनपत्यादिदेवानां

शरीरादिः ।

४४ स्थावराणां त्रसानां च भवकाय-

स्थित्यन्तरारूपबहुत्वानि (संख्यबहारे-

तरराशी) ।

॥ इति प्रथमा प्रतिपत्तिः ॥

४६ स्त्रीपुंनृपुंसकाः ४५, मत्स्यादिचतु-

ष्पद्यादिपरिसर्प्यादिचर्मपक्षिण्यादि-

तिर्यक्कर्मभूमिजादिनारीभवनपत्यादि-

देवस्त्रियः ४६, (स्त्रीत्वादिलक्षणम्) ।

४८ स्त्रीवेदस्थितावादेशः पञ्चकम् ४७,

सप्रभेदजलचरस्थलचरखचरकर्म-

भूमिजादिभवनपत्यादिस्त्रीस्थितिः

४८ ।

४९ स्त्रीवेदसप्रभेदतिर्यग्मनुष्यदेवस्त्री-

कायस्थितिः ।

५० स्त्रीसप्रभेदतिर्यगादिस्त्रीवेदान्तरम् ।

५१ तिर्यङ्मनुष्यदेवस्त्रीणां स्वस्थानेऽन्यो-

न्यं चाल्पबहुत्वम् ।

५२ स्त्रीवेदबन्धाबाधानिषेकप्रकाशः ।

६५

- ५४ तिर्यगादयः पुरुषा ५३, तिर्यक्-
पुंवेदादिस्थितिः ८४ । ६७
५५ सप्तभेदपुरुषवेदकायस्थितिः । ६९
५६ सप्तभेदानुत्तरान्तपुरुषवेदान्तरम् । ७१
५७ स्वस्थाने परस्परं च पुरुषणामल्प-
बहुत्वम् । (कृष्णपाक्षिकादिलक्षण,
देवानामल्पबहुत्व च) ७४
५८ पुंवेदबन्धस्थित्यादिः । ”
५९ नारकादयो नपुंसकभेदाः । ७५
६० सप्तभेदनारकादिनपुंसकस्थिति-
रन्तरं च । ७९
६१ स्वस्थाने परस्परं चाल्पबहुत्वम् । ८०
६२ नपुंसकस्थित्यादिः । ”
६३ सप्तभेदत्तोपुनपुमकानां स्वस्थाने

- परस्परं चाल्पबहुत्वम् । ८७
६५, ६८ खयादिकायस्थितिः ६४,
मनुष्यतिर्यग्देवानां स्त्रीपुंसयोरल्प-
बहुत्वम् ६२, ५९ ८८
॥ इति द्वितीया प्रतिपत्तिः ॥
६९, ६८ नारकादयो भेदाः (४) ६६,
प्रथमाद्याः पृथिव्यः ६७, पृथ्वीनां
नामगोत्राणि ६८, तासां बाहल्यादि,
६२, ६१ । ८९
७० खरकाण्डपङ्कजबहुलकाण्डानि, रत्न
काण्डादिभेदाः (१६) । ९०
७१, ७२ रत्नप्रभादिषु नरकावाससख्या
७१, ७ रत्नप्रभाद्येषां घनोदध्यादि ।
(आवलिकामप्रविष्टप्रकीर्णकनरक-

- सत्याः) ७२ । ९१
७३ खररत्नादिपङ्कजबहुलरत्नप्रभादि-
घनोदधिघनवातादिबाहल्यम् । ९२
७४ रत्नप्रभादिषु सर्ववर्णादिपुद्गलसत्ता । ९३
७६ रत्नप्रभाखररत्नादिकाण्डादिशर्करा-
प्रभादिसंस्थानम् ७५, रत्नप्रभादि-
पृथिवीलोकान्ताऽत्राद्याः । ९५
७७ रत्नप्रभादिघनोदध्यादिवलयमानम् । ९७
७८ सर्वजीवपुद्गलानां तद्भूयता । ९८
७९ रत्नप्रभादीनां शाश्वताशाश्वतत्वे । ९८
८० पृथिवीकाण्डघनोदध्याद्यन्तरा-
वाद्यादिः । १०१
८१ पृथ्वीनां परस्परं बाहल्यबुल्य-
त्वादिः । १०२

॥ इति प्रथमो नारकोद्देशः ॥

८२ रत्नप्रभादिषु नरकावासानां स्थानं

स्वरूपं च ।

१०४

८३ रत्नप्रभादिषु आवलिकः प्रविष्टप्रकी-

र्णकानां नानाविधसंस्थानानि आया-

मविष्कम्भादि च ।

१०६

८४ नरकावासानां वर्णगन्धरसस्पर्श-

निरूपणम् ।

१०८

८५ नरकावासानां महत्तानिरूपणम् ।

१०९

८६ नरकावासानां वज्रमयत्वं सर्वजीव-

पुद्गलोत्पत्त्यादिमत्त्वं शाश्वतनाशाश्च-

तत्त्वे च ।

११०

८७, ८८ रत्नप्रभादिष्वसज्जितसरिस्पृष्टादि-

भ्य आगतिः, असंख्यातोत्सर्पिणी

समयराशेशाधिक्यं भवधारणीयोत्तर-

वैकिप्रतनुमानं च (प्रतिप्रस्तुतम्) ।

११३

८८ संहननसंस्थानशरीरतद्वर्णगन्ध-

स्पर्शाः ।

११४

८९ अनिष्टोच्छ्वासलेदश्यादृष्ट्यादिः ।

११६

९० नारकाणां क्षुत्पिपासामुद्रादिवैकिप्र-

शीतोष्णवेदनानिरयानुभावानुभवाः राम-

जमदश्यादि(५)वर्णनं वेदनादिश्च ।

१२५

९२ नारकाणां जघन्योत्कृष्टस्थिती

९१,

(प्रतिप्रस्तुत) गतिश्च २२ ।

१२७

९५, ९१३ नारकाणां पृथ्व्यादिस्पर्शः,

प/स्पर्पं पृथ्व्यादीनां क्षुल्लकत्वादिः

९३,

सर्वजीवानामनन्तश उन्पत्तिः, महा-

वेदनादिमत्त्वं च २४, पृथिव्यवगाह-

संस्थानादिसङ्ग्रहगाथाः

९५, ९-

१३१

१२२

॥ इति द्वितीयो नारकोद्देशः ॥

९६, १४-२४ नरके पुद्गलानुभवः, केश-

वादीनामुत्पत्तिः, वैक्रियकालः, पुद्गला-

द्यनिष्ठता, सातकालः, योजनपञ्च-

शत्युत्पातः ।

१३१

॥ इति तृतीयो नारकोद्देशः ॥

॥ इति नारकाः ॥

९७ एकेन्द्रिये पृथ्वीकायसूक्ष्मादिभेदाः;

खेचरादियोनिसंग्रहश्च ।

१३२

९८ तिरश्चां लेदश्यादिः, कुलकोटियोनि-

स्थितयः ।

१३५

९९ गन्धशतानि, पुष्पजातयः, वल्लीला-

गतानि, हरितक्रायाः, चतुरशीति-

लक्षाः । १३७

१०० स्वस्तिकादि(११)विमानाना

महत्त्वं देवतिक्रमकालश्च, तथैवा-

र्चिरादिकामादिविजयादीनामपि,

(चण्डादिगतिमानम्) । १३२

॥ प्रथमस्तिर्यग्गुद्देशः ॥

१०१ पृथ्वीक्रायाद्याः सर्वार्थसिद्धान्ताः ।

१३९

१०३ रुद्रगाद्याः पृथ्वीभेदाः (६)

एकद्व्यद्वयचतुर्द्वयपञ्चशष्टाद-

शद्व्यत्रिंशतिसहस्रस्थितिकाः,

नारकादीना स्थितिः, सर्वदा

जीवपृथिव्यादित्वम् १०२, पृथ्व्या-

दिनिलेपनविचारः १०३ । १४१

१०४ अविशुद्धासमवहतानगाराविशुद्ध-

लेश्यदेवेतगदिज्ञानादिविचारः । १४२

१०५ सम्यक्त्वमित्यात्रक्रिययोर्न यौग-

पद्यम् । १४३

॥ द्वितीयस्तिर्यग्गुद्देशः ॥

१०७ समूर्च्छिमगर्भजमनुज्याः १०६,

समूर्च्छिममनुज्योत्पत्त्यतिदेश-

१०७ । १४४

१०९ कर्मभूमिजादिगर्भजाः १०८,

एकोरुकाद्या आन्तरद्वीपकाः १०९ ।

१४४

११० एकोरुकस्य स्थानायामादि-

वेदिकान्तम् । १४५

१११ वनखण्डतृणवर्णादिवापीप्रभृतिः । १४५

११२ एकोरुके भूमिभागः, उद्दालकहेरु-

वालतिलकाद्यावृक्षाः, पद्माद्या लताः,

सेरिकाद्या गुल्माः, वनराज्यः, मत्ता-

ज्जाद्याः कल्पवृक्षाः (१०), तत्र नरा-

णामाकाग्लक्षणस्वरसहननाद्युच्छ्रय-

पृष्टकरण्डकाहारार्थाः, नारीणामपि,

पृथ्वीपुष्पफलाहारास्ते, पृथ्व्यादी-

नामास्वादः, वसतिवृक्षाणा संस्थानं,

गृहादिग्रामाद्यम्याद्यभावः, हिरण्या-

द्यनुपभोगः, राजदासाद्यभावः, मात्रा-

दिप्रेमाल्पं, अरिमित्राऽऽवाहेन्द्रमह-

नटप्रेक्षाशकटाशसिंहशालीगर्त्ता-

स्याणुरशहिमहदण्डद्विन्महा-

युद्धातिवर्षाय आकरादिभावाभाव- विचारः, आयुर्गतिप्रसवाः, आभा- षिकादीनामपि । १५५	१२० बलिनः पर्यन्तदेवस्थित्यादयः । १६७
११४, २६* ह्यकर्णचिन्तरद्वीपानां स्व- रूपम् ११३, २५-२६* हेम- वतभरतार्यादिभेदाः ११४ । १५८	१२१ नागकुमारादिभवनानि, धरणादि- पर्यदादिः । १७१
११८ भवनवास्यादयो देवाः ११५, असुरकुमारादिभेदातिदेशः ११६, भवनवासादिस्थानातिदेशः ११७; असुरकुमारादिभवनस्थानातिदेशः ११८ । १६४	१२२ व्यन्तरतदिन्द्रस्थानपर्यदादिः । १७४
११९ चमरस्य समिताचण्डा जाताः पर्यदः, तद्देवसाहस्यः, तद्देवदेवीस्थितिश्च । १६६	१२३ ज्योतिष्कानां स्थानादिः । १७६
	१२४ द्वीपसमुद्रस्थानसंख्यामहस्वसंस्थाना- ऽऽकारादिः । १७७
	१२५ जम्बूद्वीपाऽऽयामादिजगतिजाल- कटकवर्णनम् । १७८
	१२६ पद्मवरवेदिकावर्णनम् । १८३
	१२७ वनखण्डवर्णनम् । १९५
	१२८ वापीत्रिसोपानतोरणाष्टमङ्गलोत्पा- तादिपर्वतहंसासनाद्यादिगृहादिजाति- मण्डपादिहंसासनादिवर्णनम् । २०१

१३० विजयादीनि द्वाराणि १२९, विजयद्वारकपाटादिनैवेधिविक्रयादि- वर्णनम् १३० । २०८	१३१ प्रकण्ठकपासादाव्रतसंक्रमणिपीठिका- सिंहासनादिवर्णनम् । २११
१३२ नैवेधिकायां तोरणनागदन्तहयसंघाट- कभृङ्गारादर्शस्थालपात्रीसुप्रतिष्ठ- कमनोगुलिकाफलकशिक्षकावात- करकरत्नकरण्डकहयकण्ठपुष्पचङ्गे- र्यादिपुष्पपटलसिंहासनच्छत्रचा- मरतिलसमुद्रादिवर्णनम् । २१५	१३३ अष्टशतचक्रध्वजादि-भौमनवक- सिंहासनविजयदेव-तत्सामानि- काग्रमहिषीपर्यदारक्षकदेवदेवी-

१४२ विजयदेवस्योपपातः, सकलः,
जिनप्रतिभासावश्यवर्त्तमानसंकल्पः,
देवदूष्यपरिधानजलमज्जेन्द्राभि-
वेकोपस्थापनाऽऽज्ञासौवर्णिकादि-
फलशालादिवैकियपुष्करोदकादि-
मागभादितीर्थमृत्तिकागाङ्गादिजल-
हिमवदानितुन्वरादिपद्मद्वानुदकादि-
भद्रशालादितुन्वरादिग्रहणोपस्थापन-
सामानिकाशिशेकगन्धोदक-
वर्षादिद्रुतादि(३२)नाट्याशी-
वर्षादाः । २४८

१४३ अलङ्कारसभाप्रवेशगात्ररूपशुभ-
लनिवेशद्वारादिपरिधानचतुर्विधा-
लङ्कारविशूषणव्यवसायसभाप्रवेश-

युक्षतिलफलवकादिदुक्षमहेन्द्रराज-
पुष्करिणीनिसोपानमनोगुलिका-
भोगानशीफलकभूपचटिकानर्णनम् । २३०

१३९ माणवकैलयास्तभायामादिफलक-
सिक्कयसमुद्रकार्चनीयजिनसन्नि-
महामणिपीठिकामहासिंहासन-
देवशयनीयादिनर्णनम् । २३२

१४० सिद्धायतगादिदेवच्छन्दकजिन-
पतिमातदवयवनागरभारादिप्रतिगा-
घण्टानन्दनफलशालादिनर्णनम् । २३५

१४१ उपपातसभादेवशयनीयाशिशेकाल-
ङ्कारव्यवसायसभावनर्णनं, पुस्तकरत्न-
वर्णनं च । २३७

भद्रासनवर्णनम् । २१६

१३४ अष्टमङ्गलकृष्णचामरादिवर्णनम् । २१७

१३५ विजयदेवसामानिकादिनर्णनम् ॥

१३६ विजयदेवराजभानीतत्प्राकारकपि-
शीर्षकद्वारनैवेधिकीप्रकण्ठकसप्त-
दशभौमादिवर्णनम् । २२०

१३७ अशोकसप्तपर्णचम्पकचूतवन-
प्रासादावतसक्तदधिष्ठायकवर्णनम्,
उपरिकालग्रनायामादिमणिपीठि-
कादिप्रासादावतंसकृतत्परिवार-
प्रासादोच्चत्वादिवर्णनम् । २२३

१३८ सुवर्गसभाऽऽयामादितद्द्वारमुल-
मण्डपाष्टमङ्गलप्रेक्षागृहाशाटकमणि-
पीठिकानैव्यास्तपूजिनप्रतिमानैव्य-

पुस्तकरत्नवाचनधार्मिकव्यवसाय-
ग्रहणनन्दापुष्करिणीप्रवेशहस्तादि-
प्रक्षालनपद्मादिग्रहणसिद्धायतना-
गमनपरिवारानुगमनदेवच्छन्दा-
गमनजिनप्रतिमाप्रणामप्रमार्जन-
स्नानदेवदूष्यनिवेशपुष्पाद्याभरणा-
न्तारोहणाष्टमङ्गललेखनधूपोत्क्षेप-
महावृत्तस्तुतिशक्रस्तवपाठमण्डला-
लेखनद्वारचेटीप्रमार्जनानाद्विचैत्यस्तूप-
प्रमार्जनानादिजिनप्रतिमाप्रणामादि-
सुधर्मसमाप्रवेशजिनसन्निधयप्रक्षा-
लनार्चनादिशुद्धाटकाद्यर्चनादेश-
सिंहासनोपवेशनानि । २५८
१४४ सामानिकाद्युपवेशनं, पल्योपम-

स्थितिः ।

१४६ वैजयन्तजयन्तापराजितद्वाराणि

१४५, परस्परद्वाराबाधा १४६ ।

२६१

१४७ द्वीपसमुद्रप्रदेशस्पर्शजीवोत्पाताद्याः ।

२६२

१४८ उत्तरकुरुवर्णनं, पद्मगन्धादिमनुष्या-

नुसर्जना ।

२८५

१४९ यमकपर्वताधिकारः ।

२८७

१५० नीलवद्भद्रतत्पद्मभवनद्वारमणि-

पीठिकापरिवारपद्मकर्णिकापरिरय-

त्रयाणि ।

२९०

१५१ काञ्चनकपर्वताधिकारः, उत्तर-

२६०

१५२ जम्बूपीठमणिपीठिकासुदर्शनायामा-

दि चैत्यवृक्षवर्णनं च ।

२२५

१५३, २७-२८* शालचतुष्कप्रसादा-

वन्तंसकसिद्धायतनादिपरिवारजम्बू-

सामानिकादिजम्बूवनखण्डपुष्क-

रिणीप्रसादावन्तंसकसिद्धायतन

भवनकूटसिद्धायतनतिलकादिवृक्षा-

ष्टमङ्गलानि, द्वादश नामानि, अना-

द्वतराजधानीवर्णनादिः ।

३००

१५४, २९* जम्बूद्वीपे चन्द्रसूर्यादि

प्रभासनादिः ।

”

॥ इति जम्बूद्वीपाभिकारः ॥

१५२

१५३, २७-२८*

२२५

३००

३००

३००

३००

३००

३००

३००

३००

३००

३००

३००

३००

३००

न्वर्थाः। ३०३

१५६ लवणे चन्द्रादिसंख्या, (लवणे दिवसरात्र्यादिविचारः, दकस्फा-टिकविमानानि ऊर्ध्वलेख्याकृता च)।

३०४

१२७ लवणस्य चतुर्दशष्टम्युद्दिष्ट-

पूर्णिमासु वर्धन, वलयासुखाद्या-

पातालकलशाः, कालाद्या अधि-

ष्टायकाः, त्रयस्त्रिभागाः वाय्वादि-

मन्तः, क्षुल्लकपातालाः, (७८८४)

वायून्नामेनोदकोन्नामः। ३०७

१५८ अहोरात्रे द्विष्टद्विहानी। ३०८

१५९ लवणशिखाविष्कम्भान्तरवाद्य-

वेलाग्रोदकधारकाः (४२७२६०

सहस्राः)

१६०, ३१८ गोस्तूपाद्या वेलन्धर-

नागराजाः, गोस्तूपोदकभास-

गङ्गादकसीमावासपर्वतस्थाना-

यामादिपासादावतसकतद्राजयानी

वर्णनम्। ३१३

१६१ कर्कोटकादिवेलन्धरतदावासादि। ३१४

१६२ सुस्थितसत्कगौतमद्वीपभौमेय-

विहारादिवर्णनम्। ३१५

१६७, ३३॥ जवृद्धोप-१६३ अभ्यन्तर-

वाद्यलवण-१६४ धातकी-

खण्ड-१६५ कालोदकपुष्कर

वरादिचन्द्रसूर्यद्वोपराजधान्यः

१६६, जम्बूद्वीपलवणादिद्वीप-

समुद्रनामानि १६७, ३३॥ ३१९

१७० देवद्वीपसमुद्रस्वयम्भूरमणद्वीप-

चन्द्रसूर्यद्वीपराजधान्यः १६८,

लवणे एव वेलन्धराद्याः १६०,

उच्छिन्नतक्षुभिजलता लवणे वर्षा

च, बाह्याः पूर्णाः १७०। ३२२

१७१ लवणे उद्बेधपरिवृद्धिः (९५)। ३२३

१७२ लवणे गोतीर्थतद्विरहितक्षेत्रो-

दकमालप्रमाणम्। ३२४

१७४ लवणसंस्थानविष्कम्भोद्बेधोत्सेध-

सर्वाग्राणि १७३, जम्बूद्वीपानु-

त्पीडनेऽर्हदादिदेवलोकानुभावाद्वि-

कारणम्। (लवणघनप्रतरगणितानि)

१७४। ३२६

१७५, ३५* धातकीखण्डसंस्थान-
चक्रवालविष्कम्भद्वारचतुष्कराज-
धानीद्वारावाधाप्रदेशस्पशान्वर्थ-
निमित्तधातकीमहाधातकीतेदेव-
चन्द्रादिप्रभासादि । ३२९
१७६, ३२* कालोदसंस्थानादि । ३३१
१७७, ४८* पुष्करवरद्वीपसंस्थानादि
मानुषोत्तराभ्यन्तरपुष्करार्द्ध-
संस्थानादि च । ३३४
१७८, ८३* समयक्षेत्रविष्कम्भचन्द्र-
सूर्यप्रभासादिचन्द्रादित्यादिपिटक-
पङ्क्तिमेरुप्रदक्षिणामण्डलसंक्रमसुख
दुःखकारणचारविशेषतापक्षेत्रवृद्धि-
हानिसंस्थानचन्द्रवृद्धिहानिराहुस्थान-

शुक्लकृष्णभागपरक्षेत्रचन्द्रादि-
संख्याकरणान्तराभिहितपुण्य-
योगाः, (प्रव्रज्यादौ शुभयोगैषणा) । ३४१
१७९ मानुषोत्तरस्योच्चत्वोद्धमूलादि-
विष्कम्भपरिरयान्वर्थाः, वर्षवर्ष-
धरादयोऽवर्गोव । ३४५
१८० अन्तर्मनुष्यक्षेत्रस्य चन्द्रादीनां
चारोपपन्नक्रादित्वं, इन्द्रच्युतौ
सामानिकोपसंपत्, षण्मासी-
विरहः, बहिश्चारस्थितिक्रवादि । ३४७
१८१ पुष्करोदवरुणवररुणोदवर्णनम् । ३५२
१८२ क्षीरक्षीरोदवर्णनम् । ३५३

१८३ घृततरघृतोदक्षोदवरक्षोदोद-
स्वरूपम् । ३५५
१८४ नन्दीश्वरद्वीपञ्जनकपर्वतसिद्धा-
यतनमुखमण्डपप्रक्षारगृहमण्डपस्तूप-
जिनप्रतिमाचैत्यवृक्षा नन्दोत्तराद्याः
पुष्करिण्यश्च, भवनपत्यादीनां
चतुर्मास्यादिषु कल्याणकादिषु
च महिमकरणम् । ३६५
१८५ नन्दीश्वरोदवर्णनसंक्षेपः । ३६६
१८६ अरुणारुणोदारुणवारुणवारोदा-
रुणवरावभासकुण्डलादिरुचकादि-
हारादिप्रभृतिस्ूर्यवरावभासदेव-
देवोदस्वयम्भूरमणोदान्ताः । ३७०
१८८ द्वीपसमुद्रनामसंख्ये १८७,

लवणपुष्करक्षीरघृतक्षोदस्वयम्भू-
रमणोदजलरसाः, लवणवरुण-
क्षीरघृतोदाः प्रत्येकरसाः, काल-
पुष्करस्वयम्भूर्मणोदा उदकरसाः,
शेषाः क्षोदरसाः १८८। ३७२
१८९ लवणकालोदस्वयम्भूरमणा बहु-
मत्स्या, ससनवार्द्धत्रयोदशलक्ष-
मत्स्ययोनिकाः, पञ्चसप्त-
दशयोजनमत्स्याश्च । ३७२
१९१ शुभनामादिमन्तः सार्द्धद्वयोद्धार-
सागरसमयमाना द्वीपसमुद्राः
१९०, पृथ्व्यादिपरिणामाः,
सर्वजीवोत्पादोऽनन्तशः १९१। ३७३
॥ इति द्वीपसमुद्राः ॥

१९२ इन्द्रियविषयपरिणामाः । ३७४
१९३ पुद्गलः पूर्वपश्चात्तशीघ्रमन्दगतिः,
देवस्य ग्रन्थिदीर्घह्रस्वाना करणम् । ३७५
१९४ ८५-यथाऽऽतपश्चन्द्रसूर्ययोरुपर्यादौ
तारकाः १९४, चन्द्रसूर्य-
परिवारे ग्रहनक्षत्रतारकाः १९५, ३७६
८५
१९७ मेरुलोकान्तज्योतिश्चक्रावाधा,
अधस्तनोपरितनतारकचन्द्रसूर्य-
रत्नप्रभावाद्या १९६, बाह्याभ्यन्तर-
नक्षत्राऽवाधा १९७। ३७८
१९८ चन्द्रादिविमानसस्थानबाहल्यादि । ३८०

१९९ चन्द्रविमानबाहकदेववर्णनम् । ३८२
२०१ चन्द्रादिषु शीघ्रमन्दगत्योः २००,
अल्पमहर्ध्वोश्च स्वरूपम् २०१। ३८३
२०५ तारकयोरन्तरं २०२, चन्द्र-
स्याग्रमहिष्यः २०३, जिन-
सन्निधिसद्भावाच्च सूर्यसमायां
मैथुनं २०४, सूर्यस्याग्रमहिष्यः
२०५। ३८५
२०६ चन्द्रादीना स्थित्याद्यतिदेशः । ”
२०७ चन्द्रादीनामल्पबहुत्वम् । ”
॥ इति ज्योतिष्कोद्देशः ॥
२०८ वैमानिकविमानदेवस्थानाद्यति-
देशः । ३८८

२०९ शकेशानदीना समिताचण्डाजताः
पर्यदः, तदेवदेवीप्रमाणस्थिती । ३१०
॥ प्रथमो वैमानिकोद्देशः ॥
२१० विमानप्रतिष्ठानम् । ३१४
२१६ सौधर्मादिविमानपृथिवीवाहल्यादि
२११, विमानानामुच्चत्वं २१२,
तेषां संस्थानं २१३, आयासादिवर्ण-
गन्धरसस्पर्शाः, महत्त्वं, किमयत्वं
जीवाद्युपादादि, शाश्वताशाश्वतत्वे,
उत्पादः, समयसंख्या, असंख्यो-
त्सर्पिणीमानता, त्रैवेयकानुचरेषु
पल्यासख्यांशमानता, भवचारणी
योत्तरवैक्रियमानं च २१४, देवानां
संहननसंस्थाने २१५, वर्णगन्ध-

रसस्पर्शपुद्गलपरिणामलेशादृष्टि-
ज्ञानादि । २१६ । ४०२
२१७, ८८* देवानामवधिमानम् । ”
२१८ समुद्घाताः, क्षुत्पिपासाऽभावः,
वैक्रियं, सातर्द्धी । ४०४
२२१ देवदेवीनां विभूया २१९,
कामभोगातिदेशः २२०,
स्थित्यतिदेशः २२१ । ४०५
२२२ कल्पेषु पृथिव्यादितया सर्वजीवो-
त्पातोऽनन्तशः । ४०६
२२४ नारकादिस्थित्यन्तरे २२३,
तेषामल्पबहुत्वं च २२४ । ४०७
॥ द्वितीयो वैमानिकोद्देशः ॥
॥ इति तृतीया प्रतिपत्तिः ॥

२२५ एकेन्द्रियादिभेदाः भोगपर्याप्ता-
पर्याप्तभेदः परापरे स्थिती काय-
स्थितिश्च । ४०९
२२६ ओषपर्याप्तापर्याप्तानां तेषामल्प-
बहुत्वम् । ४११
॥ इति चतुर्थी प्रतिपत्तिः ॥
२२९, ८९* पृथ्व्यादयो भेदाः २३७,
स्थितिः २२८, कायस्थितिरन्तरं च
२२९, ८९* । ४१२
२३१ ओषपर्याप्तापर्याप्तानामल्पबहुत्वं
२३०, सूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तानां
स्थितिः । २३१ । ४१४
२३३ सूक्ष्मादीनां कायस्थितिः २३२,
अन्तरं च २३३ । ४१५

२३४ सूक्ष्मपर्यासापयासानामल्पबहुत्वम् । ४१६
 २३५ बादरपर्यासापर्यासानां स्थितिः । ४१७
 २३६, ९२* बादरबादरपृथिव्यादीनां
 कायस्थितिः । ४१८
 २३७ बादरबादरवनस्पतिनिगोदबादर-
 निगोदानामन्तरम् । ”
 २३८ सप्रमेदसूक्ष्मबादराणामल्पबहुत्वम् । ४२३
 २३९ निगोदमेदाः । ४२४
 २४० सप्रमेदाना निगोदतल्लीवानां
 द्रव्यप्रदेशाभ्यामल्पबहुत्वम् । ४२७
 ॥ इति पञ्चमी प्रतिपत्तिः ॥
 २४१ नारकतिर्यङ्मुखदेवतत्क्षीणा

स्थित्यन्तरालपबहुत्वानि । ४२८
 ॥ इति षष्ठी प्रतिपत्तिः ॥
 २४२ प्रथमाप्रथमसमयनारकादीना
 स्थित्यन्तरालपबहुत्वानि । ४३१
 ॥ इति सप्तमी प्रतिपत्तिः ॥
 २४३ पृथ्व्यादिद्वीन्द्रियादीनां स्थित्यादि । ४३३
 ॥ इत्यष्टमी प्रतिपत्तिः ॥
 २४४ प्रथमाप्रथमसमयैकोन्द्रियादिस्थि-
 त्यन्तरालपबहुत्वानि । ४३५
 ॥ इति नवमी प्रतिपत्तिः ॥
 ॥ इति संमारसमापचाः ॥
 २४५ सिद्धासिद्धयोः स्थित्यन्तरालपबहु-
 त्वानि । ४३६

२४६ इन्द्रियकायवेदकषायलेश्याभेदः
 स्थित्यादि । ४३९
 २४७ ज्ञानोपयोगैः स्थित्यादि । ४४०
 २४८ छद्मस्थभवस्थसयोग्याहारकैतराणां
 स्थित्यादि । (शुद्धकभवादि-
 निरूपणम्) ४४३
 २४९ भाषकाभाषकशरीर्यशरीरस्थित्यादि । ४४४
 २५० चरमाचरमस्थित्यादि ”
 २५१ सम्यग्दृष्ट्यादिस्थित्यादि । ४४५
 २५२ ससारकायपरीचादिस्थित्यादि । ४४७
 २५३ पर्याप्तादिस्थित्यादि । ”
 २५४ सूक्ष्मादिस्थित्यादि । ४४८
 २५५ सञ्ज्ञादिस्थित्यादि । ”

२५७ भव्यादि २५६ त्रसादिस्थित्यादि ।	४४२	२६८ मत्यादिज्ञान्यज्ञानिस्थित्यादि ।	४६०	६-९ ' पटत्रिंशत्पदनामानि	६
२५८ मनोयोग्यादिस्थित्यादि ।		२६९ नारकादिस्थित्यादि ।	४६१	१ प्रज्ञापनाभेदौ	७
(सम्प्रदायप्रामाण्यम्)	४५०	२७० एकेन्द्र्यादिस्थित्यादि ।	४६२	२ अजीवप्रज्ञापनाभेदौ	७
२५९ ह्यादिस्थित्यादि ।	४४१	२७१ प्रथमसमयनारकादिस्थित्यादि ।	४६४	३ अरूप्यजीवप्रज्ञापनाभेदाः	८
२६० चक्षुर्दर्शन्यादिस्थित्यादि ।	४५२	२७२ पृथ्व्यादिस्थित्यादि ।	४६५	४ रूप्यजीवप्रज्ञापनाभेदाः	१६
२६१ संयतादिस्थित्यादि ।	४५३	२७३ प्रथमसमयनारकादिस्थित्यादि ।	४६७	५ जीवप्रज्ञापनाभेदौ	१७
२६२, ९३ ' क्रोधादिस्थित्यादि ।	४५४	॥ प्रशस्तिः ॥		६ असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाभेदौ	१८
२६३ नारकादिस्थित्यादि ।		॥ इति जीवाजीवाभिगमसूत्रविषयानुक्रमः ॥		७ अनन्तरसिद्धप्रज्ञापनाभेदाः	१८
२६४ मतिज्ञान्याद्येकेन्द्र्यादि- स्थित्यादि ।		श्रीप्रज्ञापनायाः विषयसूचि.		(स्त्रीश्रुक्तिसिद्धिः) (१५) (प्रत्येक बुद्धस्वयंबुद्धभेदाः)	
२६५ औदारिकादिस्थित्यादि ।	४५६	१* श्रीवीरजिननतिरूपं मगलम्	२	८ परम्परसिद्धप्रज्ञापनाभेदाः	२३
२६६ पृथ्वीकायिकादिस्थित्यादि ।	४५७	२* आसन्नोपकारितादर्शनम्	४	९ संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाभेदाः (५)	२४
२६७ कृष्णलेश्यादिस्थित्यादि ।		३ ४* आर्यश्याममननं (प्र.)	५	१० एकेन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः (५)	२४
	४५९	५* भगवद्वचोऽनुसारिता	६	११ पृथ्वीकायप्रज्ञापनाभेदाः	२४

१२ सूक्ष्मपृथ्वीकायभेदौ ।	२५	कायभेदाः ।	३१	भेदाः (५) ।	४४
१३ वादरपृथिवीकायभेदौ ।	"	२४, ४७-८३ साधारणवनस्पतिकाय- वृक्षादीनां भेदाः (अनन्ताः) ।	३४	स्थलचरपंचेन्द्रियैर्यग्योनिक- भेदाः (२) ।	४५
१४ इलक्षणपृथ्वीकायभेदाः । (७)	२६	२५, ८४-९६ अनन्त-प्रत्येकवनस्पति- कायलक्षणम् । (मूलाद्यपत्रवादः) ।	३६	३५ परिसर्पपञ्चेन्द्रियतिर्यग्भेदौ ।	४६
१५, १०-१३ खरपृथ्वीकायभेदाः (अनन्ताः) ।	२७	२६, ९७-११० साधारणवनस्पति- लक्षणम् ।	३९	३६, ११२ खचरपंचेन्द्रियतिर्यक्- प्रभेदाः (४) ।	४९
१६ अण्कायभेदौ ।	२८	२७ द्वीन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः ।	४१	३७, ११३-१३३ मनुष्यप्रज्ञापनाभेदौ (अन्तरद्वीपाः २०) (द्वाराणि २०) ।	५०
१७ तेजस्कायभेदौ ।	२९	२८ त्रीन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः ।	४२	३८ देवप्रज्ञापनाभेदाः (४) ।	६९
१८ वायुकायभेदौ ।	"	२९, १११ चतुरिन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः ।	"	इति प्रथमं प्रज्ञापनाख्यं पदम् ।	
१९ वनस्पतिकायभेदौ ।	"	३० पंचेन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः (४) ।	"	३९ पृथ्व्यप्तेजःस्थानानि ।	७२
२० सूक्ष्मवनस्पतिकायभेदौ ।	३०	३१ नैरयिकप्रज्ञापनाभेदाः (७) ।	४३	४० वायुवनस्पतिस्थानम् ।	७७
२१ वादरवनस्पतिकायभेदौ ।	"	३२ तिर्यक्पंचेन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः (३) ।	"	४१ विकलेन्द्रियस्थानम् ।	७८
२२, १४ प्रत्येकवादरवनस्पतिकाय- भेदाः (१२) ।	"	३३ जलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक- जलवनस्पतिप्रज्ञापनाभेदाः (३) ।	"	४२ सामान्यपञ्चेन्द्रियनारकस्थानम् ।	७९
२३, १५-४६ वादरप्रत्येकवनस्पति-					

४३, १३४-१३७* रत्नप्रभादिनारक- स्थानम् ।	८२	इति द्वितीयं स्थानपदम् । १८०-१८१* दिगादिभेदाः (२७) । ११३	६६ लेख्याभिरल्पबहुत्वम् ।	१३६
४४ तिरभ्यां पञ्चेन्द्रियाणां स्थानम् ।	८४	५५ दिग्वारं सामान्येन । ११४	६७ दृष्टिभिरल्पबहुत्वम् ।	१३७
४५, १३८* मनुष्याणां स्थानम् ।	”	५६ पृथिव्याद्यल्पबहुत्वम् । ११६	६८ ज्ञानाज्ञानाल्पबहुत्वम् ।	”
४६, १३९-१४९* भवनपतीनां स्थानं असुरादीनां च ।	९२	५७ नारकादीनां पञ्चानामष्टानां (सर्वेदानां) चाल्पबहुत्वम् । ११९	६९ दर्शनाल्पबहुत्वम् ।	”
४७ व्यन्तरस्थानम् ।	९५	५८ एकेन्द्रियाद्यल्पबहुत्वम् । १२०	७० संयताल्पबहुत्वम् ।	”
४८, १५०-१५१* पिशाचस्थानम् । ९७	९७	५९ षट्कायाल्पबहुत्वम् । १२२	७१ उपयोगाल्पबहुत्वम् ।	”
४९, १५२-१५४* वानमन्तरस्थानम् । ”	९९	६० सूक्ष्मबादराल्पबहुत्वम् । १२४	७२ आहारकेतराल्पबहुत्वम् ।	”
५० ज्योतिष्कस्थानम् ।	९९	६१ बादराल्पबहुत्वम् । १२७	७३ भाषकेतराल्पबहुत्वम् ।	१३९
५१ वैमानिकस्थानम् ।	१००	६२ सूक्ष्मबादराणामल्पबहुत्वम् । १३१	७४ परीचेतराल्पबहुत्वम् ।	”
५२ सौधर्मस्थानम् ।	१०१	६३ योग्याल्पबहुत्वम् । १३४	७५ पर्यासितराल्पबहुत्वम् ।	”
५३, १५५-१५८* ईशानादिस्थानम् । १०५	१०५	६४ वेदैरल्पबहुत्वम् । ”	७६ सूक्ष्मेतराल्पबहुत्वम् ।	”
५४, १५९-१७२* सिद्धस्थानादि । १०६	१०६	६५ कर्षयैरल्पबहुत्वम् । १३५	७७ सद्ध्यसंश्लेषबहुत्वम् ।	”
			७८ भवसिद्धिकेतराल्पबहुत्वम् ।	”
			७९ अस्तिकायाल्पबहुत्वम् ।	१४०

८०	चरमेतराल्पबहुत्वम् ।	७४३	९१ क्षेत्रदिग्भ्या पुद्गलद्रव्याल्पबहुत्वम् । १५८	१०१	उद्योतिष्काणां स्थितिः ।	१७५
८१	जीवाल्ल्पबहुत्वम् ।	”	९२ द्रव्यक्षेत्रकालभावाल्ल्पबहुत्वम् । १६०	१०२	वैमानिकाना स्थितिः ।	१७६
८२	क्षेत्रानुपातेन जीवाल्ल्पबहुत्वम् । १४४	१४४	९३ महादण्डकः (९९ भेदाना) । १६२	॥ इति चतुर्थं स्थित्याख्यपदम् ॥		
८३	गत्यपेक्षयाऽल्ल्पबहुत्वम् । १४५	१४५	॥ इति तृतीयमल्ल्पबहुत्वपदम् ॥	१०३	जीवपर्यायाः (पर्यायभेदौ) । १७९	
८४	विशेषेण देवानामल्ल्पबहुत्वम् । १४६	१४६	९४ सामान्यपर्यासापर्यासरत्नप्रभादिना- रकाणास्थितिः । १६९	१०४	नारकपर्यायाः द्रव्यप्रदेशस्थिति- भेदौ च । १८०	
८५	एकेन्द्रियाल्ल्पबहुत्वम् । १४१	१४१	९५ सामान्यविशेषतो देवाना स्थितिः । १७१	१०५	असुरकुमारादीना पर्यायाः । १८४	
८६	क्षेत्रानुपातेन विकलेन्द्रियाल्ल्प- बहुत्वम् । १५२	१५२	९६ पृथ्व्यादीना स्थितिः । ”	१०६	पृथिवीकायिकादीनां पर्यायाः । १८५	
८७	क्षेत्रानुपातेन पञ्चेन्द्रियाल्ल्पबहुत्वम् । १५३	१५३	९७ द्वीन्द्रियादीना स्थितिः । ”	१०७	द्वीन्द्रियादीनां पर्यायाः । ”	
८८	क्षेत्रानुपातेन पञ्चेन्द्रियादीनामल्ल्प- बहुत्वम् । १५४	१५४	९८ जलस्थलखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्- योनिकानां सामान्यविशेषतः स्थितिः । १७३	१०८	पञ्चेन्द्रियतिरश्चा पर्यायाः । ”	
८९	क्षेत्रानुपातेन त्रसकायिकाल्ल्पबहुत्वम् । १५४	१५४	९९ मनुष्याणां स्थितिः । १७४	१०९	मनुष्याणां पर्यायाः । ”	
९०	आयुर्वन्धकाद्यल्ल्पबहुत्वम् । १५५	१५५	१०० व्यन्तराणा स्थितिः । ”	११०	वानव्यन्तराणा पर्यायाः । ”	
				१११	जघन्यावागाहनादीनां नैरयि- काणां पर्यायाः । १८७	

- १.१२ ज० असुरकुमारादीनां पर्यायाः । १.८९
 १.१३ ज० पृथ्व्यादीनां पर्यायाः । ”
 १.१४ ज० द्वीन्दिद्रयादीनां पर्यायाः । १.९०
 १.१५ ज० पञ्चेन्द्रियतिरश्चां पर्यायाः । ”
 १.१६ ज० मनुष्याणां पर्यायाः । १.९२
 १.१७ असुरकुमारादिपर्यायाः । १.९५
 १.१८ अजीवपर्यायभेदौ । १.९६
 १.१९ रूपायजीवपर्यायाः (४) । ”
 १.२० परमाण्वादीनां द्रव्यप्रदेशावगाह-
 स्थितिगुणैः पर्यायाः । २००
 १.२१ जघन्यप्रदेशादीनां पर्यायाः । २०१
 ॥ इति विशेषापरपर्यायं पर्यायाख्यं
 पञ्चमं पदम् ॥

- १.२२, १.८२ उपपातविरहो गतिपु । २०५
 १.२३ रत्नप्रभादिभैदरूपपातविरहः । २०६
 १.२४ रत्नप्रभादिभैदरुद्धर्त्तनाविरहः । २०७
 १.२५ सान्तरनिरन्तरोपपातः । २०७
 १.२६ सान्तरनिरन्तरोद्धर्त्तना । ”
 १.२७ उपपातसंख्या । २०८
 १.२९, १.८३-१.८४ नारकाणामागतिः । ”
 १.३० असुरकुमाराणामुपपातः । २.१.१
 १.३१ पृथिवीकायिकानामुपपातः । २.१.२
 १.३२ विकलेन्द्रियाणामुपपातः । २.१.३
 १.३३ पञ्चेन्द्रियतिरश्चांमुपपातः । ”
 १.३४ मनुष्याणामुपपातः । ”
 १.३५ वानव्यतराणामुपपातः । २.१.४
 १.३६ ज्योतिष्काणामुपपातः । ”
 १.३७ वैमानिकानामुपपातः । २.१.४
 १.३८ नारकाणामुद्धर्त्तना । २.१.५
 १.३९ असुरकुमाराणामुद्धर्त्तना । ”
 १.४० पृथ्वीकायिकादीनामुद्धर्त्तना । ”
 १.४१ पञ्चेन्द्रियतिरश्चांमुद्धर्त्तना । ”
 १.४२ मनुष्याणामुद्धर्त्तना । ”
 १.४३ वानव्यन्तरादीनामुद्धर्त्तना । २.१.६
 १.४४ परभवायुर्बन्धः । २.१.६
 १.४५ जातिनामनिघत्तद्यायुर्बन्धभेदाः
 (६) । २.१.७
 ॥ इति व्युत्क्रान्त्याख्यं पष्ठं पदम् ॥
 १.४६ उच्छ्वासातद्विरहः । २.२.०
 ॥ इति सप्तममुच्छ्वासाख्यं पदम् ॥
 १.४७ दश संज्ञाः । २.२.१

१४८ दण्डकभेदेनाहारसंज्ञादिमतामल्प- बहुता ।	२२३	चरमादिभेदेनाल्पबहुत्वम् ।	२३०	१६५, १९२-१९७* सामान्यतो भाषायाः कारणानि सप्रभेद- सत्यादिभेदाश्च ।	२५५
॥ इत्यष्टमं संज्ञाख्यं पदम् ॥		१५७ परमाणोश्चरमादिविचारः ।	२३२	१६६ भाषकाभाषकौ ।	२५९
१४९ योनिभेदाः (३) ।	२२४	१५८, १८६-१९०* द्विप्रदेशादीनां चरमादित्वम् ।	२३८	१६७ नारकादीना भाषाजातानि ।	२६०
१५० नारकादीना शीताद्या योनयः ।		१५९ संस्थानभेदाः (५) ।	२४२	१६८, १०८* भाषाद्रव्यग्रहणादि- विचारः ।	
१५१ नारकादीना सचिचाद्या योनयः (३) ।	२२६	१६०, १९१* जीवादीना चरमाचरम- विभागः ।	२४४	१६९ सान्तरनिरन्तरग्रहणनिसर्ग- भेदादि ।	२६२
१५२ सधृताद्या योनयः	२२७	॥ इति दशमं चरमाख्यं पदम् ॥		१७० भाषाशब्दद्रव्यभेदाः (५) ।	२६५
१५३ मनुष्याणां कूर्मोन्नताद्या योनयः । २२८		१६१ अवधारिण्याः स्वरूपं सत्यारा- धिन्यादित्वं च ।	२४६	१७१ नारकादिभाषा स्थितभाषा- द्रव्यग्रहणं च ।	२६६
॥ इति योन्याख्यं नवमं पदम् ॥		१६२ लिङ्गनाक्सत्यता ।	२४८	१७२ सत्यादितया गृहीतनिसर्गयो- र- भेदाः ।	
१५४ पृथ्वीनां चरमाचरमते ।		१६३ संज्ञिणा वागाहारदिराज- कुलादिवाचनज्ञानम् ।	२५२		
१५५ रत्नप्रभादीनां चरमाचरमाद्यल्प- बहुत्वम् ।	२२९	१६४ एकवचनादिका भाषा ।	२५३		
१५६ अलोकस्य लोकालोकयोश्च चरमा-					

१७३ षोडश वचनानि । २६६
१७४ चतस्रोऽप्याराधिन्यः सत्त्वभाषका- २६७
चल्पचहुत्वम् । २६८
१७५ सत्यादिभाषानामरूपबहुत्वम् । २६८
॥ इति भाषारूपमेकादशं पदम् ॥
१७६ शरीरभेदाः (५ दण्डकेषु) २७०
१७७ औदारिकादीनां भेदौ संख्या च । ”
१७८ नारकाणामौदारिकादिशरीर-
तत्संख्यापृच्छा । २७४
१७९ असुरकुमारादीनामौदारिकादि-
शरीरतत्संख्यापृच्छा । २७५
१८० पृथ्वीकायिकादीनां द्वीन्द्रियादीनां
चौदारिकादिशरीरतत्संख्यापृच्छा
(गर्भजमनुष्यसंख्या) । २७७

॥ इति द्वादशं शरीराख्यं पदम् ॥
१८१ परिणामभेदौ । २७९
१८२ जीवपरिणामभेदाः (गत्यादि १०) । २८३
१८३ गतिपरिणामादिनिरूपणं (१०) । २८६
१८४ अजीवपरिणामभेदाः (१०) । २८७
१८५, १९९-२०० बन्धपरिणामादि-
भेदाः । (१०) ”
॥ इति त्रयोदश परिणामाख्यं पदम् ॥
१८६ कषायभेदाः । २८९
१८७ कषायप्रतिष्ठोत्पत्तिश्च । ”
१८८ क्रोधादिभेदाः २८९
१८९ आमोगाद्याः क्रोधभेदाः । २९१

१९०, २०, * अष्टकर्मप्रकृतिचयोप-
चयादिहेतुता । २९२
॥ इति चतुर्दशं कषयाख्यं पदम् ॥
२०२-२०३* इन्द्रियाणां संस्थानादि-
द्वाराणि (१६) । २९३
१९१ इन्द्रियाणां संस्थानत्राहृत्यपृथक्त्व-
प्रदेशाः । ”
१९२ अवगाहनारूपबहुत्वे । २९५
१९३ नैरयिकादिषु इन्द्रियादीनि । २९७
१९४ शब्दादेः स्पृष्टास्पृष्टत्वादि । २९८
१९५ इन्द्रियाणां विषयपरिमाण-
निरूपणम् (इन्द्रियविषयेष्वं-
गुलसंख्येयभागादि मानम्) । २९९
१९६ अन्त्यनिर्जरापुद्गलदर्शनज्ञाना-

हारादिप्रश्नः ।	३०४	२०४ जीवादियु पदेषु नियतप्रयोगा- भावाः ।	३२०	२१३-लेख्यापदे चतुर्विंशतिदण्डकस्या हारादिपदैर्निरूपणम् ।	३४१
१९७ आदर्शादिच्छायाप्रश्नः ।	"	२०५ गतिप्रपाता. प्रयोगो(१५)पपात- (३)विहायो(१७)गतिभेदाः ।	३२५	२१४ लेख्याभेदाः ।	३४३
१९८, २०४-२०६-कम्मलावकाशा कागस्पर्शनादिप्रश्नः ।	३०५	॥ इति षोडश प्रयोगपदम् ॥		२१५ नैरयिकाणा लेख्या ।	"
१९९, २०७-२०८ सस्थानादीनीन्द्रि- याणा द्वाराणि (९) अनगारादीन्य- लोकान्तानि च (१६) ।	३०८	२०६, २०७ समाहारशरीरादीनि द्वाराणि (७) (लेख्यास्वरूपम्)	३३१	२१६ लेख्यादीनामष्टानामल्पबहुत्वम् ।	"
२०० इन्द्रियाण्येहावग्रहभेदाः	३१०	२०७ समकर्मत्वाद्यधिकार ।	३३२	२१७ नैरयिकेषु लेख्यानामल्पबहुत्वम् ।	३४५
२०१ द्रव्येन्द्रियभावेन्द्रियसख्या, नारका- दीनामतीतानागतवर्तमानद्रव्य- भावेन्द्रियसख्या च ।	३११	२०८ समक्रियाऽधिकारः ।	३३४	२१८ तिर्यक्पञ्चेन्द्रियेष्वल्पबहुत्वम् ।	३४६
॥ इति पञ्चदशमिन्द्रियाख्यं पदम् ॥		२०९ असुरकुमारादिष्वाहारादि- पदनवक्रम ।	३३५	२१९ मनुष्येष्वल्पबहुत्वम् ।	३४७
२०२ प्रयोगस्य भेदाः ।	३१७	२१० समवेदनादि ।	३३८	२२० देवविषयमल्पबहुत्वम् ।	३४८
२०३ नारकादीनां प्रयोगाः ।	३१९	२११ लेख्यापदे मनुष्यविषये ।	३३९	२२१ भवनवासिदेवविषयम् ।	"
		२१२ " व्यन्तराणा विषये ।	३४०	२२२ नैरयिकेषूपपातविषयम् ।	३५२
				२२३ कृष्णलेख्यादिनैरयिकसत्कावधि- ज्ञानदर्शनविषयक्षेत्रपरिमाण- तारतम्यम् ।	३५५

२२४ का लेख्याः कतिपु ज्ञानेषु

लभ्यन्ते ।

२२५, २१०" लेख्याणां परिणाम-

लक्षणम् ।

२२६ लेख्यानां वर्णाधिकारः ।

२२७ लेख्यानां रसाधिकारः ।

२२८ लेख्यानां गन्धाधिकारः ।

२२९ लेख्यानां परिणामद्वारम् ।

२३० लेख्यानां स्थानद्वारम् ।

२३१ देवनैरयिकविषयम् ।

२३२ सामान्यतया लेख्यावर्णनम् । ३७१

॥ इति सप्तदशं लेख्याख्यं पदम् ॥

२३३, २११-२१२- कायस्थितिपरि-

णामः ।

२३४ कायस्थितीन्द्रियद्वारम् ।

२३५ कायद्वारम् ।

२३६ कायद्वारे सूक्ष्मकायिकादीनां

कालनिरूपणम् ।

२३७ योगद्वारम् ।

२३८ वेदद्वारम् ।

२३९ कपायद्वारम् ।

२४० लेख्याद्वारम् ।

२४१ सम्यक्त्वद्वारम् ।

२४२ ज्ञानद्वारम् ।

२४३ दर्शनद्वारम् ।

२४४ संयतद्वारम् ।

२४५ उपयोगद्वारम् ।

२४६ आहारकद्वारम् ।

३७७

३७८

३८१

३८२

३८३

३८५

३८६

३८७

३८९

३९०

३९१

३९२

३९३

२४७ भाषाद्वारम् ।

२४८ परीत्तद्वारम् ।

२४९ पर्याप्तद्वारम् ।

२५० सूक्ष्मद्वारम् ।

२५१ संज्ञिद्वारम् ।

२५२ भवसिद्धिकद्वारम् ।

२५३ अस्तिकायद्वारम् ।

२५४ चरिमद्वारम् ।

॥ इत्यष्टादशं कायस्थितिपदम् ॥

१५५ सम्यग्दृष्ट्यादिभेदेन जीवाः । ३९५

इत्येकोनविंशतितमं सम्यक्त्वपदम् ॥

१५६, २१३* अन्तक्रिया, तीर्थकृत्वा-

दिप्राप्तिसंग्रहः, जीवादिष्वन्त-

क्रियाविचारः ।

३९६

॥ ४२ ॥

श्रीउपा ० विषयानुक्रमे	२५७ नैरयिकेष्ण्वन्तक्रिया ।	३९६	२६६ उपपातोऽसयताभन्यद्रव्यदेवादी- नाम् (१४) ।	४०४	२७५ तैजसशरीरमेदाः (५) ।	४२६
	२५८ नैरयिकादिमेवम्यः समयेनान्तक्रिया- मानम् ।	३०८	२६७ असद्व्यामुमेदाः (४) ।	४०६	२७६ तैजसावगाहनमानम् ।	४२७
	२५९ नैरयिकाणामुद्धृत्त धर्मश्रवणादि- क्रिया ।	४००	॥ इति विंशतितमं क्रियापदम् ॥		२७७ पुद्गलवयनम् ।	४३१
	२६० असुरकुमाराणामुद्धृत्त धर्म ० ।	४०१	२१४* विधिप्रमाणसंस्थानादिसंग्रहः	४०७	२७८ औदारिकादीनां द्रव्यप्रदेशोभये- रत्नबहुत्वम् ।	४३३
	२६१ पृथिवीकायिकादीनामुद्धृत्त धर्म ० ।	४०१	२६८ शरीरमेदाः (५) ।	४०८	२७९ औदारिकादीनां जघन्योत्कृष्टो- भयावगाहनाविषयमल्पबहुत्वम् ।	४३४
	२६२ विकलेन्द्रियाणामुद्धृत्त धर्म ० ।	४०१	२६९ संस्थानानि ।	४११	॥ इत्येकविंशतितमं शरीरपदम् ॥	४३५
	२६३ पञ्चेन्द्रियतिरश्चासुद्धृत्त धर्मश्रव- णादिः ।	४०१	२७०, २१५-२१६* अवगाहनमानम् ।	४१२	२८० क्रियामेदाः (५) ।	४३७
	२६४ रत्नप्रभाबुद्धानां तीर्थकरत्वाद्याप्ति- विचारः ।	४०२	२७१ वैक्रियशरीरमेदौ ।	४१४	२८१ जीवानां प्राणातिपाताना क्रियाः ।	४३८
	२६५ रत्नप्रभादिभ्यश्चक्रवर्त्तित्वाद्याप्तिः ।	४०३	२७२ वैक्रियसंस्थानानि ।	४१६	२८२ जीवानां प्राणातिपातादिभ्यः कर्मबन्धः ।	४३८

२८३ जीवनाशकादीनां जीवनारकादिभ्यः

क्रियाः ।

२८४ क्रियासंवेधः ।

२८५ क्रिया(२)णां सहभावविचारः ।

२८६ हिंसादिविरमणहेतुः ।

२८७ प्राणातिपातविरमणे कर्मप्रकृति-

बन्धमानम् ।

२८८ विरतानां क्रियाभावः ।

॥ इति द्वाविंशतितमं क्रियापदम् ॥

२८९, २९०* कर्मप्रकृतेर्भेदाः (८) ।

२९० कर्मप्रकृतेर्बन्धः ।

२९१ कर्मस्थानानि ।

२९२ कर्मवेदना ।

२९३ कर्मकर्मानुभावाः ।

२९४ कर्मप्रकृतिविचारः ।

२९५ पंचविधज्ञानावरणीयादिकर्मस्थितिः ।

२९६ एकेन्द्रियाणां कर्मस्थितिः ।

२९७ द्वीन्द्रियादीनां कर्मस्थितिः ।

२९८ ज्ञानावरणीयादिकर्मणां जघन्य-

स्थितिवन्धः

२९९ ज्ञाना०उत्कृष्टस्थितिवन्धः ।

॥ इति त्रयोविंशतितमं कर्मप्रकृत्या-

ख्यं पदम् ॥

३०० कर्मप्रकृतिवन्धवन्धनम् (८)

॥ इति कर्मवन्धाख्यं चतुर्विंशति-

तमं पदम् ॥

३०१ कर्मवन्धवेदः ।

इति पञ्चविंशतितमं कर्मवेदाख्यं पदम्

३०२ कर्मप्रकृतिवेदवन्धः ।

इति षड्विंशतितमं वेदवन्धाख्यं पदम्

३०३ कर्मवेदवेदः ।

इति वेदवेदाख्यं सप्तविंशतितमं पदम् ॥

३०४ नारकादीनां सचिचाद्याहारादि ।

३०५, २९८-२९९* असुरकुमारादीना-

माहारादि ।

३०६ पृथ्वीकायिकादीनामाहारादि ।

३०७ द्वीन्द्रियाणामाहारादि ।

३०८ नारकादीनामेकेन्द्रियशरीराद्याहारः ।

३०९ नारकाणामोजआहारादिः ।

२९०* आहारपदाधिकाराः (१३) ।

५१० ५११

३१० जीवानामाहारानाहारादि । ५१२
 ३११ सत्त्वैश्वर्याजीवानामाहारादि । ५१६
 ३१२ गत्यादिष्व्वाहारकत्वादिः । ५२०
 ॥ इत्यष्टाविंशतितममाहारारूपं पदम् ॥
 ३१३ नारकादीनां सागारोपयोगादिभेदाः । ५२५
 ॥ इत्येकोनविंशत्तममुपयोगारूपं पदम् ॥
 ३१४ पञ्चत्ताभेदाः (९) (गतिज्ञानाज्ञानयो-
 र्ने) । ५२९
 ३१५ आकारादिज्ञानदर्शनपृथक्त्वम् । ५३१
 ॥ इति त्रिंशत्तमं पञ्चत्तापदम् ॥
 ३१६, २२१* संज्ञाभेदाः । ५३३
 इत्येकविंशत्तमं संज्ञारूपं पदम् ॥
 ३१७, २२२* संयतः । ५३४

॥ इति द्वाविंशत्तमं संयमारूपं पदम् ॥
 ३१८, २२३* अवधिज्ञानभेदो । ५३६
 ३१९ अवधिज्ञानविषयः । ५४०
 ३२० अवधिज्ञानसंस्थानद्वारम् । ५४१
 ३२१ नैरर्थिकभवनपतिव्यन्तरज्योतिष्क-
 वेगानिक्कानामवधिः । ५४२
 ॥ इति त्रयस्त्रिंशत्तममवधिरूपं पदम् ॥
 ३२२, २२४-२२५* परिचारणा । ५४३
 ३२३ परिचारणा, आधारविषयमागो-
 गम् । ५४४
 ३२४ परिचारणाविषयः । ५४७
 ३२५ परिचारणाभेदाः । ५४८
 ३२६ क्षीतपरिचारणा । ”
 ३२७ शुक्लपरिचारणा । ”

३२८ स्पर्शपरिचारणा । ५४८
 ३२९ कायपरिचारणा । ”
 ॥ इति चतुस्त्रिंशत्तमं प्रवीचारपदम् ॥
 ३३०, २२६-२२७* वेदनाभेदाः । ५५३
 ३३१, ३३२ वेदनाभेदो । ५५६
 ॥ इति वेदनाख्यं पञ्चविंशत्तमं पदम् ॥
 २२८* वेदनादिसमुद्घाताः । ५५९
 ३३३ समुद्घातभेदाः । ५६१
 ३३४ नैरर्थिकेषु समुद्घाताः । ५६२
 ३३५ नैरर्थिकेषु वेदनासमुद्घाताः । ५६५
 ३३६ स्वपरस्थाने वेदनासमुद्घाताः । ६७५
 ३३७ स्तं० कर्मायस्य समुद्घाताः । ५६९
 ३३८ नारकादेर्नारिकत्वादौ मारणान्ति-
 काथाः समुद्घाताः । ५७३

३३९ नारकादीनां नारकत्वादौ समुद्- घाताः ५७५	३५१, २२९-२३०- कृतसमुद्घातस्य योगाः । ६०५	४* प्र० आर्यश्यामनमस्कारः ।	११
३४०-३४१ समुद्घातानामल्पबहुत्वम् । ५७८	३५२ योगनिरोधः । ६०७	५* दृष्टिवादनिस्यन्दोध्ययनकथन- प्रतिज्ञा । ६	६
३४२ स्वपरस्थाने कपायस० । ५८१	॥ इति षट्त्रिंशत्तमं समुद्घाताख्यं पदम् ॥	९* प्रज्ञापनादि(३६)पदानामुद्देशः । ६	६
३४३ क्रोधादिसमुद्घाताद्यल्पबहुत्वम् । ५८८	॥ इति श्रीप्रज्ञापनाया विषयसूचिः ॥	१ जीवाजीवप्रज्ञापने । ७	७
३४४ छात्रस्थिकाः समुद्घाताः । ५९०	अथ श्रीप्रज्ञापनोपाङ्गस्य बृहद्विषयानुक्रमः	२ रूप्यरूप्यजीवप्रज्ञापने । ७	७
३४५ समुद्घातपुद्गलपूर्णादि । ५९६	वीरनमस्कारमङ्गलादि । १	३ धर्मास्तिकायतद्देशादि(१०, भेदाः । ९	९
३४६ वैक्रियसमुद्घातः । ५९६	प्रज्ञापनाशब्दार्थः, प्रयोजनाभिधेय- मङ्गलचर्चा । २	४ स्कन्धादीनां (४) वर्णगन्धादि(५)- परिणामाः (परिमण्डलादिसंस्थानानि) १८	१८
३४७ केवलिसमुद्घातनिर्जरापुद्गलसूक्ष्मता । ५९८	१* महावीरनमस्कारः, (अतिशय- चतुष्कम्) । ४	५ संसारसंसारसमापन्नप्रज्ञापने । ११	११
३४८ केवलिसमुद्घातप्रयोजनम् । ६०५	२* वीरस्यासन्नोपकारिता । ५	८ अनन्तपरम्परसिद्धप्रज्ञापने ६, तीर्थ- दि (१८) सिद्धाः, (स्वयंबुद्धप्रत्येकबुद्ध- विचारः, स्त्रीमुक्तिसिद्धिः) ७, अप्रथम- समयसिद्धादिप्रज्ञापना (८) । २३	२३
३४९ आवर्जीकरणम् । ६०७			
३५० केवलि० समयाः । ५९८			

- ९ एकेन्द्रियादिप्रज्ञापना, (द्रव्यभावेन्द्रियाणि) २४
- १० पृथ्वीकायादिप्रज्ञापना । ”
- ११ सूक्ष्मबादरपृथ्वीप्रज्ञापना । ”
- १२ पर्याप्तपर्याप्तसूक्ष्मपृथ्वीप्रज्ञापना (पर्याप्तनिरूपणम्) । २६
- १३ सूक्ष्मखरपृथ्वीप्रज्ञापना । ”
- १४ सूक्ष्मकृष्णादि(७)मृत्तिकाप्रज्ञापना । ”
- १५, १६ खरपृथ्वीशर्करादि(४०)प्रयोनयः, पर्याप्तनिश्चयोत्पत्तिः । २८
- १६ सूक्ष्मबादरपर्याप्तपर्याप्तप्रकायप्र० । २९
- १७ सूक्ष्मबादरपर्याप्तपर्याप्ततेजस्कामय० । २९

१८ सूक्ष्मबादरपर्याप्तपर्याप्तमायुकाय० ।

३०

- २२, १४* सूक्ष्मबादरवनस्पतिप्र०
- १९, पर्याप्तपर्याप्तसूक्ष्ममव० प्र०
- २०, प्रत्येकसाधारणबादरव० प्र०
- २१, वृक्षादि (१२) वादरव प्र०
- २२, १४* । ३
- २३, ४६* निम्बाम्राद्येकास्थिक१७*
अस्थिकादिबहुबीजवृक्ष२०*
वृन्ताकादिगुच्छ२५* सेचन-
कादिगुल्म२८* पद्मादिलता २९*
पुंस्फल्यादिवल्ली३४* इक्ष्वादिपर्वग-
३६* साण्डिकादितृण३८* ताला-
दिवलय४०* आर्याविरोहादिहरित

- ४३* शाल्याद्यौषधयुक्तादिजल-
सहआयादिकुहुणप्र०, एकानेकजीव-
स्कन्धादिषु श्लेषवृत्तिलिपिर्पटिकाहृष्टा
न्तौ४६ । ३४
- २४, ८३* अवकाद्याः साधारणमेदाः ५३*
- संख्याऽसंख्यातजीवशृङ्गाटकजीवा-
नन्तप्रत्येकमूलादिलक्षणम् । ८३* ३६
- २५, ९६* अनन्तप्रत्येकचिह्नमेदाः । ३८
- ९८* मूलप्रथमपत्रयोरेककर्तृकता ९७*
- किशलयोऽनन्तकायः ९८* । ३९
- २६, ११०* साधारणानां युगपदुत्पत्त्यादि,
अनन्तशरीरहृष्टता, अनन्तप्रत्येक-
मानं (गोला निगोदाश्च) १०६*
सूक्ष्मानामाज्ञाहृष्टत्वम् १०७* प्र०,

पर्याप्तपर्याप्तवनस्पतिसंख्या, कन्दादीनां त्वगादिष्वनियतादि योनिः ११०ः ।	४१	३४ अधाद्येकखुरोप्रादिद्विखुरहस्तादि- गण्डीपदसिहादिसनखचतुष्पदप्र० । ४५	सर्गादिभेदाः, निशङ्कितादय आ- चाराः, परिहारविशुद्धिः ।	६८
२७ पुताक्यादिद्वीन्द्रियप्रज्ञापना (योनि- कुलयोर्भेदः)	४१	३५ आशीविपादिदर्वीकरदिन्याक्रादि- मुकुलयद्यजगराऽऽशालिकमहोर- गोरःपरिसर्पनकुलादिभुजपरिसर्पप्र० ।	३८ सप्रभेदभवनवास्यादिदेवप्रज्ञापना ।	७१
२८ औपयिकादित्रीन्द्रियप्र० ।	४२	३६, ११२ वल्गुल्यादिचर्मपक्षिद्वक्त्रा- दिरोमपक्षिसमुद्भविततपक्षिप्र०, (कुलकोटिसंग्रहः) ११२ ।	॥ इति प्रथमं प्रज्ञापनापदम् ॥	
२९, १११ अन्विकादिचतुरिन्द्रियप्र० ।	४२	३७, १३३* संमूर्च्छिमनरोत्पत्तिस्थान- कर्मकर्मभूयन्तरद्वीपकमनुष्याधिकारः (युगलिकवर्णनम्), शकादयो म्लेच्छाः, ऋद्धिक्षेत्रजातिकुलकर्मशिल्प- भाषाज्ञानदर्शनचारित्र्यार्याः, (नि-	३९. सूक्ष्मवादरपर्याप्तापर्याप्तपृथिव्यसे- जसां स्थानानि (शिष्यप्रत्ययाय गौतमप्रश्न., तिर्यग्लोकतट्टं च) ।	७७
३० नैरयिकादिपञ्चेन्द्रियप्र० ।	४३	३७, १३३* संमूर्च्छिमनरोत्पत्तिस्थान- कर्मकर्मभूयन्तरद्वीपकमनुष्याधिकारः (युगलिकवर्णनम्), शकादयो म्लेच्छाः, ऋद्धिक्षेत्रजातिकुलकर्मशिल्प- भाषाज्ञानदर्शनचारित्र्यार्याः, (नि-	४० बादरादिवायुवनस्पतिस्थानानि ।	७८
३१ रत्नप्रभादिनारकप्र० ।	४३	३७, १३३* संमूर्च्छिमनरोत्पत्तिस्थान- कर्मकर्मभूयन्तरद्वीपकमनुष्याधिकारः (युगलिकवर्णनम्), शकादयो म्लेच्छाः, ऋद्धिक्षेत्रजातिकुलकर्मशिल्प- भाषाज्ञानदर्शनचारित्र्यार्याः, (नि-	४१ द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियस्थानानि ।	८१
३२ जलचरादितिर्यक्प्र० ।	४३	३७, १३३* संमूर्च्छिमनरोत्पत्तिस्थान- कर्मकर्मभूयन्तरद्वीपकमनुष्याधिकारः (युगलिकवर्णनम्), शकादयो म्लेच्छाः, ऋद्धिक्षेत्रजातिकुलकर्मशिल्प- भाषाज्ञानदर्शनचारित्र्यार्याः, (नि-	४२ नारकाणां स्थानम् (सर्वर्णनम्) ।	८२
३३ मत्स्यादि(५) श्लक्ष्णमत्स्याद्यस्थि- कच्छपादिल्यादिग्राहसोण्डादि- मकरादिजलचरप्र०	४४	३७, १३३* संमूर्च्छिमनरोत्पत्तिस्थान- कर्मकर्मभूयन्तरद्वीपकमनुष्याधिकारः (युगलिकवर्णनम्), शकादयो म्लेच्छाः, ऋद्धिक्षेत्रजातिकुलकर्मशिल्प- भाषाज्ञानदर्शनचारित्र्यार्याः, (नि-	४३, १३७ रत्नप्रभादिनारकस्थानानि सर्वर्णनानि ।	८४
			४४ पञ्चेन्द्रियतिर्यक्स्थानानि ।	८५
			४५ मनुष्यस्थानानि ।	८६

४६, १४९^१ सर्वर्णभवनपत्यादिदिक्षि-
णोत्तरतेद्वेदस्थानानि । ९५
४७ सर्वर्णव्यन्तरस्थानानि । ९७
४९, १५४^२ पिशाचतेद्वेदस्थानानि ४८,
१५१^३ अनर्णिकादिस्थानानि
४०, १५४^४ । ९८
५० उयोतिष्कस्थानानि । ९९
५१ वैमानिकस्थानानि । १००
५२ सौधर्मदेवस्थानतदिन्द्रवर्णनम् । १०१
५३, १५८^५ ईशानादिदेवस्थानवर्णनं,
सामानिकात्परक्षकविमानसंख्या च ।
१०६
५४, १७९^६ सिद्धाना स्थानं तन्नाम-
स्वरूपे, अप्रतिघातस्थानावागहना-

स्पर्शलक्षणसुखपर्यायाश्च । ११३
॥ इति द्वितीयं स्थानपदम् ॥
१८^१* दिगादीनि द्वाराणि (२७) । ११४
५५ जीवाना दिगनुपातेनारूपबहुत्वम् । ११५
५६ पृथिव्यसेजोवाय्वादीनां सिद्धान्ताना
दिगनुपातेनारूपबहुत्वम् । ११९
५७ नारकतिर्यग्देवसिद्धानां पञ्चाष्टगति-
रूपेणारूपबहुत्वम् । १२०
५८ सैकादी(७)न्द्रियारूपबहुत्वं, ओघ-
पर्याप्तापर्याप्तिविशेषित च । १२२
५९ सकायपृथ्वीकायाद्य(८)रूपबहुत्वम् । १२४
६० सूक्ष्मसूक्ष्मपृथ्व्यादितत्पर्याप्ता-

पर्याप्तारूपबहुत्वम् । १२६
६१ वादरवादरपृथ्व्याद्यारूपबहुत्वम् । १२९
६२ सूक्ष्मसूक्ष्मपृथ्व्यादिवादरवादरपृथ्व्या-
द्यारूपबहुत्वम् । १३४
६४ सयोगमनोयोग्या(५)द्यारूपबहुत्वम्
६३, संद्वेदस्त्रीवेदाद्यारूपबहुत्वम् ६४ । १३५
६६ सकषाय्यादि६५सलेद्वयाद्यारूप-
बहुत्वम् ६६ । १३६
६८ सम्यग्दृष्ट्यादि ६७ आभिनि-
बोधिकज्ञान्याद्यारूपबहुत्वम् ६८ । १३७
७२ चक्षुर्दर्शन्यादि६९ संयतादि७०-
साकारोपयुक्तादि७१ आहारका-
द्यारूपबहुत्वम् ७२ । १३८

- ७८ भाषकादि७३परीचादि७४पर्याप्तदि-
७९सूक्ष्मादि७६सञ्ज्ञादि७७-
भव्याद्यलपबहुत्वम् ७८ । १४०
७९ धर्मास्तिकायादीनां द्रव्यप्रदेशोभयैर-
लपबहुत्वम्, (कालस्यानन्तगुण-
त्वसिद्धिः) । १४३
८० चरमाचरमालपबहुत्वम् । ”
८१ जीवपुद्गलाद्धासर्वद्रव्यप्रदेशपर्याया-
लपबहुत्वम् । १४४
८२ ऊर्ध्वलोकादिक्षेत्रानुपतेनाल१० । १४५
८३ क्षेत्रानुपतेन पञ्चाष्टगत्यल्प० । १४८
८४ क्षेत्रानुपतेन भवनपतितद्वीव्यन्त-
राद्यलपबहुत्वम् । १५१

- ८५ ऊर्ध्वादिक्षेत्रेष्वेकेन्द्रियतदपर्याप्त-
पर्याप्तानामल्पबहुत्वम् । १५२
८६ ऊर्ध्वादियु द्वीन्द्रयादितदपर्याप्त-
पर्याप्तानामल्पबहुत्वम् । १५३
८७ ऊर्ध्वादियु पञ्चेन्द्रियतदपर्याप्त-
पर्याप्तानामल्प० । १५४
८८ ऊर्ध्वादियु पृथ्व्यादीनामोधिकापर्याप्त-
पर्याप्तानामल१० । १५५
८९ ऊर्ध्वादियु त्रसानामोधिकापर्याप्त-
पर्याप्तानामल्प० । ”
९० आयुर्वन्धकादी(१४)नामल्प० । १५८
९१ त्रैलोक्यादिषूर्गादियु च पुद्गलानां
द्रव्याणां चालपबहुत्वम् । १६०
९२ परमाणुसख्याऽसख्याऽनन्तप्रदे-

- शानामेकादिप्रदेशावगाढानामेकादि-
समथस्थितिकानामेकादिगुणकालका-
दीना पुद्गलानामल्पबहुत्वम् । १६१
९३ गर्भव्युत्क्रान्तिकादि(९८)सर्वजीवा-
ल्पबहुत्वम् (महादण्डकः) । १६८
॥ इति तृतीयं बहुवक्तव्यतापदम् ॥
९४ ओधिकरत्नप्रभादितदपर्याप्त-
पर्याप्तानारकाणा परापरे स्थिती । १७०
१०१ देवदेवीसप्रमेदभवनपत्यादि-
देवदेवीनामपर्याप्तपर्याप्तानां परापरे
स्थिती २५ ओधिकसूक्ष्ममवादर-
पृथिव्यादीनां ९६ द्वीन्द्रियादीनां
९७ ओधिकसंमूर्च्छिमगर्मजजल
चरचतुष्पदोरोभुजपरिसर्पलवचराणां

९८ ओषसमूर्च्छिमगर्भजनराणा
९९ व्यन्तरदेवेवीना १००-
ज्योतिष्कतद्देवीचन्द्रादितद्देवीनां
परापरे स्थिती १०१ । १७६
१०२ वैमानिकदे देवीसौवर्मेसान-
देवपरिगृहीतापरिगृहीतदेवीसन
कुमारादिदेवाना परापरे स्थिती । १७८
॥ इति चतुर्थं स्थितिपदम् ॥
१०३ जीवनारकासुरकुमारादीना पर्यायाः । १७९
१०४ नारकाणा द्रव्यप्रदेशावगाहना-
स्थितिकालादिवर्णादिमत्यादिज्ञान-
दर्शनपर्यायैरल्पबहुत्वम् । १८४

११० असुरादीना १०५ पृथ्व्यादीनां
१०६ द्वीन्द्रयादीना १०७
पञ्चेन्द्रियतिरश्चा १०८ मनुष्याणा
१०९ व्यन्तरादीना द्रव्यादिभिः
पर्याया ११० । १८६
१११ नारकाणा जघन्यमध्यमोत्कृष्टा-
वगाहनास्थितिकालादिज्ञानादि-
पर्यायैरल्पबहुत्वम् । १८९
११७ असुरादीनां ११२ पृथ्व्यादीना-
११३ द्वीन्द्रयादीना ११४
पञ्चेन्द्रियतिरश्चा ११५ मनुष्याणा
११६ व्यन्तरादीना पर्यायाणा
तुल्याधिकत्वादि ११७ । १९६
१२१ अरूप्यजीवभेदाः (१०) ११८

रूप्यजीवपर्यायाः ११९ पर
माण्यदीनां द्रव्यप्रदेशावगाहना-
स्थितिकालादिपर्यायैस्तुल्यहीन-
त्वादि १२०, जघन्यमध्यमोत्कृष्ट-
प्रदेशानां पर्यायतुल्याधिकत्वादि
१२१ । २०४
॥ इति पञ्चमं विशेषपदम् ॥
१२२, १८२* नारकादिसिद्ध्यन्तगतीना-
मुत्पादोद्घर्त्तनाविरहः । २०५
१२४ रत्नप्रभाद्यसुरादिपृथ्व्यादिद्वी-
न्द्रयादिसमूर्च्छिमगर्भजनतिर्यग्-
नरज्योतिष्कसौधर्मादिसिद्धोत्पाद-
विरहः १२३ रत्नप्रभादिषूद्धर्त्तनाया
विरहः १२४ । २०७

१२६ नारकादीनां सान्तरनिरन्तर-
मुत्पत्तिः १२५ तथोद्धर्तना १२६ । २०८
१२८ उत्पत्तिं नारकरत्नप्रभाद्यसुरादि-
सिद्धान्तानामेकसमयसंख्या १२७,
उद्धर्तनायां संख्या १२८ । २०९
१३७, १८४* सप्रभेदनारकाणां १२९,
१८४* असुरादीनां १३०
पृथ्व्यादीना १३१ द्वीन्द्रिया-
दीनां १३२ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां
१३३ मनुष्याणां १३४ व्यन्त-
राणा १३५ ज्योतिष्काणां १३६
सप्रभेदवैमानिकानां चागति-
विचारः १३७ । २१४

१४३ नारकाणां १३८ असुरादीनां
१६९ पृथ्व्यादीनां १४०
पञ्चेन्द्रियतिरश्चां १४१ मनु-
ष्याणां १४२ व्यन्तरादीना च
गतिः १४३ । २१६
१४४ नारकादीनां परमत्रायुर्बन्धकालः । २१६
१४५ जातिनामनिधत्तायुष्कादीना-
माकर्षाः । २१८
॥ इति षष्ठं व्यु क्कान्तिपदम् ॥
१४६ नारकासुरादिपृथिव्यादिमनुष्य-
व्यन्तरज्योतिष्कसप्रभेदवैमा-
निकामुच्छ्वासान्तरम् । २२१
॥ इति सप्तममुच्छ्वासपदम् ॥

१४२ आहारादि(१०) सञ्ज्ञा, नार-
कादीनां १४७ बाहुल्यसन्तति-
भ्यां सञ्ज्ञोपयुक्तविचारः, गति-
भेदेन सञ्ज्ञाऽल्पबहुत्वं च । २२४
॥ इत्यष्टमं सञ्ज्ञापदम् ॥
१५० शीतोष्णमिश्रा योनयः १४९
नारकासुरपृथ्वीसमूच्छिन्मगर्मज-
तिर्यग्मनुष्यव्यन्तरादीनां योनिः
शीतयोन्याद्यल्पबहुत्वं च १५० । २२६
१५१ नारकादीनां सचिच्चादियोनिः । २२७
१५२ नारकादीनां संवृतादियोनिः । ”
१५३ कूर्मोक्तादियोनिविचारः । २२८
॥ इति नवमं योनिपदम् ॥

१२४ रत्नप्रभादीनां चरमाचरमत्वादि- विचारः ।	२३०	स्थितिभवादिः (११) चरमा- चरमत्वं च ।	२४६	१६७ जीवादीनां भाषकाभाषकविचारः १६६ जीवादीनां सत्यामृषादि- भाषत्वम् । १६७ ।	२६०
१५६ रत्नप्रभादीनामचरमचरमतदन्त- प्रदेशानां द्रव्यप्रदेशोभयार्थैरल्प बहुत्वं १५५ अलोकस्य लोका- लोकयोरचरमचरमाद्यल्पबहुत्वम् ।	२३२	॥ इति दशमं चरमाचरमपदम् ॥ १६१ अन्नधारिण्याः भाषायाः सत्यादिता । १६३ गोमृगादिरुयाज्ञापन्यादिभाषा १६३ बालादीनां भाषाऽऽहारयोर- ज्ञानेऽपि प्रवृत्तिः ।	२४८ २५२ २५३	१६९, १०८* भाषाया द्रव्यावगाह- स्थितिवर्णादिस्वष्टावगाढादि- विचारः १६८, १९८*, सान्तर- निरन्तरभिन्नाभिन्नग्रहणविचारः १६९ ।	२६६
१५८, १९० परमाणोश्चरमाचरमा- वक्तव्यतादिभङ्गाः (२६) १५७, द्विप्रदेशादीनां चरमत्वादि १९०* १५८ ।	२४२	१६४ एकबहुवचनस्त्रीपुनपुंसकादिभाषा । १६५, १९७* भाषाया आदिप्रवह- संस्थानान्ताः, पर्याप्तापर्याप्तिभेदाः, सत्यमृषामिश्रव्यवहारभाषाभेदाः (१०-१०-१०-१२) ।	२५५ २५५ २५९	१७३ खण्डप्रतराद्या(५)भेदाः, तद् ल्पत्वादि १७०, नारकादीनां स्थितादिभाषापुद्गलग्रहण १७१ सत्यादितया ग्रहणनिसर्गौ १७२ एकद्विवचनादि(१६)वचनानि १७३ ।	२६७
१६०, १९१* जीन्नारकादीनां गति-					

१७५ भाषाचतुर्केऽपि संयतासंयत-
योराराधनाविराघने १७४ सत्या-
दिभाषकाल्पबहुत्वम् १७५ । २६८
॥ इत्येकादशं भाषापदम् ॥
१७६ शरीरभेदाः नारकादीनां शरीर-
संख्या च । २७०
१७७ औदारिकादीनां बद्धमुक्तालप-
बहुत्वम् । २७४
१७८ नारकाणामौदारिकादिषु बद्धमुक्त-
विचारः । २७२
१८० असुरादीनां १७२ पृथ्व्यादीनां
द्वीन्द्रियादीनां मनुष्याणां व्यन्तरा-
दीनां चौदारिकादिवद्धत्वादि
विचारः १८० । २८४

॥ इति द्वादशं शरीरपदम् ॥

१८२ जीवाजीवपरिणामौ १८१ गत्यादि-
(१०)परिणामाः १८२ । २८६
१८३ गतीन्द्रियकषायलेख्यायोगो-
पयोगज्ञानदर्शनचारित्रवेदभेदा-
स्तौनारकादिविचारश्च । २८७
१८४, २००* बन्धनगतिसंस्थानादयो-
(१०)ऽजीवपरिणामाः १८४
स्निग्धरूक्षवन्धःपृगदस्पृशद्ग-
त्यादिपरिणामविचारः १८५
२००* । २८८
॥ इति त्रयोदशं परिणामपदम् ॥
१८८ नारकादीनां क्रोधादयः १८६

क्रोधादीनामात्मपरोभयनि-

प्रतिष्ठितत्वं, क्षेत्रवासुशरीरो-
पधिभ्य उत्पत्तिः १८७ अन-
न्तानुबन्ध्याद्या भेदाः १८८ । २९१
१९०, २०१* आमोगानाभोगोप-
शान्तानुपशान्तक्रोधादयः १८९
क्रोधादिभिरष्टकर्मचयोपचयचन्धो-
दयोदीरणवेदननिर्जराः १९०,
२०१ । २९२

॥ इति चतुर्दशं कथायपदम् ॥

२०३* संस्थानवाहल्यादिसङ्ग्रहीगाथे
१०३ । २९३
१९१ इन्द्रियाणां भेदसंस्थानवाहल्य
पृथक्त्वप्रदेशविचारः १९१ । २९५
१९२ इन्द्रियाणामवगाहतदल्पबहुत्वे

३१७

न्द्रियसंख्या ।

॥ द्वितीयोद्देशः, इन्द्रियपदं १२ ॥

२०२ सत्यमनआदयः प्रयोगाः (१५) । ३१९

२०३ नारकादीनां प्रयोगसंख्या । ३२०

२०४ जीवादियु सत्यमनआदिप्रयोग-
भङ्गाः । ३२५

२०५ प्रयोग (१५) तद्वन्धच्छेदोपपात-
(५) विहायो (१७) गतिभेदाः
(स्पृशदस्पृशदुपसम्पद्यमानादि
विहायोगतौ । ३३०

॥ इति षोडशं प्रयोगपदम् ॥

२०७, २०९* (लेख्याया योगपरिणाम-
त्वसिद्धिः) आहारसमशरीरादि-
संग्रहणी २०९* नारकाणां समा-

कायादिभिर्यासिः, जम्बूद्वीपदे-

धर्मादिभिः, द्वीपसमुद्रपरिपाटी,

लोकलोकयोर्धर्मादिरपार्श-

विचारः । ३०८

॥ इन्द्रियपदे प्रथमोद्देशः ॥

२०७-८ इन्द्रियोपचयनिर्वर्त्तनादिसङ्ग्र-

हगाथे । ३०९

१९९ नारकादीनामिन्द्रियोपचयनिर्वर्त्तन-

तत्समयमानलब्धयुपयोगाद्धा-

तज्जघन्योत्कृष्टालवबहुत्वा-

वगाहना । ३१०

२०० अपोयेहाऽवग्रहभेदाः नारकादीनां
तत्संख्या च । ३११

२०१ नारकादीनां भूतानागतचन्द्रमुक्ते-

कर्कशगुर्वादिगुणालवबहुत्वं च । २९६

१९३ नारकासुरादिभेदेनेन्द्रियतत्संस्था-

नादिविचारः २९८

१९४ स्पृष्टादिशब्दादिश्रवणादि-

विचारः । २९९

१९५ श्रोत्रादीनां जघन्योत्कृष्टविषय-

मानं (आत्माङ्गुलेनेन्द्रियमानं
चक्षुषः प्रकाश्ये) । ३०२

१९६ लोकव्यापिचरमनिर्जिरापुद्गला-

नामभेदाद्यज्ञानेऽप्याहरणम् । ३०४

१९७ आदर्शादियु स्वप्नप्रतिभागेक्षणम् ।
३०५

१९८, २०६* आवेष्टितविततयोः समा-

नोऽवगाहः, आकाशस्य धर्मास्ति-

- हारशरीरोच्छ्वासादिविचारः २०६
समकर्मवर्णलेख्यावेदनाविचारः ३३४
२०७। ३३४
२०८ नारकाणामारम्भिक्यादिक्रिया-
ऽऽयुरुपातसमत्वविचारश्च । ३३२
२०९ असुरकुमारादीनां समाहारत्वादि-
विचारः । ३३८
२१० पृथ्व्यादीनामपि, पञ्चेन्द्रिये
संयतासंयतानां तु क्रियात्रयम् । ३४०
२११ मनुष्याणां समाहारत्वादि, अप्र-
मत्ते मायाप्रत्ययैव । ३४१
२१२ व्यन्तरादीनामपि समाहारत्वादि । ,,
२१३ नारकादीनां लेख्याभेदे समा-
हारत्वादिचिन्ता । ३४३

- ॥ इति लेख्यापदे प्रथमोद्देशकः ॥
२१६ पङ् लेख्याः २१४, नारका-
दीनां लेख्याविभागः २१५
सलेख्यादीनामरूपबहुत्वम् २१६। ३४५
२१८ कृष्णलेख्यादिनारकाणामरू-
पबहुत्वं २१७ तिर्यगेकेन्द्रिय-
पृथ्व्यसेजोवायुवनस्पतिद्वि-
त्रिचतुःपञ्चेन्द्रियसंमूर्च्छिमगर्भज-
तत्त्वीतदुभयसंमूर्च्छिमस्त्रीगर्भज-
स्त्रीसंमूर्च्छिमगर्भजस्त्रीपञ्चेन्द्रिय-
तिर्यक्स्त्रीतिर्यक्स्त्रीलेख्याऽऽह-
बहुत्वम् । ३४७
२२१ मनुष्याणामपि २१९देवदेवी-

- भवनपतिज्योतिष्कवैमानिक-
देवदेवीतदुभयसर्वेषामरूपबहु-
त्वं २२० कृष्णादीनां लेख्यानाम-
रूपमहर्द्धिकत्वम् २२१ । ३५२
॥ इति लेख्यापदे द्वितीयोद्देशकः ॥
२२२ नारकादीनामुत्पादोद्घर्त्तनयोः सम-
लेख्यत्वं न पृथ्व्यादिषु । ३५५
२२३ नारकाणां लेख्याभेदेनावधि-
भेदः । ३५७
२२४ लेख्यासु मत्यादिज्ञानविचारः । ३५८
॥ इति लेख्यापदे तृतीयोद्देशः ॥
२२५, २१०* लेख्यापरिणामवर्ण-
रसादि(१४)द्वारसंग्रहणी २१०*
कृष्णादेर्नीलादितया परिणामश्च। ३६०

२२६ कृष्णादिलेश्याना वर्णाः । ३६४	॥ इति लेश्यापदे पञ्चमोद्देशकः ॥	निन्द्रियौघाद्यपर्याप्तपर्याप्तकाय- स्थितिः । ३७८
२२७ तासा रसवर्णनम् । ३६६	२३२ मनुष्यमानुषीकर्मभूमिभरतैर- वतान्तर्द्वीपहैमवतारण्यवत- हरिवर्षरभ्यगमनुष्यमानुषीणा लेश्याषट्कं स्वरबहुत्वं, समा- नान्यलेश्याकगर्भजनकत्वं च । ३७३	२३५ सकायाकायौघपृथिव्याद्यपर्याप्त- पर्याप्तकायस्थितिः । ३८१
२२८ तासा गन्धवर्णनं, अविशुद्धा- प्रशस्तसक्लिष्टशीतरुक्षदुर्गतिगामि- त्वानि सप्रतिपक्षाणि च । ३६७	॥ इति लेश्यापदे षष्ठोद्देशकः ॥	२३६ ओघसूक्ष्मवाटरपृथिव्यादिनिगोद- तदपर्याप्तपर्याप्तकायस्थितिः । ३८२
२२९ तासा त्रिनवविधादिपरिणामो- ऽनन्तभदेशिकताऽसंख्यप्रदेशा वगाहोऽनन्ता वर्गणाश्च । ३६८	॥ इति सप्तदशं लेश्यापदम् ॥	२३७ सयोगमनोयोग्यादिकाय- स्थितिः । ३८३
२३० तासां स्थानानि, जघन्योत्कृष्ट- स्थानाना द्रव्यप्रदेशोभयरूप- बहुत्व च । ३७०	२३३, २१२* जीवगतीन्द्रियादि- (२२)द्वारसङ्ग्रहणीगाथे २१२* जीवस्थितिः, नारकतिर्यग्मनुष्य- देवतत्त्वीसिद्धनारकाद्यपर्याप्तपर्याप्त- स्थितिः । ३७७	२३८ सामान्यविशेषवेदावेदस्थितिः । ३८५
॥ इति लेश्यापदे चतुर्थोद्देशकः ॥		२३९ सामान्यविशेषकषास्यकषायि- स्थितिः । ३८६
२३१ लेश्याना न तद्रूपतादिपरिणामः, आकारप्रतिभागौ स्याताम् । ३७२	२३४ औघैकद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियाऽ-	२४० सलेश्यकृष्णलेश्याद्यलेश्यस्थितिः । ३८७
		२४१ सम्यग्बृहयादिस्थितिः, (एका-

क्षराश्रद्धाने रुचिनिन्दयोरभावे- ऽपि मिथ्यादृष्टित्वम्) । ३८९	३८९
२४२ ओषमत्यादिज्ञान्यज्ञानिस्थितिः ।	३९०
२४३ चक्षुर्दर्शन्यादिस्थितिः (विभङ्गे ऽवधिदर्शनविचारः) । ३९१	३९१
२४५ संयतादिस्थितिः २४४, साकारो- पयोगादिस्थितिः २४५ । ३९२	३९२
२४६ छद्मस्थकेवल्यद्याहारकानाहारक- स्थितिः । ३९३	३९३
२५४ भाषकाभाषकयोः २४७ काय- संसारपरीक्षापरीक्षादीनां २४८ पर्याप्तादीनां २४९ सूक्ष्मादीनां २५० सञ्ज्ञयादीनां २५१ भव्या-	

दीनां २५२ धर्मास्तिकायादीनां २५३ चरमाचरमयोश्च कायस्थितिः २५४ । ३९५	३९५
इत्यष्टादशं कायस्थितिपदम् ॥ २५५ जीवनारकासुरादिषु दृष्टिविचारः । ३९६	३९६
॥ इत्यकोनविंशतिः मम्यकृत्वपदम् ॥ २५८, २१३ नारकाद्यन्तक्रियाऽन- न्तरादि(१०)द्वारागाथा २१३ जीवनारकादीनामन्तक्रियाविचारः २५६ नारकादीनामन्तरपरस्परा- गतानां २५७ अनन्तरगतनार- कादीनामेकसमयान्तक्रिया- विचारश्चः २५८ । ३९८	३९८

२५९ उद्धृतनारकाणां नरतिर्यग्गत्यो- र्धर्मश्रवणश्रद्धाज्ञानशीलाद्याविधि- संयतत्वादिप्राप्तिविचारः । ४००	४००
२६० असुरादीनामुद्धर्तना । ”	”
२६१ पृथिव्यादीनां परत्र धर्मश्रवणादि । ४०१	४०१
२६३ द्वीन्द्रियादीनां २६२ पञ्चेन्द्रिय- तिरश्चम् । २६३ । ४०२	४०२
२६४ रत्नप्रभादिनारकाणां तीर्थकृत्वा- न्तक्रियामनःपर्यवादितामप्रश्नः । ४०३	४०३
२६५ रत्नप्रभादिनारकादीनां चक्रिवल- वासुदेवसेनापत्यादित्वलाभ- विचारः । ४०४	४०४

२६६ असयतभन्यद्रन्यदेवादि(१४) ४०६
जघन्योत्कृष्टोपपातविचारः ।
२६७ असङ्शयार्थेभेदात्पबहुत्व-
विचारः । ४०७
॥ इति त्रिशतितममन्तक्रियापदम् ॥
२६८, २१४- विधिसंस्थानप्रमाणादि-
(१०)द्वारसग्रहगाथा २१४
शरीरभेदाः, औदारिकस्त्रा-
मि-
विचारश्च । ४१०
२६९ एकेन्द्रियबौदारिकशरीरस्य
संस्थानम् । ४१२
२७०, २१६* एकेन्द्रियपृथिव्याद्य-
पर्याप्तपर्याप्तभेदेनौदारिकाव-
गाहनानामन् २१६*, २७० । ४१४

२७१ वैक्रियशरीरस्य स्वामिनः । ४१६
२७२ तस्य संस्थानम् । ४१७
२७३ वायुकायस्त्वप्रभादिनारकासुर-
कुमारादीनां वैक्रियमान(प्रस्तु-
भेदेन) । ४२३
२७४ आहारकस्य स्वामिसंस्थाना-
वगाहनाः, (मनःपर्यन्तादिलिङ्ग-
विचारः) । ४२६
२७६ तैजसस्य स्वामिसंस्थाने २७२,
जीवैकेन्द्रियपृथिव्यादिनामनु-
त्तरान्तानां मरणसमुद्घाते तैज-
साऽवगाहना, कर्मणस्य स्वाम्यादि
च २७६ । ४३१
२७७ औदारिकादीनां चयोपचयदिशः,

परस्परं सवेधश्च । ४३३
२७९ तेषां द्रव्यप्रदेशोभयरूपबहुत्व
२७८, जघन्योत्कृष्टावगाहनाऽ
रूपबहुत्वम् २७९ । ४३५
॥ इत्येकविंशतितमं शरीरपदम् ॥
२८० कायिक्यादिक्रियाणामनुपस्तादि-
भेदाः । ४३६
२८१ हिंसासृषावादादिभिः षड्जीव-
निकायादिषु क्रिया । ४३९
२८३ प्राणात्पितादीनां सप्तविधवन्धा-
दिविचारः २८२, ज्ञानावरणीया-
दिवन्धे क्रियात्रयादिविचारः,
जीवनारकादीनां जीवनारकादि-
भ्यस्त्रिक्रियत्वादिविचारः (गुण-

चन्द्रबालचन्द्रकुलपुत्रदृष्टान्तः) ४४४
२८३ । ४४४
२८४ कायिक्यादीनां संवेद्यः । ४४६
२८५ आरम्भिक्यादीनां स्वामिनः
सवेद्यश्च । ४४८
२८६ हिसाविरत्यादिषु स्वामिविषयाः
२८६, सप्तविधवन्धादिविचारः
२८७, आरम्भिक्यादिक्रियातद-
ल्पबहुत्वविचारः २८८ । ४५२
॥ इति द्वाविंशतितमं क्रियापदम् ॥
२९०, २९७* प्रकृतिवन्धादिद्वार(५)
गाथा २९७, नारकादीनां कर्म-
प्रकृतयः २८९, ज्ञानावरणोदया-
दिनाऽष्टकर्मप्रकृतयः २९० । ४५५

२९१ रागद्वेषाभ्यां तद्वन्धः (नयै राग-
द्वेषौ) । ४५७
२९२ ज्ञानावरणीयादिवेदकाः । ”
२९३ ज्ञानावरणीयादीनां दशनवाष्ट-
पञ्चचतुश्चतुर्दशाष्टशृङ्खलाविधा
अनुभावाः । ४६५
२९४ कर्मणा मतिज्ञानावरणादि-
(१५८)भेदाः । ४७२
२९५ सप्रभेदानां ज्ञानावरणीयादीना
परापरे स्थिती अत्राद्या निषेकश्च ।
४८४
२९६ एकेन्द्रियस्य ज्ञानावरणीयादि-
स्थितिवन्धः । ४८६
२९७ द्वीन्द्रियादीनां ज्ञानावरणीयादि-

स्थितिवन्धमानम् । ४८८
२९८ ज्ञानावरणीयादिजघन्यस्थिति-
वन्धस्वामिनः । ४२०
२९९ ज्ञानावरणीयाद्युत्कृष्टस्थिति-
वन्धस्वामिनः । ४९१
॥ इति त्रयोविंशतितमं कर्मप्रकृतिपदम् ॥
३०० ज्ञानावरणीयादिवन्धे तदन्यसप्ता-
ष्टादिवन्धावन्धादिभङ्गाः । ४२४
॥ इति चतुर्विंशतितमं कर्मप्रकृतिवन्धपदम् ॥
३०१ ज्ञानावरणीयादिवन्धेऽष्टसप्तविधादि-
वेदनभङ्गाः । ४९४
॥ इति पञ्चविंशतितमं कर्मवेदपदम् ॥
३०२ ज्ञानावरणीयादिवेदने सप्ताष्टविधादि-
वन्धभङ्गाः । ४९७

॥ इति षड्विंशतितमं कर्मवेदबन्धपदम् ॥

३०३ ज्ञानावगणीयादिवेदने सप्ताष्टविध-
वेदनम् । ४९८

॥ इति सप्तविंशतितमं कर्मवेदवेदपदम् ॥

३०५, २१९ सच्चित्ताहारार्थादि(८)-

द्वाराणि २१८, एकेन्द्रियशरीर-

लोमाहारमनोभक्षिद्वाराणि २१९*,

नारकाणा-सच्चित्ताद्याहारविचारः,

आभोगानाभोगाहारकालः, अनन्त-

-प्रदेशिकादिपुद्गलैराहारः, आहारो-

-च्छेदसयोरभीक्षणं, -कादाचित्कत्वे

-असंख्येयभागे, आहारोऽनन्त-

भागे, आत्वादः, दुःखतयापरिणामः

३०४, असुरादिस्तनितकुमारान्ता-

नामाहारार्थादि ३०५ ।

३०६ पृथ्व्यादिनामाहारार्थतद्दिग्दिगादि । ५०६

३०७ द्वीन्द्रियादिमनुष्यव्यन्तरज्योति-

ष्कसौधर्मादीनामाहारार्थादि । ५०८

३०८ नारकादीनामेकेन्द्रियाद्याहार-

लोमाद्याहारविचारश्च । ५१०

३०९ नारकादीनामोजोमनोभक्षितादि-

विचारः । ५११

॥ इत्याहारपदे प्रथमोद्देशकः ॥

२२०* आहाराभव्यादि(१३)द्वाराणि । ५१२

३१० जीवनास्कादीनामाहारानाहारक-

त्वभङ्गाः, भव्यसञ्ख्यादिजीवा-

दीनामाहारकत्वादिभङ्गाः । ५१६

३११ लेख्यादृष्टिसंयतसकषाग्यादिष्व-

हारकत्वादिभङ्गाः ।

३१२ ज्ञान्यज्ञानिसयोगसेवेदसशरीरा-

हारादिपर्याप्तादिष्वाहारकत्वा-

दिभङ्गाः ।

॥ इत्याहारपदे द्वितीयोद्देशकः ॥

॥ इत्यष्टाविंशतितममाहारपदम् ॥

३१३ नारकासुरादीनां साकारानाका-

रोपयोगसख्या । ५२८

॥ इत्येकोनविंशत्तममुपयोगपदम् ॥

३१४ नारकादीनां साकारा(६)ऽनाकार-

(३)पश्यत्ताविचारः । ५३१

३१५ केवलिन एकसमयेन ज्ञानदर्शना-

भावः । ५३३

॥ इति त्रिंशत्तमं पश्यत्तापदम् ॥

३१६, २२१* जीवनारकादीनां सञ्ज्ञि-
त्वादिविचारः । ५३४
॥ इत्येकत्रिंशत्तमं सञ्ज्ञिपदम् ॥
३१७, २२२* जीवनारकादीनां संयत-
त्वादिविचारः । ५३६
॥ इति द्वात्रिंशत्तमं संयतपदम् ॥
३१८, २२३* मेदविषयसंस्थानादि-
(१०) द्वारगाथे २२३*, भव-
प्रत्ययक्षयोपशमिकस्वामिनः । ५३९
३१९ नारकादीनामनुत्तरान्तानामवधि-
क्षेत्रमानम् । ५४१
३२१ नारकादीनामवधेराकारः ३२०
नारकादीनामन्तरदेशानुगामि-
वर्द्धमानमतिपात्यवस्थितेतरा-

वधिविचारः ३२१ । ५४३
॥ इति त्रयस्त्रिंशत्तममवधिपदम् ॥
३२२, २२५* अनन्तरागताहारादि-
(७) द्वारगाथे २२५*, नारकादी-
नामनन्तराहारादिवैक्रियान्तस्य
विचारः । ५४४
३२३ नारकादीनामाहारपुद्गलज्ञाना-
ज्ञानादि । ५४७
३२४ देवानां देवीतत्परिचारादि
३२४ कायस्पर्शरूपशब्दमनः-
प्रवीचारविचारः ३२५ इच्छा-
मनसउपशान्तिः ३२६ देवशुक्र-
पुद्गलपरिणामः ३२७ स्पर्शादि-
प्रवीचाररीतिः ३२८ कायप्रवीचारा-

दीनामल्पबहुत्वम् ३२९ । ५५३
॥ इति चतुस्त्रिंशत्तमं प्रवीचारपदम् ॥
३३०, २२७* शीतद्रव्यशरीरादि-
द्वारगाथे २२७*, नारकादीनां
शीतादिद्रव्यादिशरीरादिसातादि-
दुःखादिवेदना । ५५६
३३१ नारकादीनामौपक्रमिकव्यादि-
वेदनाविचारः । ५२७
३३२ नारकादीनां निदाऽनिदा
वेदनाविचारः ५२८
॥ इति पञ्चत्रिंशत्तमं वेदनापदम् ॥
२२८* वेदनादिसमुद्घातास्तत्स्वामिनश्च । ५६१
३३३ वेदनादिसमुद्घातकालमानं,

नारकादीनां समुद्धातसंख्या च ।	५६२	बहुत्वं ३४०, समुद्धातानां	पञ्चमनिर्जरापुद्गलज्ञाना-
३३४ नारकादीनामतीतानागतवेदना-	५६५	नारकादीनामल्पबहुत्वम् । ३४१	ज्ञानादि ३४७ ।
समुद्धाताः ।	५६५	५८१	३५०, २३०- केवलिनः समुद्धात-
३३५ वेदनाऽऽहारककेवलिसमुद्धाताः ।	५६७	५८८	कारण ३४८, २३०- , आव-
३३६ नारकादीनां रकादित्वेऽतीता-	५६९	५९०	र्जीकरणकालमान ३४०, केवलि-
नागतवेदनासमुद्धातमानम् ।	५७२	५९०	समुद्धातस्तत्र योगेश्च ३५० । ६०५
३३७ तथैव कषायसमुद्धातमानम् ।	५७२	५९०	३५१ कृतसमुद्धातस्य मनोवचनकाय-
३३८ सर्वदण्डकानां सर्वदण्डकेषु	५७५	५९०	योगाः (न षण्मासी शेषे) । ६०७
समुद्धातमानम् ।	५७५	५९१	३५२, २३१- योगनिरोधादिरीतिः,
३३९ नारकादीनां नारकादित्वे वेद-	५७८	५९१	सिद्धस्वरूप च ।
नादिसमुद्धातमानम् ।	५७८	५९१	६११
३४१ समुद्धातानां जीवानामल्प-	५७८	५९१	६११
		५९१	६११

अथ श्रीसूर्यप्रज्ञप्तविषयसूचिः

वीरस्तुतिः १ ।

तीर्थकरस्तुतिः २ ।

आगमस्तुतिः ३ ।

सूर्यप्रज्ञप्तिस्तुतिः ४-५ ।

१ मिथिलानगर्युद्यानवर्णनम् ।

२ समवसरणदिशवर्णनम् ।

३, १५* प्राभृत्याधिकाराः

४, ६-७* प्रथमप्राभृते प्राभृतप्राभृतनामानि

(८) ।

५, ८* सूर्यस्य प्रतिपत्तयः ।

६, ९ ११* सूर्यस्योदये अस्तमयनेषु

च विप्रतिपत्तयः ।

७, १२-१२* दशमप्राभृत्याधिकारः ।

”

८ मुहूर्तवृद्धयपवृद्धी ।

९ दिवसरात्रिविषये मु० ।

१० सूर्यमण्डलानि ।

११ सूर्यमण्डलविषयः ।

१२ दक्षिणार्द्धमण्डलसंस्थितिः ।

१३ उत्तरार्द्धमण्डलसंस्थितिः ।

१४ चीर्णचरणम् ।

१५ अन्तरपरिमाणं विप्रतिपत्तयश्च

(६) ।

१६ १७ अवगाहनामानम् (५) ।

१८ विकम्पनमानविप्रतिपत्तयः (५) ।

१९ मण्डलसंस्थानविप्रतिपत्तयः (८) ।

२० मण्डलविष्कम्भविप्रतिपत्तयः (३) ।

॥ इति प्रथमं प्राभृतम् ॥

२१ सूर्यस्य तिर्यक्परिभ्रमः

२२ भेदघातकर्णकले विप्रतिपत्तयः

(२) ।

२३ मुहूर्तगतिः विप्रतिपत्तयश्च (४) ।

॥ इति द्वितीयं प्राभृतम् ॥

२४ प्रकाश्यक्षेत्रपरिमाणम् ।

॥ इति तृतीयं प्राभृतम् ॥

२५ प्रकाशसंस्थानम् ।

॥ इति चतुर्थं प्राभृतम् ॥

२६ लेख्याप्रतिघातः ।

॥ इति पञ्चमं प्राभृतम् ॥

२७ ओजः संस्थितिः ।

॥ इति षष्ठं प्राभृतम् ॥

२८ सूर्यावारकः ।

४५

४८

५२

६३

६७

७६

७९

८३

॥ इति सप्तमं प्राभृतम् ॥

३९ उदयसंस्थितिः ।

॥ इत्यष्टमं प्राभृतम् ॥

३० पौरुषीच्छायाप्रमाणम् ।

३१ पौ० निर्वर्तनम् ।

॥ इति नवमं प्राभृतम् ॥

३२ योगस्वरूपे नक्षत्राणां विचारः ।

३३ नक्षत्रे मुहूर्त्तमानं चन्द्रम्य ।

३४ नक्षत्राणां सूर्येण योगः ।

३५ पूर्वादिभागाः ।

३६ योगस्यादिः ।

३७ कुलोपकुलानि ।

३८ पौर्णिमादिनक्षत्रम् ।

३९ कुलोपकुलाधिकारः ।

४० सन्निपातो द्वयोश्चन्द्रं प्रति ।

४१ नक्षत्राणामाकाराः ।

४२ नक्षत्रेषु तारामानम् ।

४३ नेतृणि नक्षत्राणि ।

४४ चन्द्रमार्गाः ।

४५ चन्द्रमण्डलमार्गाः ।

४६ नक्षत्रदेवाः ।

४७, १६-१८ मुहूर्त्तनामानि ।

४८, १२-२२ दिनरात्रिनामानि ।

४९ तिथिभेदाः ।

५० नक्षत्रगोत्राणि ।

५१ नक्षत्रभोजनानि ।

५२ युगे सूर्यचन्द्रचाराः ।

५३, २३-२४ मासनानि ।

१२८

१२९

१३१

१३२

१३७

१३८

१४६

”

१४७

१४८

१५०

१५१

१५२

१५३

५४ सत्रत्सराः ।

५५ नक्षत्रसत्रत्सराः ।

५६ युगसत्रत्सराः ।

५७ प्रमाणसत्रत्सराः ।

५८, २५-२९ लक्षणसत्रत्सराः ।

५९ नक्षत्रद्वाराणि ।

६० नक्षत्रयोगादि ।

६१-६२ नक्षत्रसीमाविष्कम्भादि ।

६३ पूर्णिमामावास्याः ।

६४ सूर्यस्य पौर्णमासीदेशस्थितिः ।

६५ चन्द्रस्य पौर्णमासीदेशस्थितिः ।

६६ सूर्यचन्द्रयोर्युनक्ति ।

६७ नक्षत्रेण सूर्यचन्द्रयोर्युनक्ति ।

६८ अमात्रास्यानक्षत्राणि ।

१५३

”

१५४

१६८

१७१

१७३

१७५

१७७

१८०

१८१

१८२

”

१८५

१९०

६९	तादृगन्यनक्षत्रयोगः ।	१९४
७०	चन्द्रादेः सर्वत्र समययोगिता ।	१९७
	॥ इति दशमं प्राभृतम् ॥	
७१	संवत्सगणमाद्यंतौ ।	१९८
	॥ इति एकादशमं प्राभृतम् ॥	
७२	नक्षत्रादिवर्षरात्रिन्दिवसुहूर्त्तमानम् ।	२०१
७३	नोयुगयुगरात्रिन्दिवसुहूर्त्तमानम् ।	२०६
७४	सूर्यादीनामाद्यन्तसायम् ।	२०७
७५, ३०*	ऋतुन्यूनाधिकरात्र्यधिकारः ।	२०९
७६	आवृत्तयः ।	२१९
७७	हेमन्त्य आवृत्तयः ।	२२८
७८	वृषभानुजाताद्या योगाः ।	२३३

	॥ इति द्वादशमं प्राभृतम् ॥	
७९	चन्द्रमसो वृद्धयपवृद्धी ।	२३४
८०	पूर्णिमामात्रास्यान्तरं ।	२३६
८१	चन्द्रायनमण्डलचारः ।	२३८
	॥ इति त्रयोदशमं प्राभृतम् ॥	
८२	ज्योत्स्नाप्रमाणम् ।	२४४
	॥ इति चतुर्दशमं प्राभृतम् ॥	
८३-८४	चन्द्रादीना गतितारतम्यम् ।	२४५
८५	नक्षत्रादिमसैश्चन्द्रादीनां चारः ।	२५०
८६	चन्द्रादीनामहोरात्रमण्डलयुगक्षयः ।	२५३
	॥ इति पञ्चदशमं प्राभृतम् ॥	
८७	ज्योत्स्नालक्षणम् ।	२५५

८८	ज्यवनोपपातौ ।	२५७
	॥ इति सप्तदशमं प्राभृतम् ॥	
८९	चन्द्रसूर्यद्युच्चत्वम् ।	२५८
९०	तारकस्याणुतादि ।	२५९
९१	चन्द्रस्य ग्रहपरिवारः ।	"
९२	अमाधाचाराः ।	"
९३	अभ्यन्तरचाराः ।	"
९४	चन्द्रादेः संस्थानमयामादिवाहिनश्च ।	२५२
९५	अल्पेतरगतिऋद्धी ।	"
९६	तारान्तरम् ।	२५३
९७	चन्द्रादिदेवी ।	"
९८	ज्योतिष्कस्थितिः ।	२६६

१०९ चन्द्रसूर्ययोरल्पबहुत्वम् । २६६

॥ इत्यष्टादश प्राभृतम् ॥

१००, ३१-८७* चन्द्रसूर्यादिपरिमाणम् । २६८

१०१ पुष्करोदादयः । २८२

॥ इत्येकोनविंशतितमं प्राभृतम् ॥

१०२ चन्द्रादीनामनुभावः । २८५

१०३ राहुक्रिया । २८७

१०४ चन्द्रादित्यान्वर्थः । २९१

१०५ कामभोगाः । २९५

१०६, ८८-९६* अष्टाशीतिग्रहाः । २९४

१०७, ९७-१०२* शास्त्रोपसंहारः । २९५

॥ इति विंशतितम प्राभृतम् ॥

॥ इति श्रीसूर्यप्रज्ञसेर्व्वहद्विषयसूचिः ॥

अथ श्रीसूर्यप्रज्ञसेर्व्वहद्विषयानुक्रमः

श्रीवीरश्रुतकेवलजिनवचनाना नम

स्कारादि, निर्युक्तेष्वुच्छेदासूत्रवृत्ति-

प्रतिज्ञा । १

१ मिथिलामाणिमद्रचैत्यजितशत्रुधारिणी-

समवसरणपर्व्वर्षनिर्गमधर्मकथाद्यति-

देशः । ३

२ इन्द्रभूतिवर्णनातिदेशः । ६

३, १-२* मण्डलादि(२०)प्राभृतार्थाधि-

कारः । ७

७, ६-१५* सुहृत्तृक्ष्यपवृद्ध्यादि(८)-

प्राभृतप्राभृतार्थाधिकाः ४, षड्वाद्याः

प्रथमप्राभृतप्रतिपत्तयः ५, उदयास्त-

मनाद्या द्वितीये प्रतिपत्तयः ६, आवलिका-

सुहृत्तार्थादीनि(२२)दशमे प्राभृत-

प्राभृतानि ७ । ९

८ सुहृत्तृक्ष्यपवृद्धी । ११

१० सर्वमण्डलचाराहोरात्रमानं ९, सकृद्-

द्विर्वा मण्डलचारः १० । ११

११ अष्टादशादिमुहूर्त्ता, रात्रिदिनमानम् ।

१२, उत्तरार्द्धमण्डलचारेऽपि १३ । २१

॥ इति प्रथमे प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

१३ दक्षिणार्द्धमण्डलचारे दिनरात्रिमानं

१४ अर्द्धसर्पणमण्डलचर्णीचरणम् । २४

॥ इति प्रथमे द्वितीयं प्रा० प्राभृतम् ॥

१५ इति प्रथमे तृतीयं प्रा० प्राभृतम् ॥

१६ सूर्ययोरन्तरे प्रतिपत्तिषट्कं स्थितपक्ष-

अ, प्रवेशनिर्गममोर्दिनरात्रिभानम् । २८
॥ इति प्रथमे चतुर्थे प्रा० प्राभृतम् ॥
१६ द्वीपसमुद्रैवगाहे पतिपत्तिपञ्चकम् । ३१
१७ स्थितपक्षः । ३१
॥ इति प्रथमे पञ्चमं प्रा० प्राभृतम् ॥
१८ दिनरात्र्योर्विक्रम्यने प्रतिप्रत्तिसप्तकं
स्थितपक्षश्च । ३५
॥ इति प्रथमे षष्ठं प्रा० प्राभृतम् ॥
१९ मण्डलसंस्थितौ प्रतिपत्त्यष्टकम् । ३७
॥ इति प्रथमे सप्तमं प्रा० प्राभृतम् ॥
२० मण्डलपदायामादौ प्रतिपत्तित्रयं,
स्थितपक्षः, तत्कारणं च । ४४
॥ इति प्रथमे अष्टमं प्राभृतप्राभृतम् ॥
इति प्रथमं प्राभृतम् ॥

२१ सूर्यस्य तिर्यगतौ प्रतिपत्त्यष्टकं,
स्थितपक्षश्च । ४८
॥ इति द्वितीये प्रथमं प्रा० प्राभृतम् ॥
२२ मण्डलान्तरसह्चक्रे प्रतिप्रत्तिद्वयं,
भेदघातकरणकलाभ्याम् । ५०
॥ इति द्वितीये द्वितीयं प्रा० प्राभृतम् ॥
२३ प्रतिमुहूर्त्ते सूर्यगतौ प्रतिपत्तिचतुष्कं
स्थितपक्षश्च (मुहूर्त्तगतिदृष्टिपथप्राप्ति-
विचारः) । ६३
॥ इति द्वितीये तृतीयं प्रा० प्राभृतम् ॥
॥ इति द्वितीयं प्राभृतम् ॥
२४ चन्द्रसूर्यप्रकाश्यक्षेत्रे प्रतिपत्तिद्वा-
दशकं स्थितपक्षश्च । ६६
॥ इति तृतीयं प्राभृतम् ॥

२५ चन्द्रसूर्यतत्तापक्षेत्रसंस्थित्योः प्रति-
पत्तिषोडशकं स्थितपक्षश्च । ६७
॥ इति चतुर्थं प्राभृतम् ॥
२६ सूर्यलेख्याप्रतिघाते विंशतिः प्रतिपत्तयः
स्थितपक्षश्च । ७९
॥ इति पञ्चमं प्राभृतम् ॥
२७ ओजःसंस्थितौ पञ्चविंशतिः प्रति-
पत्तयः, स्थितपक्षश्च, त्रिंशतं
मुहूर्त्तान्वस्थिता, षण्मासीभ्यां
वृद्धिहानी । ८३
॥ इति षष्ठं प्राभृतम् ॥
२८ सूर्यप्रकाश्ये विंशतिः प्रतिपत्तयः
स्थितपक्षश्च । ८४
॥ इति सप्तमं प्राभृतम् ॥

- २९ उदयसंस्थितौ प्रतिपत्तित्रयं, स्थित-
पक्षश्च, मन्दरपूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणासु
दिनरात्रिमानत्वादिप्रथमसमयादि-
विचारः । ९२
- ॥ इत्यष्टमं प्राभृतम् ॥
- ३० पौरुषीच्छाये प्रतिपत्तित्रय, छिन्न-
लेझ्यासमूर्च्छनादीनां स्थितपक्षः । ९४
- ३१ पौरुषीपादे प्रतिपत्तयः पञ्चविंशतिः,
सातिरैकैकोनपष्टौ स्थितपक्ष ,
स्तम्भादि(२५)छायाभेदाः । ९९
- ॥ इति नवमं प्राभृतम् ॥
- ३२ नक्षत्रावलिकारयोगे प्रतिपत्तिपञ्चकं,
अभिजिदादियोगे स्थितपक्षः । १००
- ॥ इति दशमे प्रथमं प्रा० प्राभृतम् ॥

- ३३ नक्षत्राणां चन्द्रेण योगकालः । १०२
- ३४ नक्षत्राणां सूर्येण योगकालः । १०४
- ॥ इति दशमे द्वितीयं प्रा० प्राभृतम् ॥
- ३५ नक्षत्राणां पूर्वपश्चान्नक्तोभयभागाः । १०५
- ॥ इति दशमे तृतीयं प्रा० प्राभृतम् ॥
- ३६ श्रावणाद्यभिजिदादिदिनमानम् । ११०
- ॥ इति दशमे चतुर्थं प्रा० प्राभृतम् ॥
- ३७ नक्षत्रेषु कुलोपकुलोभयानि । १११
- ॥ इति दशमे पञ्चमं प्रा० प्राभृतम् ॥
- ३८ श्रावणादिपौर्णमासीनक्षत्राणि । १२०
- ३९ श्रावणादिपौर्णमासीकुलोपकुलो-
भयानि, अमावास्यानक्षत्रकुला-

- दीनि । १२८
- ॥ इति दशमे षष्ठं प्रा० प्राभृतम् ॥
- ४० पूर्णिमाऽमावास्यानक्षत्रैक्यविचारः । १२९
- ॥ इति दशमे सप्तमं प्रा० प्राभृतम् ॥
- ४१ अभिजिदादीनां संस्थानानि । १३०
- ॥ इति दशमे अष्टमं प्राभृतप्राभृतम् ॥
- ४२ अभिजिदादीनां तारकसख्या । १३१
- ॥ इति दशमे नवमं प्रा० प्राभृतम् ॥
- ४३ श्रावणादिमासेषु नक्षत्रदिनपौरुषी-
मानं । १३७
- ॥ इति दशमे दशमं प्रा० प्राभृतम् ॥
- ४४ नक्षत्राणां चन्द्रेण दक्षिणोत्तरप्रमर्द-
योगाः । १३८

४५ चन्द्रमण्डलानि नक्षत्रयुक्तान्ययुक्तानि १४५
च ।
॥ इति दशमे एकादशं प्रा०प्राभृतम् ॥
४६ नक्षत्राणां देवताः । १४६
॥ इति दशमे द्वादशं प्रा०प्राभृतम् ॥
४७, १८* रौद्रादिमुहूर्त्तनामानि । १४७
॥ इति दशमे त्रयोदशं प्रा०प्राभृतम् ॥
४८, २२॥* दिवसरात्रिनामानि । १४८
॥ इति दशमे चतुर्दशं प्रा०प्राभृतम् ॥
४९ दिवसरात्रितिथिनामानि । १५०
॥ इति दशमे पञ्चदशं प्रा०प्राभृतम् ॥
५० अभिजिदादीनां गोत्राणि । १५१
इति दशमे षोडशं प्रा०प्राभृतम् ॥
५१ नक्षत्रभोजनानि । १५२

॥ इति दशमे सप्तदशं प्रा०प्राभृतम् ॥
५२ युगे नक्षत्रमासादिसंख्या । १५३
॥ इति दशमे अष्टादशं प्रा०प्राभृतम् ॥
५३, २४* अभिनन्दादिमासनामानि । १५३
॥ इति दशमे एकोनविंशतितमं
प्रा०प्राभृतम् ॥
५५ नक्षत्रादयः संवत्सराः ५५, नक्षत्रादि-
संवत्सरमासाः ५५ । १५४
५६ चन्द्रादिसंवत्सरास्तत्पर्याणि च । १६८
५७ प्रमाणसंवत्सरे नक्षत्रचन्द्रादि-
वर्षभेदाः । १७१
५८, २६* लक्षणसंवत्सरभेदाः, नक्षत्र
संवत्सरादीनां लक्षणानि, शनैश्चर
संवत्सरभेदाः । १७३

॥ इति दशमे विंशतितमं प्रा०प्राभृतम् ॥
५९ नक्षत्राणां द्वारेषु प्रतिपत्तिपञ्चकं,
अभिजिदादीनां पूर्वादिद्वारेण स्थित-
पक्षः । १७२
॥ इति दशमे एकविंशतितमं प्रा०प्राभृतम् ॥
६० जम्बूद्वीपे सूर्यचन्द्रनक्षत्राणां मानं
नक्षत्राणां योगमानं च । १७६
६२ नक्षत्राणां सीमविष्कम्भः ६१, प्रातः-
सन्ध्यादियोगश्च ६२ । १८०
६३ द्वाषष्टिपूर्णिमाचन्द्रयोगाः । १८१
६६ द्वाषष्टिपूर्णिमासूर्ययोगाः ६४, द्वाषष्ट्य-
मावास्याचन्द्रयोगाः ६५, द्वाषष्ट्य-
मावास्यासूर्ययोगाः ६६ । १८५
६७ द्वाषष्टिपूर्णिमानक्षत्राणि । १९०

६८	द्वाषष्ट्यमावास्यानक्षत्राणि ।	१९४	७६	प्रावृद्धाद्यावृत्तिषु चन्द्रसूर्यनक्षत्रयोगाः ।	२२८	८५	नक्षत्रादिमासेषु चन्द्रादीना मण्डल- चारसंख्या ।	२५३
६९	नक्षत्रचन्द्रसूर्ययोगान्तरम् ।	१९६	७७	हैमन्तिक्यावृत्तिषु चन्द्रसूर्यनक्षत्र- योगाः ।	२३३	८६	दिनेन चन्द्रमण्डलादिसंख्या, मण्डले- नाहोरात्रसंख्या च ।	२५६
७०	परस्परचन्द्रगतियोगादिसाम्यम् ।	१९७	७८	वृषभवेणुकमञ्चादि(१०)योगाः ।	२३४		॥ इति पञ्चदशं प्राभृतम् ॥	
	॥ इति दशमे द्वाविंशतितम प्रा०प्राभृतम् ॥		७९	॥ इति द्वादश प्राभृतम् ॥		८७	ज्योत्स्नासूर्यलेख्यार्देर्लक्षणानि ।	२५
७१	युगसप्तसरादिनक्षत्रयोगाः ।	२०२	८०	चन्द्रवृद्ध्यपवृद्धिमुहूर्तसंख्या ।	२३६		॥ इति षोडशं प्राभृतम् ॥	
७२	॥ इत्येकादश प्राभृतम् ॥		८१	पूर्णमास्यमावास्यामुहूर्तानि ।	२३७	८८	चन्द्रादीना न्यवनोत्पातयोः प्रति- पत्तयः पञ्चविंशतिः, स्थितपक्षे चन्द्रादिस्वरूपम् ।	२५८
७३	नक्षत्रसप्तसरादिदिनरात्रिमुहूर्तमानम् ।	२०६	८२	॥ इति त्रयोदशं प्राभृतम् ॥			॥ इति सप्तदशं प्राभृतम् ॥	
७४	आदित्यसप्तसरादीना समादि- पर्यवसाने ।	२०९	८३	ज्योत्स्नान्धकारयोरल्पबहुत्वम् ।	२४५	९३	सूर्यस्योच्चत्वे प्रतिपत्तयः पञ्च- विंशतिः, स्थितपक्षे सूर्यास्तुच्चत्वं ८९, चन्द्रादेरधस्तनादिषु तारकाः	
७५	॥ इति दशमे द्वाविंशतितम प्रा०प्राभृतम् ॥		८४	॥ इति चतुर्दशं प्राभृतम् ॥				
७६	युगसप्तसरादिदिनरात्रिमुहूर्तमानम् ।	२०९	८५	चन्द्रादेरधस्तनादिषु तारकाः	२४९			

- ९०, चन्द्रदेर्ग्रहादिपरिवारमानं
९१, मेरुपर्वतजयोतिश्चक्रावाधा
९२, सर्वाभ्यन्तरवाह्यादिनिक्षत्राणि
९३ । २६०
९५ चन्द्रादिविमानसंस्थानायामवाहक-
देवस्वरूपनिरूपणं २४, चन्द्रादीनां
शीघ्रमन्दगतित्वं ९५ । २६५
९९ तारकयोस्तरं ९६, चन्द्रादेरग्रम-
हिणी, जिनसक्थ्याशातनाभया-
दन्यत्र भोगः ९७, चन्द्रादेः
परापरे स्थिती ९८, चन्द्राद्यालप-
बहुत्वम् ९९ । २६८
॥ इत्यष्टादशं प्राभृतम् ॥
१००, ३१-८७^६ चन्द्रसूर्यसङ्ख्यायां

- द्वादश प्रतिपत्तयः, स्वमते द्वयादि-
चन्द्रसूर्यसङ्ख्या । २८२
१०१ पुष्करवरद्वीपादयस्तच्चन्द्रसूर्यादि-
सङ्ख्या च । २८५
॥ इत्येकोनविंशतितमं प्राभृतम् ॥
१०२ चन्द्राद्यनुभावे प्रतिपत्तिद्वयं,
स्थितपक्षे तद्देवस्वरूपम् । २८६
१०३ राहुप्रतिपत्तिद्वय, स्थितपक्षे तद्देव-
स्वरूपनाम(१२)विमान(५)-
गमनागमनविकुर्वणादि, ध्रुव-
पर्वराहुचन्द्रलेख्यावर्णादि । २९१
१०४ चन्द्रसूर्ययोः राश्यादित्यस्वे
हेतुः १०४, चन्द्रसूर्यकाम-
भोगस्वरूपम् १०५ । २९४

- १०७, ८८-१०२^४ अष्टाशीतिग्रहनामानि ।
१०६, ९६^५ उपसंहारः १०७,
१०२^६ । २९७
॥ इति विंशतितमं प्राभृतम् ॥
प्रशस्तिः ।
॥ इति श्रीसूर्यग्रहसंविषयानुक्रमः ॥

अथ श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्येविषयसूचिः
वीरस्तुतिः १ ।
सूरिस्तुतिः २ ।
मलयगिरिस्तुतिः ३ ।
हीरविजयगुरुस्तुतिः ४-५ ।
वाचकानाशीर्वादः ६ ।
ग्रन्थनाम ७ ।

१- नमस्कारनिक्षेपाः।	९	१५ वैताढ्यवर्णनम् ।	८४	२७ द्वितीयारकस्वरूपम् ।	१२८
२ गौतमवर्णनम् ।	१४	१६ उत्तरभरतवर्णनम् ।	"	२८ तृतीयारकस्वरूपम् ।	१३१
३ जम्बूद्वीपस्थानादिः।	१८	१७ ऋषभकूटाधिकारः ।	८६	२९ कुलकराः ।	१३२
४ वेदिकावर्णनम् ।	२०	॥ इति भरतक्षेत्रनिरूपणो नाम प्रथमो		३० कुलकरनीतिः ।	१३३
५ वनषण्डाधिकारः ।	२७	वक्षस्कारः ॥		३१ कलादि ऋषभदीक्षा च ।	१३५
६ पद्मवरवेदिकावनषण्डवर्णनम् ।	३१	१८, ४-६* समयादिशीर्षप्रहेलिकान्त-		३२ श्रीऋषभप्रभोः श्रामण्यादि ।	१४६
७ जम्बूद्वीप(४)द्वाराधिकारः ।	४७	कालवर्णनम् ।	८९	३३ श्रीऋषभप्रभोः जन्मकल्याणकादि-	
८ विजयद्वारवर्णनम् ।	"	१९, ७-८* पल्योपमप्ररूपणा ।	९२	नक्षत्राणि ।	१५५
९, १* विजयादिद्वारान्तराणि ।	६५	२० सुषमसुषमाधिकारः	९७	३४ प्रभोः सहननादि निर्वाणगमनं च ।	१५६
१० भरतक्षेत्रवर्णनम् ।	६६	२१ कल्पद्रुमाधिकारः ।	९९	३५ चतुर्थारकस्वरूपम् ।	१६३
११ दक्षिणभरतार्द्धवर्णनम् ।	६८	२२ युग्मिस्वरूपम् ।	१०८	३६ पञ्चमारकस्वरूपम् ।	"
१२ वैताढ्यस्वरूपम् ।	७१	२३ प्रथमारकनराहारवर्णनम् ।	११८	३७ षष्ठारकस्वरूपम् ।	१६४
१३ तत्सिद्धायतनवर्णनम् ।	७७	२४-२५ प्रथमारकनरवासादिवर्णनम् ।	११९	३८ उत्सर्पिण्या प्रथमद्वितीयारकस्व-	
१४, २-३ दक्षिणार्द्धकूटादिवर्णनम्	८२	२६ प्रथमारकनराणां स्थित्यादि ।	१२६	रूपम् ।	१७१

३९	पुष्कलसंघर्षक्षीरघृतामृतरसमेवाः ।	४९	चतुर्थ्यष्टाधरथवर्णनम् ।	२१०	५९, १९ ^० छत्ररत्नवर्णनम् ।	२४१
४०	मांसवर्जनव्यवस्था ।	५०	सिन्धुदेवीसाधनम् ।	२१४	६०, २० ^० चर्मरत्ने धान्याद्युत्पादनम् ।	२४३
४१	शेषोत्सर्पिणीवर्णनम् ।	५१	वैताढ्यकुमारकृतमालसुरसाधनम् ।	२१६	६१, २१-२४ ^० आपातकिरातसाधनम् ।	२४५
४२	॥ इति द्वितीयो वधस्कारः ॥	५२	सुषेणेन सिन्धुपश्चिमनिष्कृतसाधनम् ।	२१७	६२ क्षुल्लकहिमवद्गिरिदेवसाधनम् ।	२४८
४३	विनीतावर्णनम् ।	५३	सुषेणेन तिमिश्रगुहादक्षिणकपाटो- द्घाटनम् ।	२२२	६३, २५-२६ ^० ऋषभकूटे नामलिल- नम् ।	२५०
४४	९-११ ^० चक्रोत्पत्तितत्पूजोत्सवाः ।	५४	मणिरत्नं, काकिणीरत्नेन मण्डला- लेखनं च ।	२२४	६४, २७ ^० नमिविमिसाधन खीररत्ना- सिन्धु ।	२५१
४५	सचक्रस्य मागधतीर्थगमनम् ।	५५	उन्मग्नानिमग्नास्वरूपम् ।	२२९	६५ खण्डपपाताधिपनृत्तमालसाधनं	२५२
४६	१२-१५ ^० मागधतीर्थकुमार- साधनम् ।	५६	आपातचिलातयुद्धम् ।	२३१	निर्गमश्च गुहाया ।	२५३
४७	वरदामतीर्थसाधनम् ।	५७	१८ ^० अश्वरत्नखङ्गरत्ने ।	२३३	६६, २८-४१ ^० गङ्गाकुले निधिप्राप्तिः	२५७
४८	१६-१७ ^० वास्तुनिवेशविधिः ।	५८	मेघमुखदेवाराधना वृष्टिश्च ।	२३८	पश्चिमदिक्साधनं विनीतागमश्च ।	२५७

६७	भरतस्य विनीताया प्रवेशः ।	२६०	७९ हैमवतान्वर्थः ।	३००	९२, ५४* उत्तरकुरुमाल्यवदादि- चक्षस्काराः ।	३३७
६८	भरतस्य चक्रवर्त्तित्वाभिषेकः ।	२६८	८० महाहिमवान् पर्वतः ।	३०१	९३ सहस्राङ्गकूटं माल्यवदर्थश्च ।	३३८
६९	रत्नानि ।	२७७	८१ महाहिमवति महापद्मादि ।	३०२	९४, ५६* कच्छविजयः ।	३४१
७०	चक्रिणः समृद्धिः ।	२७७	८२ महाहिमवति कूटानि ।	३०३	९५ चित्रकूटवक्षस्कारः ।	३४४
७१	भरतस्य केवल श्रामण्यं मोक्षश्च ।	२७८	८३ हरिचर्पम् ।	३०६	९६, ५६* शेषविजयादि ।	३४६
७२	भरतनामान्वर्थम् ।	२८०	८४ निषधः ।	३०७	९७, ५७-५८* विदेहद्वितीयविभागः ।	३४७
॥ इति भरतर्चाचरितवर्णनो नाम तृतीयो चक्षस्कारः ॥			८५ सनदीकतिगिच्छिद्रहवर्णनम् ।	३१०		
७३	शुल्लक्रहिमवत्स्वरूपम् ।	२८१	८६ महाविदेहाः ।	३१३	९८, ५९* सौमनसदेवकुरवः ।	३५२
७४	पद्मह्रदस्वरूपम् ।	२८२	८७ गन्धमादनः ।	३१६	९९ चित्रविचित्रकूटौ ।	३५३
७५	गङ्गासिन्धुरोहिताशा नद्यः ।	२९०	८८ उत्तरकुरवः ।	३२९	१०० निषधादिद्रहाः ।	३५५
७६	हिमवति कूटानि ।	२९६	८९, ४२-४३* यमकः ।	३२९	१०१ कूटशालमली ।	३५७
७७	हैमवत वर्पम् ।	२९८	९०, ४४-४६* नीलवदादिद्रहकाञ्चन- पर्वताः ।	३३०	१०२, ६०* विद्युत्प्रभः ।	
७८	शब्दपातवैताल्यः ।	२९९	९१, ४७-५३* जम्बूद्वि- विजयाः ।		१०३, ६१-६४* विजयाः ॥	

१०४, ६५* मेरुपर्वतः ।	३६०	त्सवः ।	३९१	॥ इति पञ्चमो जिनजन्ममाश्रितेकारयो
१०५ नन्दनवनम् ।	३६६	११६ पालकविमानम् ।	३९५	वक्षस्कारः ॥
१०६ सौमनसवनम् ।	३६९	११७ जन्ममहोत्सवाय यानविमानम् ।	३९९	१२५, परस्परस्पर्शजीवोत्पादौ । ४२५
१०७ पण्डकवनम् ।	३७०	११८ जन्ममहे शक्रेन्द्रागमः ।	४०१	१२६, ८१-८२* खण्डयोजनादिपिण्डः ।
१०८ अभिषेकशिला ।	३७२	११९, ७६-७८* जन्ममहे ईशानेन्द्रा- द्यागमः ।	४०५	॥ इति षष्ठो वक्षस्कारः ॥
१०९ मेरुकाण्डानि ।	३७३	१२०, ७९* जन्ममहे चमराद्यागमः ।	४०७	१२७, ८३* चन्दौ । ४३३
११०, ६६-६७* मेरुनामानि ।	३७६	१२१-१२२ जन्ममहे अच्युताभियोगः ।	४१२	१२८ सूर्यमण्डलानि । ४३४
१११, ६८* नीलवद्विरिवर्णनम् ।	३७८	१२३, ८०* अच्युताशीर्वादः शेषे- न्द्राभिषेकश्च ।	४१९	" ४३५
११२, ६९* रम्यकादीनि ।	३८३	१२४ कृताभिषेकजिनानयम् ।	४२२	" ४३८
११३, ७०* दिक्कुमार्युत्सवः ।	३८६			४४०
११४, ७१* ऊर्ध्वलोकदिक्कुमार्युत्सवः ।	३८८			
११५, ७२-७५* रुचकवासिकुमार्यु-				

१३५ दिनरात्रिमानम्	४४९	१४८ चन्द्रमण्डलायामादि ।	४६८	१६०, १०४-१० ^१ नक्षत्रगोत्रसंस्थाने ।	५००
१३६, ८४* तापक्षेत्रमानम् ।	४५३	१४९ चन्द्रमुख्यैर्गतः ।	४७०	१६१, १११-११८ ^१ नक्षत्रचन्द्रसूर्य-	
१३७ दूरादिदर्शनम् ।	४५८	१५० नक्षत्रमण्डलादि ।	४७४	योगकालः ।	५०१
१३८ क्षेत्रगमादिः ।	"	१५१ सूर्यादिरीशान्यादावुद्गमादिः ।	४७२	१६२, ११९ ^१ कुलादिपूर्णिमामावास्याः ।	
१३९ क्रियाः ।	"	१५२, ८५-९० ^१ सवत्सरभेदाः ।	४८५	५०४	
१४० ऊर्ध्वादितापः ।	४६२	१५३, ९१-९९* संवत्सरेषु पंचसु मास-		१६३, १२० ^१ माससमापकनक्षत्रवृन्दम् ।	
१४१ ऊर्ध्वोत्पन्नत्वादि ।	"	पक्षादिनामानि ।	४९०	५१५	
१४२ असूर्ये स्थितिः विरहादि च ।	"	१५४ करणाधिकारः ।	४९३	१६४, १२१-१२२ ^१ अणुत्वादि ।	५२१
१४३ चन्द्रस्य मण्डलम् ।	४६३	१५५ सवत्सराद्याधिकारः ।	४९४	१६५ परिवारः ।	"
१४४ " क्षेत्रम् ।	४६४	१५६, १०० ^१ नक्षत्राधिकारः ।	४९५	१६६ अवाधाः ।	"
१४५ चन्द्रयोरवाधाः ।	"	१५७, १०१ ^१ दक्षिणादियोगाधिकारः ।		१६७, १२३-१२५ ^१ अभ्यन्तरसंस्थान-	
१४६ चंद्रस्यायामः ।	"	१५८ नक्षत्रदेवाः ।	४९६	विस्तारादि ।	५२४
१४७ चन्द्रमण्डलवाधा ।	४६६	१५९, १०२-१०३ ^१ ताराणां सख्या ।	"	१६८, १२६-१२७ ^१ चन्द्रादिविमान-	

वाहकाः ।	५२६	१८० द्वीपनामहेतुः ।	५४०	निक्षेपाः ।	०
१६९ ज्योतिष्कगतिः ।	५३१	१८१ उपसंहारः ।	"	१ मिथिलामाणिभद्रजितशत्रुधारिणी- वर्णनातिदेशः, स्वाभ्यागमनादि (नम- स्कारार्हतोर्निक्षेपाः, नामस्थापना- द्रव्यभावनयमतानि, स्थापनानम- स्कार्यता) ।	१४
१७० ज्योतिष्काणामृद्धिः ।	"	॥ इति सप्तमो वक्षस्कारः ॥		३ श्रीगौतमवर्णनाद्यतिदेशः २, जम्बू- द्वीपस्य महत्त्वस्थानाकारादिप्रश्नो- चराणि (परिध्यानयनम्) ३ ।	२०
१७१ तारकान्तराणि ।	"	॥ इति जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तैर्विषयसूचिः ॥		४ जगतीपद्मवरवेदिकावर्णनम् ।	२७
१७२, १२८-१२९ अग्रमहिष्यो ग्रहाश्च ।	५३२	॥ अथ श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तैर्वृद्ध- विषयानुक्रमः ॥		५ वनखण्डवर्णनातिदेशः ।	३०
१७३ स्थितिः ।	"	श्रीवीरगन्धहस्तिमलयगिरिहीरविजय- सकलचन्द्राणां स्तुतिनमस्कारादि, शेषाङ्गोपाङ्गविवरणात्परिशेषताऽस्य, मलयगिरिकृतवृत्तिवृच्छेदः, गणिता- नुयोगोऽत्र, फलयोगमङ्गलादिविचारः, दशवर्षानन्तरमस्य दानं, उपक्रमादि- द्वारावतारः जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तीनां-		६ वनखण्डभूमिभागवर्णनातिदेशः ।	४७
१७४, १३०-१३१ नक्षत्राधिष्ठातारः ।	५३५			८ विजयादिद्वाराराजधान्यतिदेशः	
१७५ चन्द्राद्यरूपबहुत्वम् ।	५३६			७, विजयादिद्वारतत्स्थानोच्चत्वादि	
१७६ द्वीपेजघन्योत्कृष्टजिनादिसंख्या	"				
१७७ द्वीपस्योद्देशः ।	५३८				
१७८ शाश्वतत्वादि ।	"				
१७९ परिणामाः ।	"				

वर्णनातिदेशः ८ ।	६५	१६ वैताढ्यस्यान्वर्थतद्देवनामशाश्वत- त्वानि १५, उत्तरभरतार्द्धस्थानाकार- भागायामाकारमनुष्याकाराः १६, (जीवानयनयनरीतिर्जीवा च) ।	८६	२१ मत्ताङ्गशदिकलश्वशवर्णनातिदेशः ।	१८८
११ दक्षिणार्द्धभरतविभागायादि भूमि भागतन्मनुजनवर्णन च ।	७०	१७ ऋषभकूटवर्णनम् ।	८८	२२ भरते सुपमसुषमारकनरवर्णनम् ।	११८
१२ वैताढ्यस्य स्थानायामादिवनखण्ड- गुहाविद्याथरेश्रणिनगरतन्मनुजभि- योग्यश्रेणिदेवशिखरतलकूटसङ्ख्याः ।	७७	१८, ४-६* सुपमसुषमाद्याः काल- भेदाः, शीर्षप्रहेलिकान्ताना कालानां वर्णन च ।	९२	२३ तन्मनुजानामाहारार्थास्वादौ ।	११९
१३ सिद्धायतनकूटदेवच्छन्दकजिन- प्रतिमावर्णनादि ।	८२	१९, ७८* निश्चयव्यवहारपरमाणोरारभ्य योजनान्ताना पल्योपमसागरोपमा- दीना च निरूपणम् ।	९३	२४ तद्वसति. २४. गृहश्रमासिहिगण्य- राजदासाश्रात्ररिमित्रावाधेन्द्रमहनट- प्रेक्षाशकटगवाश्वसिंहशार्दुन्दाहि- स्थानुदशमशकडिम्बवदुर्भूतादिभावा भावविचारः "५ ।	१२५
१४, २३* दक्षिणार्द्धभरतकूटादितद्वासि- देवराजान्यादिवर्णनादि ।	८४	२० भरतसुषमसुषमारकस्य वर्णनम् ।	९९	२५ तद्गुग्मिनामायुक्षत्त्वसहननसंस्थान गतियुगलप्रसवाः पद्मगन्धादि(६)- भेदश्च ।	१२८
				२७ द्वितीया(कतद्गुग्मयुच्चत्वादि, एका- दि(४)भेदाश्च ।	१३१

- २८ सुपमदुष्पमाभागत्रयादि । १३२
 २९ सुमत्याद्याः(१५)कुलक्राः । १३३
 ३० कुलकराणां हकाराद्या दण्डनीतयः । १३५
 ३१ ऋषभदेवस्य कुमारवासमहाराज्य
 कलामहिलागुणशिल्पदर्शनपुत्रा-
 भिषेकदीक्षोत्सवाः । १४५
 ३२ ऋषभस्य साधिकवर्षचीवरधारितोप-
 सर्गसहनेर्यासमित्यादिश्रमणगुणाः
 केवलज्ञानोत्सादः सभावनाक्रमहाव्रत-
 प्ररूपणाः ऋषभसेनादिपरिवारादि-
 वर्णनं च । १५२
 ३३ ऋषभस्य पञ्चोत्तराषाढाऽभिलिप्ति-
 पष्ठत्वम् । १५६

- ३४ अष्टापदे निर्वाणं, देवेन्द्राद्यागमनं,
 जिनादिशरीरस्नानादि चित्ति
 सविश्रमहणं नन्दीश्वराष्टाहिकाकृत-
 समुद्रकक्षेपार्चाः । १६४
 ३७ दुष्पमसुषमायाः३५ दुष्पमायाः
 ३६ दुष्पमदुष्पमायाश्च वर्णनम्
 ३७ । १७२
 ३८ उत्सर्पिणीदुष्पमादुष्पमारक-
 वर्णनम् । १७३
 ३९ पुष्करसंवत्क्षीरघृतामृतरसमेधाः । १७५
 ४१ मांसादिर्वर्जनमर्यादा४०, तत्र दुष्पम-
 दुष्पमसुषमसुपमदुष्पमात्रिभाग-
 सुमत्यादि(१५)कुलकरवर्णनम्
 ४१ । १७८

- ॥ इति द्वितीयो वक्षस्कारः ॥
 ४२ विनीतावर्णनम् १८१
 ४३ भरतचक्रिणो लक्षणादिवर्णनम् । १८४
 ४४, ९-११ रत्नोत्पत्तिवर्द्धापनिकातद-
 र्चाप्रतिदानतन्महोत्सवमञ्जनेश्च
 रादिपरिवारानुगमनचक्ररत्नप्रमा-
 र्जनाष्टमङ्गलालेखनाद्युच्छुल्लक्रकादि-
 करणानि । १९४
 ४५, १२-१५ मागधाभिमुखचक्रगमन-
 भरतनिर्गमनपौषधशालाकरणाष्टम-
 पौषधशरोहाः । १९८
 ४६ लत्रणावतारदेवनत्यादिचापमोचन-
 क्रोधनामाङ्कदर्शनप्राभृतानयनाज्ञप्ति
 किंकरत्वप्रत्युत्तारमञ्जनगृहादि । २०५

४७ सैन्यवर्णनं, वरदामसाधनाय चक्रिणो
गमनम् । २०७
४८, १७ एकाशीतिपदादिविभागे
पौषधशालाकरणम् । २१०
४९ रथाश्वयोर्वर्णन, वरदामप्रभाससाध-
नादि । २१४
५० सिन्धुदेव्या अष्टमपौषधादि, अव-
धिनाऽऽलोक्य भद्रासनाद्युपायनादि । २१६
५१ वैताढ्यगिरिकुमाराष्टमपौषधान्ते कटक-
धर्षणादि, तिमिस्रगुहाधिपकृतमाला-
ष्टमान्ते तिलकचतुर्दशकार्पणादि । २१७
५२ सेनापतिवर्णन पाश्चात्यनिष्कुटे
हस्त्यादिरत्नैः सिंहलचर्वरादि-

देशसाधनाऽऽभरणभूषणोपायनादि । २२२
५३ सुषेणकृततिमिस्रगुहाद्वारोद्घाटन-
पौषधादि । २२४
५४ समहिममणिरत्नेनोद्घोतः, काकिणी-
रत्नेन मण्डला(४९)लेखनम् । २२९
५५ सक्रमेणोन्ममनिमग्नोत्तरणम् । २३१
५६ आपातचिलतैः सैन्यप्रतिरोधः । २३२
५७, १८ सुषेणकृतः समहिमाश्वासिरत्ना
भ्यामापातचिलतनिषेधः । २३८
५८ नागकुमाराधनाऽऽगमनवृष्ट्यादि । २४१
५९, १९ समहिमचर्मच्छत्ररत्नाभ्या
सैन्यरक्षा । २४३

६०, २० गाथापतिरत्नकृता शाल्या-
द्युपतिः । २४५
६१, २४ नागकुमारनिर्धाटन, चिलात-
वशीकाररत्नोपायनादि । २४८
६२ शुल्लरुहिमवत्कुमाराष्टममाला-
गोशीर्षोपायनादि । २५०
६३, २६ ऋषभकूटे नामलिखनम् । २५१
६४, २७ विनमिनम्यष्टमो दिव्यमत्या
स्त्रीरत्नरत्नाद्युवनं, गङ्गासाधनादि
च । २६४
६६ खण्डप्रपाताधिपचतमालसाधना-
ऽलङ्कारोपायनादि, सुषेणकृतगङ्गा-
पाश्चात्यनिष्कुटसाधनरत्नानयनादि,
खण्डप्रपातगुहाद्वारोद्घाटनादि,

६६,	उन्मग्ननिमग्नोत्तरणम् ।	२५६
६७	४१ ^१ गङ्गापश्चिमकूले निध्यष्टम- तःश्रादुर्भाववर्णनादि ।	२६०
६७	चतुर्दशरत्ननिधिनवकल्लोरत्नादि- युतस्य महद्भ्यां विनीताप्रवेशः ।	२६४
६८	चक्रवर्तिताऽभियेकवर्णनं, देवादि- सत्कारादि ।	२७६
६९	चक्रादिरत्नोत्पत्तिस्थानानि ।	२७७
७०	चक्रवर्तित्रहृद्विवर्णनम् ।	२७८
७१	आदर्शप्रेक्षणं, कैवल्यं, दशसाहस्र्या दीक्षा, अष्टापदेऽनशनादि ।	२८०
७२	॥ इति भरतचरित्रम् ॥ भरतान्वर्थं पल्योपमस्थितिको भरतो देवोऽपि ।	२८१

७३	॥ इति तृतीयो वक्षस्कारः ॥ क्षुल्लकहिमवद्वर्षधरवर्णनम् ।	२८२
७४	पद्महृदतत्पद्ममणिपीठिकाशयनीय- श्रीदेवीतत्सामानिकपद्मपरिक्षेपादि- वर्णनम् ।	२८८
७५	गङ्गासिन्धुरोहितांशाप्रपातकुण्डद्वी- पादिवर्णनम् ।	२९५
७६	हिमवति सिद्धायतनक्षुल्लहिमवत्कूटादि- (११) वर्णनम् ।	२९८
७७	हिमवद्वर्षाधिकारः ।	२९९
७८	शब्दापातिवृत्तवैताड्यतदेववर्णनम् ।	३००
७९	हिमवद्वर्षान्वर्थः ।	३०१
८०	महाहिमवत्पर्वताधिकारः ।	३०१

८१	महापद्महृदह्नादेवीरोहिताहरि- कान्तानदीप्रपातकुण्डद्वीपादिवर्णनम् ।	३०४
८२	महाहिमवत्कूटानि (८) ।	३०६
८३	हरिवर्षविकटापातिवर्णनम् ।	३०७
८४	निषधपर्वततिगिच्छहृदधृतिदेवी- वर्णनम् ।	३१०
८५	हरिसीतोदाप्रपातादिसिद्धायतन- कूटादि (२) वर्णनम् ।	३१२
८६	पूर्वपश्चिमविदेहदेवोत्तरकुरुभेदे- महाविदेहवर्णनम् ।	३१६
८८	गन्धमादनतत्कूट (७) ८७, उत्तर- कुरुतद्भूमिभागवर्णनं, पद्मगन्धाद्याः (६) जातयः ८८ ।	३१६

८२, ४३- यमकपर्वतसविस्तरतद्देव- राजधानीजिनसकथादिवर्णनम् ।	३२९	९४, ५५- कच्छविजयतद्वैताद्वयविद्या- धरनगराभियोगिकश्रेणिसिन्धु- गङ्गाकुण्डादिवर्णनम् ।	३४४	जातिवर्णनं १८, ५१* चित्रवि- चित्रकूटवर्णनं १९, निषादि(५)- द्रहवर्णनं च १०० ।	३५५
९०, ४६* नीलवदादिद्रह(५)काञ्चन- पर्वतवर्णनम् ।	३३०	९५ चित्रकूटवक्षस्कारतत्कूटादिवर्णनम् ।	३४५	१०२, ६०* कूटशालमलीवर्णनं १०१, विद्युत्प्रभवक्षस्कारतत्कूटदेवराज- धान्यन्वर्थो १०२, ६०* ।	३५७
९१, ५३* जम्बूद्वक्षवेदिकात्रिसोपान- मणिपीठिकाशालादेवच्छन्दजिन- प्रतिमाभवनशयनीयानाहृततत्परि- वारजम्बूपद्मादिपुष्करिणीकूट वर्णनं, जम्बूनामा (१२)ऽन्वर्थादि ।	३३७	९६, ५६- सुकच्छादिविजयतद्वाज- धानीगाथापरत्यादिकुण्डनदीतद- न्वर्थादिवर्णनम् ।	३५३	१०३, ६४* पक्ष्मादिविजयाश्च पुरादिराजधान्यङ्कावत्यादिवक्ष स्काराद्यतिदेशः ।	३५९
९२, ५४* उत्तरकुरोरन्वर्थः, माल्य- वद्वक्षस्कारतत्कूट(९)वर्णनं च ।	३३८	९७, ५८* सीतामुखनववच्छादिविजय- सुसीमादिराजधानीत्रिकूटादि- वक्षस्कारादिवर्णनम् ।	३५३	१०४, ६५* मेरुस्थानायामादि, भद्र- शालनन्दनसौमनसपण्डक- वनानि, कुमुदाद्याः पुष्करिण्यः, पद्मोत्तरादयो दिक्कूटाः ।	३६६
९३ हरिपहकूटतदधिपमाल्यवदन्वर्थं		१००, ५९* सौमनसवक्षस्कारसिद्धा- यतनादिकूटदेवकुरुपद्मगन्धादि-		१०५ नन्दनायामादिसिद्धायतनपुष्क-	

१.०६ रिणीनन्दनादि(९)कूटानि । ३६९	१.१३, ७० [*] जिनजन्माभिषेके भोगंकरा- द्यधोलोकवास्तव्यदिककुमारी ४०५	१.१९, ७८ [~] ईशानादि(९)देवेन्द्रा- गमनम् । ४०७
१.०७ सौमनसागामादि । ३७०	३८८	१.२०, ७९ [~] चमरवलीन्द्राद्यागमनम् । ४०९
१.०८ पण्डुशिलाद्यभिषेकशिलाः । ३७४	१.१४, ७१ [*] मेधंकराद्यूर्ध्वलोकदिककुमारी- कृत्यम् । ३९०	१.२१ अभिषेकसामग्र्यानयनम् । ४१२
१.०९ मेरोः काण्डत्रयस्य स्वरूपम् । ३७५	१.१५, ७२ [~] नन्दोत्तरासमाहरेला देव्यलाम्बुपादि(३२)पूर्वाद्विदिक- चित्रारूपादि(८) विदिगमध्य- रुचक्रदिकुमारीकृत्यम् । ३९५	१.२२ अभिषेकहिरण्यवृष्ट्यादिनाचगेय नृत्यादि । ४१९
१.१०, ६७ [*] मेरोर्नामान्यन्वर्थश्च । ३७६	१.१६ शक्रेन्द्रासनकम्पमृत्तिमहिम- चिकीर्षादेवाहानोदधेःषण्णालक- यानविकुर्वणदेयः । ३९९	१.२३, ८० [~] अलङ्कारविभूयाऽष्टमङ्गला- लेखन, मृत्तिः, वृषमश्रुतै- रभिषेकश्च । ४२२
१.११, ६८ [~] नील-द्वर्षधरसीतानारी- कान्तानदीसिद्धायतनादि(९)कूट- तदन्वर्थाः । ३७८	१.१७ पालकविमानरचना । ४०१	१.२४ जिनस्य प्रत्यनयनं, हिरण्यादि वृष्टिरशुभचिन्तननिरोधोद्घोष- णामष्टाहिका च । ४२५
१.१२, ६९ [~] रम्यकगन्धापातिरुक्मि- तत्कूट(८)हैरण्यवतमाल्यवन्त- वृत्तवैताढ्यशिशिरितत्कूटैरावत- स्वरूपतदन्वर्थाः । ३८२	१.१८ शक्रसामानिकदिनिर्गमप्रति- ॥ इति चतुर्थो वक्षस्कारः ॥	॥ इति पञ्चमो वक्षस्कारः ॥

- १२५ जम्बूलवणपदेशस्पर्शजीवप्रत्या-
गमनादि । ४२५
- १२६, ८२^१ खण्डयोजनवर्षवर्तकूट-
तीर्थश्रेणिविजयद्रहसरित्प्रमाणम् । ४३२
- ॥ इति पष्ठो वक्षस्कारः ॥
- १२७, ८३^१ चन्द्रादीना प्रकाशादि । ४३४
- १३१ सूर्यस्य चतुरशीत शत मण्डलाना
१२८, अभ्यन्तरबाह्यमण्डला-
बाधा १२९, प्रतिमण्डलमभ्यन्तरं
१३०, मण्डलायामविष्कम्भ-
परिक्षेपाः १३१ । ४३६
- १३२ सर्वाभ्यन्तरमण्डलमन्दराबाधा,
४३७

- प्रतिमण्डलं तद्वृद्धिः, बाह्यमण्डला
बाधा च ४३७
- १३३ अभ्यन्तरादिमण्डलायामविष्क-
म्भादि । ४४०
- १३४ मण्डलेषु मुहूर्त्तगतिः । ४४९
- १३५ दिनरात्र्योर्वृद्धिहानी । ४५३
- १३६, ८४^१ सर्वाभ्यन्तरादिमण्डलताप-
क्षेत्रस्थितिः । ४५८
- १३९ उद्गमनादौ दूरमूलादिदर्शनं
१३७, अतीतादिक्षेत्रे गमनादि
१३८, क्रियादि १३९ । ४६२
- १४१ ऊर्ध्वादितापः १४०, ऊर्ध्वरूप-
विमानोत्पन्नत्वादि १४१ । ४६३
- १४२ इन्द्रच्यवने सामानिकव्यवहारः,
४६४

- तद्विरहकालश्च । ४६४
- १४६ चन्द्रस्य मण्डलानि १४३, अभ्य-
न्तरबाह्यान्नाधा १४४, मण्डलपर-
स्पराबाधा १४५, मण्डलायामादि
१४६ । ४६६
- १४७ मेर्वभ्यन्तरादिमण्डलाबाधा । ४६८
- १४८ सर्वाभ्यन्तरादिमण्डलायामादि । ४७०
- १४९ अभ्यन्तरादिमण्डलेषु मुहूर्त्तगतिः ।
४७३
- १५० नक्षत्राणा मण्डलान्यवगाहोऽ-
भ्यन्तरबाह्यान्तरं च, परस्परमन्तर-
मायामादि मेर्वबाधा मुहूर्त्तगति-
अन्द्रमण्डलावतारभागशतगम-
नानि । ४८०

१५१ चन्द्रसूर्ययोरुदक्प्राच्युद्गमनादि- (दिनरात्रिमानाद्यतिदेशः) । ४८५	१५७, १०१* नक्षत्राणां चन्द्रेण दक्षिणोत्तरादियोगः । ४९८	१६३, १२०* श्रावणादिपूषापाढादि- नयनदिनमानपौरुषीमानानि योगादिसङ्ग्रहगथा च । ५२१
१५२, ९०* नक्षत्रादिसंवत्सरतन्मास- पर्वनक्षत्राणि । ४९०	१५९, १०३* अभिलिदादीना देवता १५८तारकाणि च १५९, १०३* । ५००	१६६, १२२ अश्वस्तनादिस्थान- शशिपरिवारादिसङ्ग्रहगथे १२२* चन्द्रसूर्ययोरधस्तना- दिषु तारकाः १६४, अष्टाशीति- ग्रहादिनामानि परिवारः १६५, मन्दरधरणीतलपरम्परज्योति- श्चक्र, द्वात्राधा १६६ । ५२४
१५३, ९९* लौकिकलोकोत्तरमास- पक्षदिवसतत्तिथिरात्रितत्तिथि मुहूर्तनामानि । ४९३	१६०, ११०* नक्षत्राणां गोत्राणि १०७*, संस्थानानि ११०*, ११० । ५०१	१६७, १२७* बाष्पाभ्यन्तरोपर्यधो- नक्षत्रचारश्चन्द्रसंस्थानादि च । ५२५
१५४ नवादीनि चलस्थिरकरणानि तत्तिथिनियमश्च । ४९४	१६१, ११८* अभिलिदादीनां चन्द्र- सूर्याभ्यां सह योगकालमानम् । ५०४	१६८, १२७* चन्द्रविमानवाहकदेव- वर्णनम् । ५३१
१५५ सवत्सराद्येषु चन्द्राद्यादयः, युगेऽयनादिमानं च । ४९५	१६२, ११९* कुलोपकुलतदुभयानि पूर्णिमाऽमावास्यातद्वक्षत्रकुलो- पकुलादियोगाः । ५१३	
१५६ नक्षत्रनामानि । ४९६		

१.७१ चन्द्रदीना शीघ्रमन्दगतयः १६९, महालग्नद्विकता च १७०, तार- कयोरन्तरम् १७१ ।	५३२
१.७३, १.२९ चन्द्रस्याग्रमहिष्यः, पूज्यजिनसक्थिभावाद्विमाने मैथुननिषेधश्च, अङ्गारकादिग्र- हाग्रमहिष्यः १.७२, १.२९ चन्द्रादिदेवदेवीजघन्योत्कृष्ट- स्थितयः १.७३ ।	५३५ ५३६
१.७४, १.३१* नक्षत्रदेवताः ।	
१.७६ चन्द्रादीनामल्पबहुत्व १.७५, जम्बूद्वीपे तीर्थंकरचक्रिबलवासु- देवनिधिपञ्चैकेन्द्रयरत्नसख्या १.७६ ।	५३८

१.७२ जम्बूद्वीपस्याग्रामविष्कम्भपरि- क्षेपोद्वेधोच्चत्वसर्वाग्राणि १.७७, तस्य शाश्वताशाश्वतत्व १.७८, पृथिव्यादिपरिणामः सर्वप्राणो- त्पातश्च १.७९ ।	५३९
१.८१ जम्बूद्वीपस्यान्वर्थः १.८०, उपसहारः १.८१ ।	५४२
॥ इति सप्तमो वंक्षस्कारः ॥ ॥ प्रशस्तिः ॥	५४६

॥ इति श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्ते-
र्बृहद्विषयानुक्रमः ॥

अथ श्रीनिरयावलिकासूत्रस्य सूत्रतदाथसूचा सान्तशब्दा सूत्राणि ३१; सूत्रगाथाः ५	
पत्राङ्क पत्रयङ्कः शब्दान्तः सूत्राङ्कः	
१ १२ पुद्गविसिलापट्टए	१
२ १७ पङ्गिया	२
३ १ विहरति	३
३ २१ कण्ठे १.० उ	४
४ १९ सुन्दवे	५
६ १७ ओयाए	६
९ ५ पङ्गिया	७
९ ९ उवक्ने	८
९ १७ अणुपविद्धा	९
११ १८ परिवहति	१०

११	२४	परिवहति	११	२९	१०	निकलेवओ ॥३॥	२५	३९	५	१२ य ॥१॥	१॥
१२	१३	संवडेति	१२	३५	३०	पणत्ते ॥४॥	२६	२६	॥ इति सूत्रगाथाङ्कसूचा ॥		
१३	२४	दाओ	१३	३६	१४	निकलेवओ ॥१॥	२७	२७	इति निरयावलिकासूत्रस्य सूत्रतद्गाथाङ्क-		
१४	८	हव्यमागच्छति	१४	३६	२२	सम्मत्तो ॥	२८	२८	सूचा ॥		
१५	६	होत्था	१५	३८	२५	"	२९	२९	—		
१५	८	विहरति	१६	४२	१०	"	३०	३०	॥ अथ श्रीनिरयावलिकाया		
१७	३	निच्छुहावेइ	१७	४२	१५	सम्मत्तं	३१	३१	बृहद्विषयानुक्रमः ॥		
१८	२५	उववन्ने	१८			इति सूत्राङ्कसूचा			१ राजगृह्नगरगुणशीलचैत्यादि-		
१९	२	पन्नत्ते	१९			अथ सूत्रगाथाङ्कसूचा			वर्णनातिदेशः ।	१	
१९	११	भाणियव्वो तहा	२०	१९	१६	परियत्ता ॥१॥	१	२	२ आर्यसुधर्मवर्णनाद्यतिदेशः केशिवत् ।	२	
२०	८	त्तिवमि ॥१॥	२१	२९	२०	॥१॥	२	२	३ जम्बूस्वामिवर्णनातिदेशः ।	३	
२१	४	सम्मत्तो	२२	२६	२१	समादहे ।	३॥	३	४ निरयावलिकाकल्पावतंसिकापुष्पिका-	४	
२३	५	निकलेवओ ॥१॥	२३	२७	१	समादहे ॥	३॥	४	पुष्पचूलिकावृष्णिदशावर्गाः,		
२३	२०	"	२४	३७	३	गंधदेवी य ॥१॥	४॥				॥ ८८ ॥

- निरयावलिकासु कालादी(१०)-
न्यध्ययनानि । ३
- ५ चम्पापूर्णभद्रश्रेणिकपुत्रकोणिक-
पद्मावतीकालीकालकुमारवर्णनाति-
देशः । ५
- ६ कालस्य रथमुशलसङ्ग्रामे गमनम् । ६
- ७ श्रीवीरसमवसरणादि, प्रश्ने रथमुशल-
युद्धे कालस्य कालकरणकथनम् । ९
- ८ कालस्य पङ्कजमाया हेमाभे दशसाग-
रस्थितिक्तयोत्पत्तिः । ”
- ९ युद्धनिमित्तकथनेऽभयस्य वर्णने चित्र-
स्यातिदेशः चेल्लणायाश्च प्रभावत्याः । ”
- १० गर्भागमनदोहदपूर्तिः । ११

- ११ गर्भस्यानाशः । ”
- १२ कोणिकजन्मोत्कुरुटिकायां त्यागः,
श्रेणिकग्रहण च । १२
- १३ कोणिकाङ्गुलीविधः, मुखे धरणमष्टको
दायश्च । १२
- १४ श्रेणिकबन्धनं, कोणिकस्य नृप-
त्वं च । १३
- १५ चेल्लणातुष्टिपृच्छा, स्वरूपकथन
परशुहस्तस्य गतिः, तालपुटभक्षण,
काणिकविलापः, चम्पानिवेशश्च । १४
- १६ कालादीना राज्यभागादानम् । ”
- १७ विहलस्य सेचनकक्रीडा, हार-
हस्तिगुगल्याचनं, विशालागमनं,
त्रिदूतप्रेषणम् । १७

- १८ अर्द्धराज्यदानेऽर्पणोक्तिः, काला
दीनमैकमत्स्य, युद्धाय निर्गमः, गण-
(१८)राजसभा, युद्धाय निर्गमः । १८
- १९ कालस्य दृढपतिज्ञवद्विदेहेषु मुक्तिः । १९
- ॥ इति प्रथमाध्ययनम् ॥
- २० सुकालकुमारवर्णन, शेषाणा(८)-
मतिदेशश्च । ”
- ॥ इति निरयावलिकायाः प्रथमो वर्गः ॥
- २१ पद्मादी(१०)न्यध्ययनानि, काल-
पद्मावत्यो पुत्रः पद्म, स्थविरा-
न्ते दीक्षा, सौधर्मे देवत्वम् । २०
- २२, १* सुकालपुत्रमहापद्मस्येशाने
गतिः, शेषाण्यष्ट* । २१

॥ इति द्वितीयो वर्गः ॥

२३, २४ चन्द्रस्योत्पत्तिः, पार्श्वान्तिके

दीक्षा च ।

२३

२४ सूर्यस्योत्पत्तिः ।

”

२५ शुक्रस्योत्पत्तिः, पार्श्वान्तिके सोमिल-

स्य यात्रादिप्रश्नाः, श्रावकधर्माङ्गी

कारः, मिथ्यात्वं, आम्नाद्यारोपणं,

होतृकादिषु तापसत्वं, दिशा प्रोक्षणं,

देवागमः, दुष्प्रव्रजितत्वाख्यानं, काष्ट-

मुद्राबन्धः पञ्चमदिवसे प्रश्नोत्तरे,

अणुव्रतपतिपत्तिश्च ।

२९

२६ सुभद्रायाः पुत्राभिलाषः, सुव्रता-

ऽऽर्याऽऽगमन, श्रावकधर्माङ्गीकारः,

दीक्षा, बालाभ्यङ्गनादि, पृथग्भावः,

बहुपुत्रिकतयोत्पत्तिः, विभेले जन्म,

द्वात्रिंशत्पुत्राः, राष्ट्रकूटाज्ञा, श्रावक-

धर्माङ्गीकारः प्रव्रज्या च ।

३५

२७ पूर्णभद्रदीक्षादि ।

३६

२८ माणिभद्रदीक्षादि, दत्ताद्यतिदेशश्च ।

॥ इति तृतीयो वर्गः ॥

२९, ४॥ भूता दारिका, पार्श्वसमवसर-

णादि, भूनादीक्षा, शरीरचकुशत्व,

ह्रीदेव्याद्यतिदेशः ।

३८

॥ इति चतुर्थो वर्गः ॥

३०, ५॥ निषा(१२)व्यधयनानि,

रैवतकनन्दनद्वारवतीकृष्णवर्णनं,

नेमिगणभृद्वरदत्तकृता निषधपृच्छा,

वीराङ्गदभवे दीक्षा, मनोरमे देवः,

निषधस्य धर्मजागरिका, दीक्षा,

सर्वार्थसिद्धे देवत्वं, विदेहेषु मुक्तिः ।

४२

॥ इति पञ्चमो वर्गः ॥

३१ निरयावलिकाश्रुतस्कन्धवर्गादि ।

॥ इति श्रीनिरयावलिकाया

बृहद्विषयानुक्रमः ॥

॥ अथ श्रीचतुःशरणादिप्रकीर्णक-

दशकस्य बृहद्विषयानुक्रमः ॥

१ ॥ अथ चतुःशरणम् ॥

१* आवश्यकषट्के पडार्थाधिकाराः । १

६ ७* सामायिकेन चारित्रस्य चतुर्विंशति-

स्त्वेन दर्शनस्य प्रतिपत्त्या ज्ञानादीनां

- प्रतिक्रमणेन तत्संवलितस्य
कायोत्सर्गेण चरणव्यतिचाराणा
प्रत्याख्यानेन तपोऽतिचारस्य सर्व-
रावश्यकैर्व्याचारास्य च शुद्धिः । १
८ स्वप्नचतुर्दशकम् । १
९ कुशलानुबन्धध्ययनकीर्त्तनप्रतिज्ञा । १
१० चतुःशरणदुष्कृतगर्हसुहृत्तानु-
मोदनानि । १
११ अर्हदादिचतुष्कशरणलाभो धन्यस्य । १
१२ विविधाहर्दुणकीर्त्तनेन तच्छरणम् । २
२१ विविधसिद्धगुणकीर्त्तनतच्छरणे । २
४० चतुर्दशपूर्व्यादिसाधुशरणम् । १
४८ विविधमहिम्ना धर्मस्य शरणम् । ४

- ५४ मिथ्यात्वार्हदाद्यवर्णजीवपरितापना-
धर्मविरुद्धादीनां गर्हा । ४
५८ अर्हदादीनामर्हत्त्वादेर्जिनवचना-
नुसारिकृत्याना चानुमोदना । १
६० कुशलप्रकृतिवन्धशुभानुबन्धादि । ५
६३ त्रिकालकर्त्तव्यता जन्मसफलता
निवृत्तिकारणत्व च । ५
॥ २ अश्रुतुरप्रत्याख्यानम् ॥
६४ बालपण्डितमरणलक्षणम् । १
६५ देशविरतिलक्षणम् । १
६८ अणुव्रतगुणव्रतशिक्षाव्रतानि । १
७० बालपण्डितमरणे आशुकार
मरणादिकारणानि । ५
७१ भक्तपरिज्ञोक्तोपक्रमातिदेशः । ५

- ७२ कल्पोपपत्त्यादि तत्फलम् । ५
७३ पण्डितपण्डितमरणोपक्रमः । ५
१ उत्तमार्थादिप्रतिक्रमणमज्ञानादि-
ध्यानत्रिषष्टिप्रतिक्रमणं च । ६
७८ श्रीवर्द्धमानगणधरनमस्कारः, प्राणा-
रम्भादिप्रत्याख्यान, साम्यं, वैराशा
ना व्युत्सर्गः, समाधिपालनमाहार-
सञ्ज्ञागौरवकषायममत्वत्याग-
क्षमणानि साकारप्रत्याख्यान च । ७
८६ सिद्धनमकारः, तत्त्वश्रद्धा, पाप-
प्रत्याख्यानं, संस्तारकप्रतिज्ञा,
दुष्कृतव्युत्सर्गः, सामायिकोच्चारः,
उपधिशरीरादिव्युत्सर्गः, साम्यादि,
रागाद्युत्सर्गः, आत्मालम्बनं च । ७

- ८७* आत्मनो ज्ञानादिमयत्वम् । ७
९४* एकशस्यैवोत्पत्त्यादि, आत्मनः शाश्वत-
त्वं, संयोगमूलं दुःखं, मूलोत्तर-
गुणानाराधनाप्रतिक्रमणं, भयमद-
संज्ञागौरवाशातनारागद्वेषासंयमा
ज्ञानमिथ्यात्वममत्वननिन्दागर्हादि । ८
९५* बालवदालोचना । ”
९६* आलोचकगुणाः । ”
९७* अकृतज्ञताक्षामणम् । ”
९८* बालादि(३) मरणत्रयलक्षणानि । ”
९९* अनाराधकलक्षणानि । ”
१००* मरणविराधनाया कान्दर्पिकाद्या
(५) देवदुर्गतयः, दुर्लभसुलभ-
बोधिलक्षणं, अनन्तपरीत्तससारि-

- लक्षणम् । ८
१०७* जिनवचनाज्ञस्य बालमरणम् । ”
१०९* शस्त्रग्रहणादीनि मरणानुबन्धीनि,
पण्डितमरणप्रतिज्ञा । ९
११०* उद्वेजकजातिमरणवेदनास्मरणम् । ”
१११* वेदनोत्पादे स्वभावदर्शनम् । ”
११४* सर्वपुद्गलाहारादि, सरिद्धिर्लवण-
वत्कामभोगैरवृत्तिः, सचित्ताहार-
विपाकेक्षणम् । ”
११८* परिक्रमण आवश्यकत्वम् । ”
१२४* भवविमुक्तिलक्षणं, सर्वज्ञोपदेशः,
चीतरागहेतुपदस्मृतिः, आराधना-
फलम् । १०
१२६* श्रमणत्वसंयतत्वध्यानं, शेषशु-

- त्सर्गः, जिनवचोमार्गलाभः, मरणे
निर्भयत्वम् । ”
१२८* धीरकापुरुषपुशीलदुःशीलानां
मरणम् । ”
१२९* ज्ञानाद्युपयोगकारकस्य मुक्तिः । ”
१३०* चिरोषितब्रह्मचर्यादिसिद्धिः । ”
१३१* निष्कपायादेः शुभप्रत्याख्यानता । ”
१३३* आतुरप्रत्याख्यानस्य फलमुप-
संहारश्च । ”
॥ ३ अथ महाप्रत्याख्यानम् ॥
१५७* तीर्थकरादिनमस्कारः, श्रद्धानं,
पापप्रत्याख्यानं, दुष्कृतनिन्दा,
सामायिककृतिः, उपध्यादित्यागः,

रागादिद्व्युत्सर्गः, क्षामणा, निन्द्य-
निन्दादि, ममत्वपरिज्ञानादि,
आत्मनो ज्ञानत्वादि, अराधना-
निन्दादि, आत्मन एकत्वादि, सयोग-
मूल दुःख, असयममिथ्यात्वादि-
परिज्ञानादि, अपराधक्षामणा,
बालवन्मायात्यागेन ऋजोनिर्माणम् ।

१६२ भावशल्यदोषाः ।

१६५ आलोचनादिना कर्मलघुता, यथा

वत्प्रायश्चित्तकृतिः, यथानुत्तकथनम् ।

१६७ प्राणारम्भादिप्रत्याख्यानम् ।

१६९ पालनभावविशुद्धस्वरूपम् ।

१७१ क्षीरनयनोदकयोः सागरसमत्वम् ।

१८१ थाबल्लोकप्रदेश प्रतियोनि च मरणं,

बालमरणानि, मात्रादिसम्बन्धबहुता,

एकस्य कर्मकरणादि, गतिचतुष्क

वेदनादे स्मरणेन पण्डितमरणम् ।,

२०९ पण्डितमरणे फल, विधिः, सर्व-

पुद्गलानामाहारपरिणामिते, नरक-

म्लेच्छजातिभ्रमणम्, कामार्थ-

भोजनगन्धशब्दादि, युग्यादिसुखे-

रतृप्तिराणं च, राज्यभोगैरपि,

तृष्णासुखेच्छादोरच्छेदः, प्रार्थना-

निन्दा, मुक्तिकारणानि, महात्रा-
रोपः, क्रोधकलहादित्यागः, इन्द्रिय-

सवरणादि, लेख्याभयगुत्यादीनां

त्यागादाने ।

२१२ सगशल्यत्यागः, गुप्तिसमितिशरणं,

उपदेशबलेन तपःपौतधरणम् ।

२१७ कन्दरासु दुर्गन्धार्थसाधन, किं पुनः

सङ्ग्रहबले जिनोक्तिश्रवणे च,

शिलातलगता धन्याः ।

२२१ परिकर्मण आवश्यकता ।

२२२ तपसा कर्मनाशः ।

२२३ पण्डितमरणान्मरणान्तः ।

२२५ अनशनादिना पण्डितमरणम् ।

२२६ इन्द्रियसुखसातस्य मोहः ।

२२७ लज्जादिनाऽनालोचकाऽनाराधकाः ।

”

- २३१ आराधनायाः श्रेयस्त्वं, आत्मनः
संस्तारकत्वं, जिनवचनानुगमादिना-
ऽमृदुसञ्जता, प्रमोदे तपोलोपः । १६
- २३४ संवरेण कर्मदाहः ज्ञानिनः कर्म-
क्षयश्च । १७
- २३९ मरणे पदस्याप्युपकारः । ”
- २४० धर्मस्य भूतहितत्वादित्वम् । ”
- २४४ श्रमणत्वाद्यनुष्ठानं, निषिद्धत्यागः,
उपध्यादेरचिन्तनीयादेरसंयमादेश्च
व्युत्सर्गः । ”
- २४६ एकेनापि पदेन प्रत्याख्यान, त्समाधिः । ”
- २५१ अहंतिस्त्वाचार्योपाध्यायसाधूनां
मङ्गलत्वादि । ”

- २५३ सिद्धोपसम्पत्त्यादिना आराधकत्वम् । १७
- २५८ वेदेनामु नरकवेदनानां कृतकर्मणा
दुःखविपाकानां च स्मरणम् । ”
- २७२ अभ्युद्यतमरणं महापुरुषसेवितं,
तपःस्नेहपानं, आराधनापताकाहरणं,
कर्मदल्लीच्छेदः, भवत्रयेण मुक्तिः,
रक्षावतारः, चक्रकक्षता, कषायादि-
नाशेन पताकाहरणं, जीवनमरणयो-
रचिन्ता, उद्यतेर्भावस्त्वं उत्कृष्टजवन्त्य-
मध्यमाराधनाफलम् । १९
- २७५ सर्वभूतसाम्यादि धीरमरणं प्रत्या-
ख्यानफलं च । ”

- ॥ ४ अथ भक्तपरिज्ञा ॥
- २८० वीरनमस्कारः शासनस्तुतिः ज्ञान-
व्यवसायोपदेशः, मोक्षमुखस्या-
बाध्यता, भवसुखस्य परिणामि-
दाशुणता च । २०
- २८३ आज्ञाऽऽराधनात् शाश्वतसुखं, ज्ञाना-
द्याराधनं, अभ्युद्यतमरणेनाविकला-
राधनम् । २०
- २९० भक्तपरिज्ञा (३) अभ्युत्तमरणी,
सविचाराविवारमाद्यं, धृतिचलविक-
लानां प्रथमसुखविपासितादीनां
भक्तपरिज्ञा । २०
- २९१ भवस्य दुरन्तता । २०
- ३०४ नत्वा भक्तपरिज्ञाविज्ञप्तिं, आलो-

चनादिप्रतिपत्तिः, वन्दनं, शुद्धि-
हेतुराराधना, बाल्यादालोचनादान,
प्रायश्चित्तप्रतिपत्तिः, महाव्रताद्यारोपण,
यावज्जीवप्रतिज्ञाप्रत्यर्पणं; उपस्थापना,
देशविरतस्याणुव्रतारोपणा २१

३१०* गुरुसङ्घपूजा, जिनेन्द्रभवनानि
द्रव्यदानादि, सत्तारकप्रज्जया,
चरमप्रत्यख्यान, भक्तपरिज्ञाप्रति-
पत्तिः । २२

३१४* क्षेत्रप्रतिलेखना, त्रिविधाहार-
प्रत्यख्यान, द्रव्यदर्शन, मुक्त्वा
ऽपि सवेगः, शुभध्यानम् । ”

३१७* समाधिपान तल्लक्षण फल च । ”

३२५* सङ्घनिवेदनमुत्सर्गश्च, चतुर्थाऽऽ-

हारत्यागः, चैत्यवन्दनं, सङ्घक्षामणा,
आचार्यादिक्षामणा, अपराधक्षामणा,
मृगावतीवत्पापक्षयः । २३
३२७* अनुशास्तिस्वरूपम् । ”

३३४* मिथ्यात्वच्छेदः, सम्यक्त्वभावा,
वीतरागभक्तिः, नमस्काररतिः,
स्वाध्यायोद्यमः, व्रतारक्षा, शल्य-
त्यागः, इन्द्रियदमः, कपायधातः,
मिथ्यात्ववर्जन, दृढसम्यक्त्वता,
नमस्कारकुशलता च । ”

३४१ मृगतृणावदधर्मास्तुखेच्छा,
अभ्यादेरपि तीव्रं मिथ्यात्व, दत्त
इव साधुद्वेष द्वयसन, सम्यक्त्वप्रति-
ष्ठानि ज्ञानादीनि, जिनशासनरक्तता,

सदर्शनस्यापर्यटनं, दर्शनरहितस्या-
सिद्धिः, सदर्शनस्य जिननामदर्शन-
स्यानर्घ्यता, अक्षयसुखहेतुता च । २४
३५०* अर्हदादिभक्तिः, दुर्गतिनिवारणं,
परम्परसुखप्राप्तिश्च, नाभक्तिमतो
निवृत्तिः, अभक्तिमानुषरे शालीवापी
अबीजसस्येषुः अनभ्रवर्षेषुश्च
मणिकारदृष्टान्तः । २४

३५६* ससारक्षयकारणो नमस्कारः,
ससारोच्छेदः, मेण्डदृष्टान्तः, त
विना द्रव्यलिङ्गत्व, आराधनाहस्तः,
सुगतौ रथः, सुदर्शनदृष्टान्तः । २५

३६३* ज्ञानं, हृदयपिशाचवशीकरण,
हृदयकृष्णसर्पोपशमन, मनोमर्कट-

वन्यनं, संसारेऽप्यनाशकारणं,
यन्नेषः चिलातिपुत्रस्य च

दृष्टान्तः ।

२५

३७? जीववधत्यागः, आत्मौपम्येन दया,
अनन्यधर्मत्वं, वधे सम्बन्धिवधः,
दयायां स्वदया, हिंसाफलं दुःख,
अहिंसाफलमारोग्यादि, चण्डाल-
दृष्टान्तः ।

२६

३७६ यतेरपि भाषादोषेन लेपः, सत्य
प्रशस्तं, सत्यवचसो विश्वासादि,
इतरस्य पाषण्डचाण्डालता, वसु-
दृष्टान्तः ।

२६

३८? अदत्तदन्तशोधनस्यापि त्यागः,
अर्थहारी जीवितहारी, अदत्त लोक-

धर्मविरुद्धं, दारिद्र्यादिहेतुः,
श्रावकपुत्रो दृष्टान्तः ।

४०५? कामा दोषहेतवः, दुःखावहा मैथुन-

सञ्ज्ञा, कामो भुजङ्गोपमः, लल्लक-
वेदना, वणिजः कुवेरदत्तस्य च
दृष्टान्तः, महिला दोषवृष्ट्यः, दुःख-
समुद्रगतहेतुः, नदीवद् गुरुगिरि-
भेदिन्यः, महिलासु भुजङ्गीष्विव-
वाविश्वासः, निधनकारिकाः,
हृदयहारिकाः वध्यमालावद्वि-
नाशिकाः मालतीव मर्दनासहाश्च,
देवरतिनृपदृष्टान्तः, शोकदुरिता-
दिकारिण्यः अपलापनस्थानं घन-
मालावनमोहविषयवर्द्धिन्यः चारित्र-

प्राणनाशिकाः मुनिमनोविद्राविकाश्च
सिंहगुहावासिमुनिदृष्टान्तः, नदीवन्धि-
मज्जिकाः, तारुण्य महार्णववत् । २८
४०९? सङ्गवर्जनं, सङ्गेन मारणादि, मणि-
पतिदृष्टान्तः, निःसङ्गस्य चक्रिणो-
ऽप्यधिकं सुखम् । २८

४१६? निदानम्वरूपं, रागद्वेषमोहभेदाः,
गङ्गदत्तविश्वभूतिचण्डपिङ्गलदृष्टा-
न्ताः, काचेन वैदूर्यहारणं, दुःख-
क्षयादिप्रार्थनं, निदानादिरहितः
शिवसाधकः । २९

४२४? इन्द्रियासक्तः संसारभ्रमिः, स्वा-
स्थिलेहनवद् विषयाः, सङ्गे परिश्रमः,
कदलीवन्निस्सारा विषयाः, प्रोषित-

प्रियादिका(५)दृष्टान्ता, विषया- २९
पेक्षस्य भवः ।
४२९ इन्द्रियदमः, आराधना, क्रोधा-
दिनिग्रहः, सुखदुःखे तद्भावाभावजे,
नन्दपरशुरामाद्या दृष्टान्ताः । ३०
४४७* अनुशास्तिप्रार्थना, परीपहादि-
सभवे प्रतिज्ञास्मारण, अवन्ती-
सुकुमालदृष्टान्तः, भवनेगुण्य,
धर्मयानदुर्लभता, चिन्तामण्यादि-
वदपूर्वता; नमस्कारस्मरणेन प्राण-
त्यागः, जघन्यतः सौम्यैः उत्कृ-
ष्टतोऽच्युते सर्वार्थसिद्धौ वा, उप-
सहारः । ३१

॥ ५ अथ तन्दुलं वचारिकम् ॥
४५०* मङ्गलादि, अभिधेयनिर्देशः । ३१
४५५* गर्भे दिनरात्रिमुहूर्तस्थासमानम् । ३२
४६१* योनिः क्रतुर्बीजकालमानम् । ”
४६३* लयादीनां रक्ताद्युत्कटत्वं, स्थान,
पितृपुत्रसंख्या, गर्भस्थितिः । ”
२ ओजोआहारः ”
३ कललविदुपेक्षोपमृत्यवस्था, शिरार्धमनी-
रोमादिसंख्या । ३३
४ गर्भगस्योच्चारार्धमात्रं, सर्वाहारस्य
श्रोत्रादीन्द्रियतयोपपन्नं । ”
५ कवलं हाराभावः, सर्वत आहारादि,
रसहरणीशिरास्त्वरूपम् । ”
६ ओजआहारः, रसहरण्याऽऽहारः । ३४

७ मातापित्रङ्गानि । ३४
८ गर्भगस्य नरके उपपातः । ”
९ गर्भगस्य देवलोके उपपातः । ”
१० गर्भगस्य चानत्वादि । ३५
४६८* पद्मैर्गर्भस्वरूपम् । ”
११, ४७०* स्त्रीत्वा(४)दन्यतरजन्म ३६
१२ पादादिना जन्म । ”
४७१* द्वादश वर्षाणि गर्भस्थितिः । ”
४७३* जन्मदुःखादिना जातिस्मरणाभावः
मातुर्वेदना च । ”
४७७* अशुचिस्वरूपम् । ”
४८८* बालादि (१०) दशस्वरूपम् । ३७
१३, ४९१* दशाक्षेपणोपक्षेपाद्यवस्था । ३८
४९६* सुखिनोऽपि धर्मकर्तव्यता, दुःखिनो

विशेषेण, सुखप्राप्तये दुःखवारणाय
च धर्मः, जातिकुलादिपुरस्कारश्च
पुण्येन ।

३८

१४ वातिकादिरोगचहुलत्वेन शोभना
भविष्यन्ती धर्मचिन्ता ।

४०

१५ युगलधार्मिकपुरुषवर्णनम् ।

४१

१६ संहननसंस्थानवर्णनम् ।

४२

५०१ संहननसंस्थानादिहानिः ।

४३

५२२ वर्षशताशीर्वादि युगायनर्तुमास-
पक्षरान्निदिवसमुहूर्तचङ्चलसंख्या,
तन्दुरुसङ्ख्या मुद्रलवणस्नेहपट-
शाटकसङ्ख्या, समयोच्चैःसप्राण-
स्तोकलवमुहूर्तसंख्या, नालिका
छिद्रस्य तदुदकस्य च स्वरूपं, वर्ष

रात्र्युच्चैसादिमानम् ।

४४

५२९ आयुषि निद्रादिविभागः, धर्माकरणे
पश्चात्तापः, आत्मज्ञानोपदेशः, जीवि-
तादीनां नदीवेगादिसमत्वं, भवस्य
जरामरणव्याप्तत्वम् ।

४५

१७ पृष्ठकरण्डकपांशुलिकादिमानादि-
अधोगामिन्यादिस्त्रिरास्वरूपं, पित्तधारि-
ण्यादिशिरामानं रुधिरादिमानं च ।

४६

५३१ अन्तर्बाह्यपरिवर्तजुगुप्सा, आच्छा-
दनाच्चैरम्यता ।

४७

१८ मनुष्यशरीरस्याशुचिता ।

४८

१६८, १९२ विषयवैराग्यं, स्त्रीनिन्दा,
बहिःपदार्थैर्मनोहरता ।

४९

२० स्त्रीणां प्रकृतिविषमत्वादि(९३)स्वरूपं,

नार्यादितत्पर्यायव्युत्पत्तिश्च ।

५२

५७६ स्त्रीचरित्रस्वरूपे ।

५३

५८३ जडस्य सर्वं निरर्थकं, पुत्रादि
नालम्बनं, मरणे द्वितीयो धर्मः, धर्म एव
त्राणशरणादि प्रीतिकरादिश्च, भोगज्ञाने-
न्द्रत्वादि राज्यादि च धर्मफलम् ।

५३

५८६ उपसंहारः, उपदेशश्च ।

५४

॥ ६ अथ संस्कारकर्मकीर्णकम् ॥

५५

५८७ वर्धमाननमस्कारादि ।

५६

६०० संस्कारकस्याराधनादिस्वरूपत्वं,
मृतग्रहणाद्युपमा च, देवेन्द्रध्येयत्वं,
सत्यसिन् सिद्धिपताका, शुक्लध्यान-
केवलज्ञाननिर्वाणलभः, श्रामण्यस्यो-
त्कृष्टता ।

६४

६१४* संस्तारकस्य परममङ्गलता, तद्वतः,
शौर्यं, परमार्थलाभः, वसुधारोपमा,
कल्याणरत्नमालारत्नाहरणं, निर्वाण-
लामाश्रवनिरोधाद्यर्थत्रिकत्वातीर्थ-
त्वं, निर्वाणस्य राज्यत्व, राज्या-
भिषेकता, परमार्थता, देवानाम-
पि विनयः, चन्द्रादिवत्प्रेक्षणीय-
त्वादि । ५२

६२९* संस्तारके श्रमणस्वरूपं, शुद्धा

शुद्धसंस्तारकस्वरूपम् । ५६

६३७* संस्तारके प्रथमदिवसे लाभबहुता,
प्रतिसमय कर्मक्षयः, तत्र चक्रिगोऽ-
प्यधिक सुख, नाट्याज्जिनवचने
परा रतिः, वीतगस्त्यः शुद्ध सुख,

सेवितगच्छा अपि भवे मग्नाः । ५७

६३८* अन्तेऽपि संस्तारकादात्मनः पथ्यम् ।

५६

६४०* आत्मैव संस्तारकः, संस्तारके यथा-

ख्यातत्वम् । ५७

६४१* वर्षारात्रे तत्त्वा हेमन्ते संस्तारकः ।

५७

७७४* अर्णिकापुत्रस्य स्कन्धकशिष्याणां

दण्डकस्य सुकोशलर्षेः, अवन्ती-

सुकुमालस्य कार्तिकार्यस्य

धर्मसिंहस्य चाणक्यस्य अमृत-

घोषस्य चण्डवेगस्य ललितघटायाः

सिंहेनस्य कुरुदत्तस्य चिला-

तीपुत्रस्य मजसुकुमालस्य वीर-

शिष्ययोश्चाराधनाया दृष्टान्ताः । ५९

६७८* सागारप्रत्याख्यानं, पानकव्युत्सर्जेन च

सर्वसङ्घक्षामणा, सर्वोपराधक्षामणा ,”

६८४* उत्तमार्थानुमोदनं, चतुर्गतिमुत्स

दुःखस्मरणं, नरकेऽवशातन, देव-

मनुजत्वे पराभियोगः, तिर्यक्त्वे

भीमवेदनादि. अतीतजन्ममरणा

नन्त्यम् । ५२

६८६* मरणभयजन्मतु खचिन्तनाच्छरी-

राः प्रामाण्यत्वचिन्तनाच्च मगत्वोच्छेदः ।

६८८* कायममत्वेन निर्विशेषदुःखम् । ६०

६९२* सङ्घस्य आचार्यादि श्रमण-

सङ्घस्य जीवराशेश्च क्षामणम् ।

”

६९४- क्षामितातिचारदिरनन्तभवकर्म-

क्षपणम् ।

६०

७०९- अनुशक्तिः, गिरावण्युत्तमार्थ-

साधनं, धर्मार्थं शरीरत्यागः, संस्ता-

रात्कर्मवल्लीकर्म, ज्ञानिनो बहु-

कर्मक्षयः, संस्तारात्तृतीये भवे

मुक्तिः, सङ्घस्य महासुकुटुम्बं चन्द्रक

वेधसमत्वं संस्तारकस्य, उपसंहारश्च ।

६१

॥ ७ अथ गच्छाचारप्रकीर्णकम् ॥

७१०- मङ्गलाभिधेयादि ।

७१६- गच्छवासेऽपि तन्निरीक्षाणां भव-

वृद्धिः, निपुणगच्छे वासः ।

७१७- गच्छस्य मेढ्यादिभूत आचार्य-

स्ततस्तत्परीक्षा ।

७२०- उन्मार्गस्थितसूरिलक्षणम् ।

७२२- आचार्यस्याप्यालोचना ।

७२५- सङ्ग्रहादिहीनः सामाचार्यग्राहकः

मार्गदिशकश्च सूरिवैरी ।

७२७- सारणादिमान् भद्रकः गुर्वबोधकः

शिष्यो वैरी ।

७२९- गुर्वनुशासनविधिः ।

७३०- सचारित्रिलक्षणम् ।

७४०- सन्मार्गोन्मार्गस्थितसूरिलक्षणानि ।

७४५- शुद्धकथकस्य संविग्रपक्षता संविग्र

पक्षलक्षणं च ।

७४८- केषाञ्चित्सूरीणां नामग्रहेऽपि प्राय-

श्चित्, प्रतिपृच्छादिरहितत्वे स्वच्छ

न्दता, शिष्यवर्गनिोदने आज्ञा-

विराधना ।

७२८- गच्छकुगच्छलक्षणं गीतार्थमहिमा

अगीतार्थनिन्दा च अगीतार्थकुशी-

लादिसंसर्गवर्जनम् ।

७५९- कुगच्छरक्षणम्

७६७- गच्छावासे फलं, गच्छवासिलक्षणं च ।

६५

७६८- आहारकारणानि ।

७७१- ज्येष्ठसन्मानं आर्याकरुपाभोगः

तदङ्गोपाङ्गाध्यानं च गच्छे ।

७७९- आर्यासंसर्गवर्जनम् ।

७८०- अष्टचारित्रस्य निग्रहः ।

७८४- संनिहितादिवर्जनं, निभृतस्वभाव-

त्वादि, नानाभिग्रहाः, पृथग्याद्य-
पीडकत्व च । ६६

७८५* स्वर्ण्यप्रमाणेन दयाहीनत्वम् । ”

७८६* जलवर्जन, उवलनोज्ज्वलनवर्जन,

यतनया स रूपिकादिभिः कारण,

पुष्पादिसघट्टनादिवर्जन, हास्यको-

ट्टादेः स्त्रिया बालादिकानामपि

करतनुस्पर्शस्य च वर्जनम् । ६७

७९४* अहंतोऽपि स्त्रीकरस्पर्शे निर्गुणत्वम् । ”

८१४* अयोग्यादीक्षणं, निर्गुणनिर्घाटन,

शुषिराणामपरिभोगः, शुक्लं वल,

हिरण्याद्यस्पर्शः, आर्या प्रतिग्रहाभोगः,

तदौषधाभोगः, एकस्त्रीसङ्गवर्जन,

आर्याऽध्यापनवर्जनं, स्त्रीराज्यकुत्सा,

मण्डल्यमार्याऽनागमः, कषाया-

नुदीरकत्व, कषायरोधः, बहवो-

गीतीार्थाः, अशूनत्व, चारित्रोच्चव-

ल्व, कयविक्रयवर्जन, सुविहिते

वासश्च । ६८

८१६* उपाश्रयस्यैकशुद्धादिना क्षुल्लि

कादिना वा न रक्षा । ”

८१७* वहि-श्रमणीवसतौ दुर्गच्छत्वम् । ”

८२०* एकाकिश्रमणश्रमणीजल्पे जकार-

मकारादिजल्पे गृहस्थभाषाजल्पे च

दुर्गच्छत्वम् । ”

८२८* चित्ररूपत्वं, सीवनादि, सविलास-

गत्यादि, गृहस्थगृहे कथा, रात्री-

कथा, क्लेशः, अनलोचन, वेष्ट-

लादिप्रयोगे दुर्गच्छता आर्याणाम् । ६९

८३१* प्रापूर्णकावत्सलत्व गतिविभ्रमादियु-

तत्वं बहुश उच्छोलनादि च न गच्छे ।

६९

८४०* तरुणी स्थविरान्तरा, धावनादि-

वर्जिका, समीपे न खराद्याः, पशव. न

मुक्तयोगादि, अनालस्यादिगुण-

श्रार्याः सविमादिगुणाः, उत्तरप्रत्युत्तर-

वर्जिका. गणिनीपृष्टिस्थितभाषिका,

गुप्तिविभेदानाख्यायिकाश्च । ७०

८४२* विहारभेदेऽदर्शनादि, धर्मोपदेश

मुक्त्वा न भाषणम् । ”

८४३* गृहस्थभाषाया मासोपवासाद्यपि

७० निष्फलम् ।

८४६ महानिशीथारुद्धारः, उत्तमता

गच्छाचारस्य फलं च ।

॥ ८ अथ गणिविद्याप्रकीर्णकम् ॥

८४७ अभिधेयप्रामाण्यम् ।

८४८ दिवसतिथिनक्षत्राद्यभिधेयनिर्देशः ।

८४९ दिवसरात्र्योर्बलावलत्वम् ।

८५० प्रतिपदादितिथीनां फलं बलावल च ।

७१

८८६ गमनादिषु नक्षत्राणि सन्ध्याग-

तादीना स्वरूपं फलं च, पादपोष-

गमनविद्यालोचोपस्थापनादि-

कार्योग्मभविद्याधारणमुदुर्कर्म-

भिक्षागुरुप्रतिमातपः कर्मोपकरण-

चैत्यपूजादिषु वर्ज्यावर्ज्यनक्षत्राणि ।

७३

८९१ बवादीनि करणानि, तदानयनो-

पायः, निष्क्रमणादिषु ग्राह्याणि च ।

”

८९३ निष्क्रमणादिषु गुर्वादयो वाराः ।

९०१ रुद्रादिमुहूर्तानां छाग्रामान, तत्क-

ल्यानि च ।

९१४ शकुनानां पुंस्वादित्वं, तत्कृत्यानि,

चलस्थिरराशिहोरादिकृत्यानि । ७४

९२२ निमिच्चाना स्वरूपं, तत्कार्यं, तत्प्रा-

बल्यं च ।

९२८ तिथ्यादिषु निमिच्चानेषु बला-

बलविचारः ।

॥ ९ अथ देवेन्द्रस्वप्नप्रकीर्णकम् ॥

९२९ मङ्गलाभिधेयादि ।

९३४ आवककृता वीरस्तुतिः ।

९३८ देवेन्द्रतद्वासंख्यास्थिति-

भवनबाहल्यादिरतिलयनो-

च्छ्वासावध्यादिप्रश्नाः ।

९४२ उत्तरस्योपक्रमः ।

९७३ भवनपतीनामिन्द्राः, तद्भवनसङ्-

ख्या, उत्तरदक्षिणभेदेन स्थितिः ।

तद्भवनस्थानं, तद्भवनस्वरूपाऽऽ-

यामादि, दक्षिणोत्तरभेदेनेन्द्राणां

नामानि, भवनसङ्ख्या, अग्रमहिषी-

सङ्ख्या ।

७९

९७८ जम्बूद्वीपादिसमंश्रया आत्रासादी-

सङ्ख्या, असुरादीनामावासस्थानम् । ७९	महाऽल्पद्विकृतं, अभ्यन्तर- बाह्यनक्षत्रत्वं च । ८२	ऽऽवरणं च । ८५	प्रकीर्णकानां बृहद्विषया- नुक्रमः
९९४ चमरादीनां (२०) वैक्रियशक्तिमानम् । ८०	१०२८ जघन्योत्कृष्टनिर्व्याधितरचार- कान्तरम् । १०२९ अभिजिदादीनां चन्द्रसूर्य- योगकालः । ८३	१०८६* नृशेनाद्वहिरवस्थिता ज्योतिष्काः, परस्परान्तरितत्वं, अन्तरमानं, एकशशिपरिवारश्च । १०९०* ज्योतिष्काणां परापरे स्थिती । १०९६* द्वादश कल्पाः, त्रैवेयकेषु नान्य- लिङ्गेनोत्पादः, व्यापन्नदर्शनानां त्रैवेयकेषुत्पादः । ११११* सौधमादिषु विमानसङ्ख्या, स्थितिः, नवत्रैवेयकनामानि, तद्विमानसङ्ख्या, स्थितिश्च । १११४* अनुत्तराणां नामानि, दिग्ग्यवस्था, स्थितिश्च । १११८* कल्पत्रैवेयकानुत्तरसंस्थानानि,	
१००८ व्यन्तराणां भेदास्तन्नामानि च, तद्व- सतिः, भवनस्थान, भवनविस्तारः, दक्षिणोत्तरभेदेनेन्द्राः, तत्स्थितिश्च । ८१	१०६३ जम्बूद्वीपादिषु चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्र- तारकसङ्ख्या, पिटकानि, पङ्क्तयः, मेर्वनुचराः । १०६७ ज्योतिष्कचारेण सुखदुःखविधिः । १०६९* तापक्षेत्रस्य वृद्धिहानी, बहि- रन्तः सस्थानम् । १०७५ चन्द्रस्य वृद्धिहान्यादि, राहुणा-		
१०११* ज्योतिष्कानां भेदाः, विमा- नाकारः, ज्योतिश्चक्रवाह्य, चन्द्रसूर्यनक्षत्रग्रहताराणां विष्कम्भादि । ८१			
१०२१* विमानवाहकामराः । ८२			
१०२६* चन्द्रादीनां मन्दशीघ्रगतित्व,			

तदाधारः ।

११२५ भवनपत्त्यादीनां लेखावर्णः,

शरीरमानं, स्थित्यनुसारेण शरीर-
मानकरणम् । ८०

११२६ विमानपृथ्व्योर्मानं द्वात्रिंशच्छ-

तानि ।

११३० कायस्पर्शरूपशब्दमन प्रवीचारा-
प्रवीचाराः ।

११४४ विमानाना गन्धस्पर्शवर्णनं,

ऊर्ध्वलोकविमानानां आवलिका-
प्रविष्टानां पुष्पावकीर्णानां च

सङ्ख्या स्थानं संस्थान पर-

स्परस्थितिः प्राकारादिभेदाश्च । ९०

११४७ भवनानां भौमनगराणां ज्योतिष्क-

विमानानां सङ्ख्या, वैमानिका-

द्यल्पबहुल्यं च । ९०

११५२ सौधर्मेशानयोर्देवीविमानसङ्ख्या,
अनुत्तराणां सुखस्पर्शगन्धाः,

एकगर्भाश्च । ९०

११६० स्थितिर्विशेषेण देवानामाहारो

च्छासकालः । ९१

११६८ सौधर्मादीनामवधिविषयः,

नारकाद्या अवधेरनाह्याः ।

१२०० सौधर्मादिषु पृथ्व्या बाहल्य-

विमानानां वर्णः देवदेवीवर्णनं,

प्रासादासनवर्णनं च । ९३

१२०६ सिद्धशिलाया अन्तरं संस्थान-

मायामादि बाहल्यं च । ९४

१२३० सिद्धानां स्थानं, प्रतिघातादि,

संस्थानं, त्रिभेदावगाहना, अन्यो-

न्यावगाहना, लक्षण, स्पर्शना,

ज्ञानदर्शने, सुखं, म्लेच्छदृष्टान्तः,

नामानि, अव्यावायव्यं च । ९५

१२३२ अर्हतां वन्दनमहिमस्तुति-

सिद्धिदानकीर्तनेनोपसंहारः । ९६

॥ १० अथ मगणममाधिप्रकीर्णकम् ॥

१२३६ मङ्गलाभिधेयादि । ९६

१२४५ अभ्युद्यतमरणे गुणवदाचार्याय

क्षिप्यपृच्छादि । ९७

१२५१ आराधनोपदेशः दर्शनज्ञाना-

धाराधना च ।

१२५५ दर्शनाऽराधना तत्फलं च ।

